प्रेम प्रकाश मण्डल की एक मात्र
कृत आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

वर्ष : 22 अंक : 2
15 दिसम्बर 2001

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक- सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



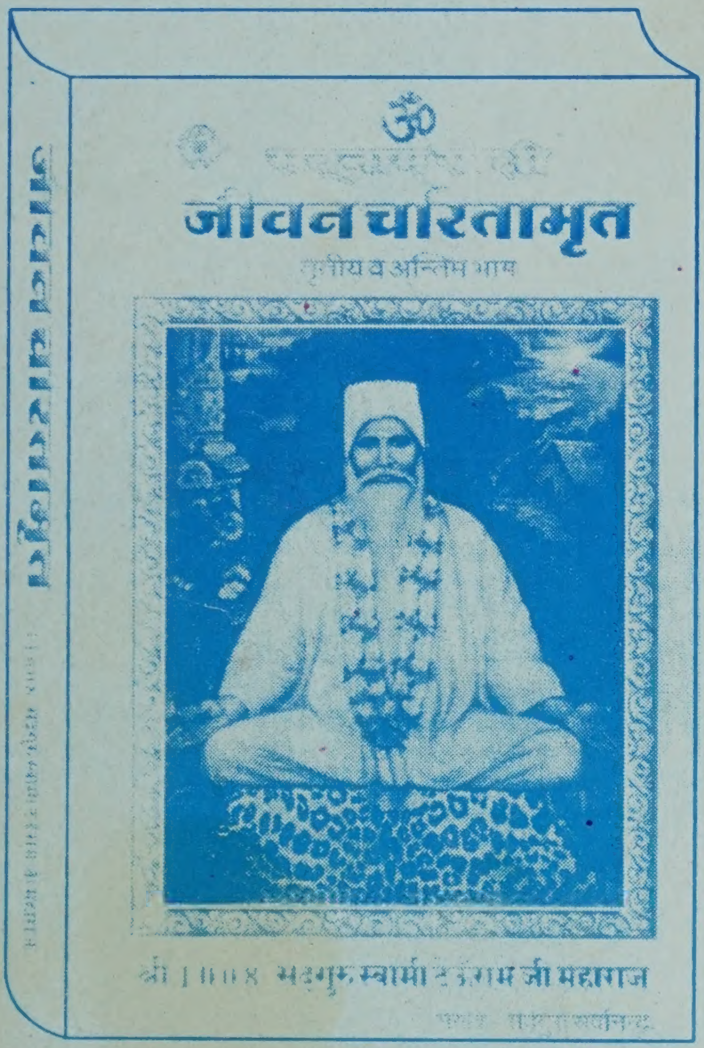
शंख चक्र गदापद्मं, दिव्याभूषण भूषितम्
श्री लक्ष्मी नारायण वंदे, नित्यश्री प्रेमप्रकाशकं

नववर्ष की शुभकामनाएं

नूतन वर्ष 2002

पुस्तक चर्चा

सद्‌गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (हिन्दी में) तृतीय अंतिम भाग राजसंस्करण रुप में प्रकाशित



अमरापुर स्थान, जयपुरः- आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन चरितामृत (हिन्दी भाषा में) के तृतीय व अंतिम भाग के प्रथम संस्करण का प्रकाशन अमरापुर स्थान द्वारा किया गया है। इससे पूर्व सिंधी अरबी लिपि में प्रकाशित जीवन चरितामृत का अब हिन्दी अनुवाद करके प्रकाशन किया गया है। इस नवीन राजसंस्करण का भव्य विमोचन, सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज के 105 वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर माँ गंगा के पवित्र तट पर श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इससे पूर्व जीवन चरितामृत का प्रथम व द्वितीय भाग पहिले ही प्रकाशित हो चुका है, जिसका विमोचन ब्रह्मलीन सद्‌गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज के कर कमलों द्वारा चैत्र मेले के अवसर पर संपन्न हुआ था।तीनों भागों को कुल 1156 पृष्ठों में अत्यंत सरल व मधुर भाषा में महर्षि सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा, आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पवित्र व परमादर्श जीवन पर गहनता पूर्वक प्रकाश डाला गया है। जिसके पढ़ने व श्रवण करने से साधक के अंदर प्रभू प्रेम की धारा स्वतः ही प्रवाहित हो जाती है।अनेक प्रमाणिक ग्रन्थों के प्रमाणों से युक्त यह महाग्रन्थ संसार के संतप्त प्राणियों के लिये अमृत सरोवर है, जिसका सेवन करने से जीव को परम शांति की अवस्था प्राप्त होती है, अतः प्रत्येक आत्म पिपासु जिज्ञासूओं के लिये यह महाग्रन्थ अवश्य ही लाभप्रद होगा। इसको मनोयोग से पढ़ने पर साधना में गति आ जाती है। यह ग्रन्थ श्री अमरापुर स्थान सहित लगभग समस्त प्रमुख आश्रमों पर उपलब्ध है।

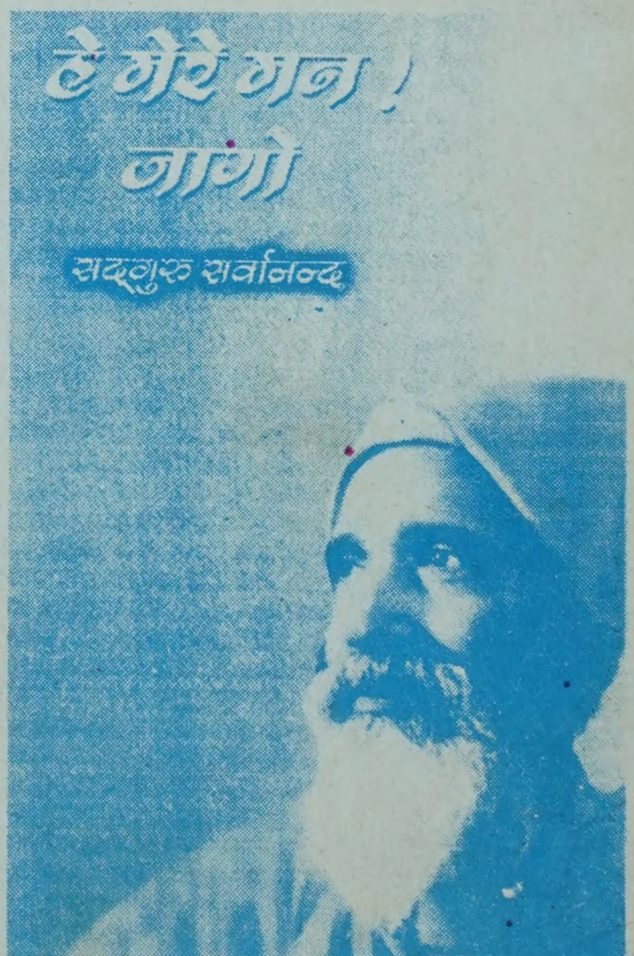
पुस्तक का नाम-जीवन चरितामृत तृतीय व अन्तिम भाग मूल्यः75 रुपये

पृष्ठ : 656

प्रकाशक- श्रीअमरापुर स्थान श्री प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट , जयपुर

हे मेरे मन! जागो सद्‌गुरु सर्वानन्द

बड़ौदा 30 नवम्बर 2001 :- एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद महर्षि सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के प्रवचनों की प्रथम पुस्तक "हे मेरे मन! जागो" का भव्य विमोचन प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा के कार्तिक महोत्सव में किया गया। पूज्य स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज के पवित्र कर कमलों द्वारा विमोचित यह पुस्तक महाराज श्री के छः प्रवचनों का अद्‌भुत संग्रह है। जिसके अन्तर्गत ज्ञान,भक्ति,कर्म उपासना,सांख्य,प्रेम,प्रार्थना आदि पर पूज्य महाराज श्री ने सटीक रूप से प्रकाश डाला है। जिसके पढ़ने से मन में सहज ही प्रभु प्रेम का प्रादुर्भाव होता है। प्रथम प्रवचन-अभय दान दीजिये गंगा का किनारा द्वितीय-स्त्री उपदेश तृतीय- अगर है आस आनन्द की चतुर्थ-प्रेम बिना पँहुचें नहीं पचंम-कर्म अति बलवाना छठ्वाँ- प्रवचन दूर है तुम्हारा देश ।इस प्रकार यह छः प्रवचन मानों षट्शास्त्रों का सार है, सुन्दर व सुसज्जित रुप में प्रकाशित यह पुस्तक साधना में लगे हुये साधकों के लिये एक मणि है जिसके मनो योग से अध्ययन करने पर अर्न्तमन में परम प्रंकाश का प्रकाशन होता है।



पुस्तक नाम : हे मेरे मन! जागो

मूल्य :- 10 रुपये मात्र

प्रकाशक :- प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा

प्राप्ती स्थल :- प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा व अन्य प्रमुख आश्रम

(प्रेम प्रकाशी दिलीप, बड़ौदा)

धारावाहिक–29

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

राग. रामकली भजन नं. 15

यह शिक्षा उर धरना रे, यह शिक्षा उर धरना रे।
धीरज धर्म दया को धारे सत्कर्मों को करना रे।
सत्पुरुषों का सत्संग करके, आज्ञा माहिं विचरना रे।।1।।
काम क्रोध मद लोभ मोह, पुनि पाँच विषय को हरना रे।
कूड़ कपट छल चोरी यारी, डाकापन से डरना रे।।2।।
देह गेह की ममता त्यागे, शरण राम की पड़ना रे।
हरी नाम का सुमरन करके, भव सागर से तरना रे।।3।।
सद्गुरु से निज ज्ञान पायके, ब्रह्मानन्द मन भरना रे।
कहे टेऊँ उस आनंद मांहीं, मन बुद्धि अर्पण करना रे।।

व्याख्या–श्री गुरु महाराज इस भजन के द्वारा समझाने की कोशिश कर रहे हैं। मन को शिक्षित कर रहे हैं। कि, हे मेरे मन! इन सारी शिक्षाओं को धारण कर अपने जीवन को ऊँचा बनाओ।

धीरज – धैर्य

उग्रता को त्याग धैर्य से काम लें। जल्दबाजी काम बिगाड़ देती है। शांति से किसी भी बात को समझा जा सकता है।

धर्म दया–जो दूसरों के दर्द को समझे, और फिर उसका दर्द दूर करने में सहयोग करे। यही दया है। वही वैष्णव है।

वैष्णव जन तो तोंको कहिये, जो पीर परायी जाणे रे।

एक व्यक्ति का नियम था वह रोज प्रातः चर्च में प्रार्थना करने जाता था। एक दिन प्रातः उठने में देर हो गयी तो वह जल्दी–जल्दी करके नाईट सूट (रात को पहनने वाले कपड़े) में ही चल पड़ा। जब वह प्रार्थना करके चर्च से बाहर आया तो एक अंधे भिखारी ने आवाज दी कि भगवान आपका भला करे। इस अंधे को कुछ दे जाओ। आवाज को सुनकर वह भिखारी के समीप आया और बड़े प्यार से जेब में हाथ डाला। जब में कुछ भी नहीं था। तभी उसे याद आया कि वह तो नाईट सूट में ही आ गया है। तो जेब में पैसे कहाँ से आयेंगे और वह सूरदास भिखारी बड़ी आशा से हाथ फैलाये बैठा है। उस व्यक्ति की समझ में नहीं आया। उसकी अमृत वेले में की गयी प्रार्थना से भीगा–भीगा मन, वह सुबह–सुबह किसी का दिल नहीं तोड़ना चाहता था, सो वह चुप हो गया, तभी सूरदास भिखारी ने हाथ आगे बढ़ाया और फिर कहा–बाबूजी गरीब की दुआ लगेगी, कुछ देके जाओ। उस व्यक्ति ने धीरे से उसके हाथ में अपना हाथ दे दिया, और उसकी आँखों में से दो आँसू छलछला आये, उसने कहा–मित्र माफ करना, आज देने के लिये मेरे पास कुछ भी नहीं। भिखारी अपने हाथ में इतना मीठा स्पर्श पाकर गद्गद् हो गया, और उस अनजान व्यक्ति ने उसे मित्र कहकर सम्बोधित किया, जैसे उस अनाथ को सारी दुनिया मिल गयी। वह भिखारी उस व्यक्ति के हाथों को अपने हाथों से सहलाने लगा, खुश और गद्गदित वाणी से बोला बाबूजी इस भिखारी को भीख तो बहुतों ने दी होगी पर आपने ना देकर जो दिया है, वह आज तक कोई दे नहीं पाया, ऐसा कहकर उसने भी गद्गद आँखों से उन हाथों को छुआ, और चुप हो गया। यही दया है।

ऐसे ही मधुर गुणों से अपने आपको सुसज्जित रखें, सत्कर्म करें, सत्पुरुषों का संग करें उनके आचार व्यवहार से जीने की कला सीखें, सत्संग में रूचि रखें, उनकी आज्ञानुसार अपने जीवन को चलायें। जिन विषय वासनाओं में फंसकर हम पशुत्व में जी रहे है। इंसान और पशु होने का फर्क भूल गये हैं। काम के आधीन क्रोध के वशीभूत लोभ के जाल, मोह की फांसी, अज्ञान की रस्सियाँ बंधन ही बंधन ऐसे पकड़ कर, जकड़कर खुद को बांधकर उलझाकर रखा है, कि छूटना असंभव जैसा लगने लगता है। विषय वासनाओं की पूर्ति के लिये चोरी छल कपट झूठ कुसंग गलत लोगों से यारी सभी निषेध कर्म

करने में नहीं सकुचाते। सो गुरु महाराज कहते हैं। इन्द्रियों की चाहत बदल दो। इन्द्रियाँ रूप में फंसे, तो उसे भगवान के मोहिनी रूप में फंसा दो। इन्द्रियाँ स्वाद में फंसती है, तो उसे प्रभु नाम का चस्का लगा दो, तो गुलामी छूट जायेगी। अपने शरीर के सुखों को त्यागकर प्रभु की शरण लेनी चाहिये। सच्चा सुख सच्चा आनंद परमात्मा की शरण में ही है।

प्रभु दा की पावणाँ–मन नूँ इत्तो लांके, उत्तो लावणा

भावार्थ–प्रभु को कैसे पायें, बस बड़ा ही सरल हैं, मन को यहाँ से हटाके वहाँ लगा दो। नित्य नाम स्मरण करके जाप करके, नाम की नौका बनाकर भव सागर से पार तर जाना है। अपने आत्म स्वरूप की खोज करना होगी, सदगुरु को रिझाकर अपने तत्व की अपने खजाने की चाबी लेनी होगी।

चलते–चलते युग गये, मिला न निर्भय धाम।
पेडें में सत्गुरु मिले, तो पाव कोस पर गाँव।।

अपनी मन मर्जी से चलने पर आध्यात्मिक उपलब्धता नहीं होती। युग बीत जायेंगे, कुछ हासिल नहीं होगा।

गुरु की उपमा कीजिये, ईश्वर से अधिकाय।
सत्य बिसरे गुरु याद दिलावे, गुरु बिसरे पछताय।।

बस सद्गुरु की आज्ञा में चलें जो बात बरसों में ना बनी, चलें सत्गुरु के कहे में तो बात कल परसों में बनी। वो जगा देते हैं, सच्चा जज्बा सच्चा इश्क, सच्ची प्रीति।

वो मंदिर में भी मिलेगा तुझे, जब अंदर इश्क की आग भी हो। वो बाहर से भी मिलेगा तुझे, मन मोहन से अनुराग भी हो वो हाजिर है, हर इक दिल में, जब दर्द भरी दिल में आह भी हो, बस एक आनंद ब्रह्मानंद प्रगट हो जाता है। अपना घर अपनी मस्ती, तोड़ देते हैं, अहंकार और हस्ती, जो जाये गुरु की शरण मिले उन्हें ये मस्ती सदा ही सस्ती, ये निज स्वरूप की मस्ती, तेरी करूणा की मस्ती, ये नाम की मस्ती, तेरे कृपा की मस्ती, तेरे अनुराग की मस्ती, बस इसी मस्ती में डूबते उतरते मन को बुद्धि को उस रस में समर्पित कर देना। अर्पण कर देना। यही आनंद परमानंद हो जाता है। परमानन्द ब्रह्मानन्द में बदल जाता है, प्रगट कर देता है।

मैं आनंद स्वरूप हूँ, मैं आनंद स्वरूप हूँ मैं आनंद स्वरूप हूँ।

ना कहीं गया ना कहीं आया,
जब तेरा दर्शन पाया।

भजन — नई सदी की खुशियाँ पाने आये हैं

तर्ज–नई सदी की खुशियाँ पाने आये हैं।
नई सदी की खुशियाँ पाने आये है।
सद्गुरु सर्वानन्द तेरे घर आये हैं............2

1. पिछले जन्मोत्सव पर सद्गुरु तुमने हमसे इक वादा किया था।
इक वादा किया था।
नाम दान की टॉफी देकर, निगुरा तुमसे मिटा दूंगा।
मिटा दूंगा।
उसकी याद दिलाने जन्मोत्सव पर आये हैं।
सद्गुरु सर्वानन्द तेरे दर पर आये हैं।
नई सदी की................

2. तेरी कृपा से इक बूंद जो गंगा मैया से मिल जाये
मिल जाये।
सूखे हुए दिलों की बगिया में नाम का एक फूल खिल जाये।
खिल जाये।
आवागमन का चक्कर मिटाने गंगा मैया के तट पर आये हैं।
सद्गुरु सर्वानन्द तेरे दर पर आये हैं।
नई सदी की..............

3. ये सारे प्रेम प्रकाशी भक्त तरे चरणों के पुजारी हैं–पुजारी हैं।
खाली झोली सबकी भर दे मांग रहे दया तुम्हारी है।
तुम्हारी है।
हम बालक फरियाद सुनाने आये हैं।
सद्गुरु सर्वानन्द तेरे दर आये हैं।
नई सदी की ....

–श्रीमती पदमा शिवनानी, अजमेर

कथा शिखर ध्वज चूड़ाला

धारावाहिक-18

सत्गुरु-कल्याण पथ का प्रेरक

(रचयिता-आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज)

जो वस्तु जिस दुकान पर मिलती हो उसी दुकान पर जाना चाहिये, अगर लकड़ी की दुकान पर पहुँचकर हम लोहे की बात करेंगे या लोहे की दुकान पर पहुंचकर कपड़े की बात करेंगे या कपड़े की दुकान पर पहुंचकर अनाज की बात करेंगे तो सभी यह ही कहेंगे कि शायद ये व्यक्ति मूर्ख है। अर्थात् इतना विवेक तो हर व्यक्ति को होना चाहिये कि जिस दुकान पर जो सौदा मिलता हो, उसी दुकान पर जाकर हमें उस सौदे को लेना चाहिये।

सच का सौदा सत्संग माहीं

भौतिक पदार्थों के लिये तो यह बात सत्य है, पर अगर परमार्थ में भी हमारे को आत्मज्ञान की जरूरत है तो ऐसी ही दुकान पर जाना चाहिए जहाँ आत्मज्ञान मिलता हो। पर वो दुकान है कौन सी ? वो है संतों की दुकान। सत्संग रूपी दुकान। वहीं पर वो आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान मिल सकता है, और कहीं नहीं। कितना भी हम पैसा खर्च करें, कितनी भी हम मेहनत करें, परन्तु उससे आत्मज्ञान मिलने वाला नहीं।

सत्गुरु महाराज जी का भजन है न-

असां हटड़ो कढियो आ हक जो।
जिते सौदो रखियो आ सच जो।।

परन्तु उस सच के सौदे को लेने वाला कोई होवे तो। गुरु महाराज जी तो हरदम फरमाते थे कि

कोई पीवे तो मैं देवां, प्याला प्रेम का भर भर भर।
नहीं पीवे तो मेरा क्या, पड़ा भटके वो दर दर दर।।

महाकरूणवान संत-महात्मा तो हर घड़ी, हर क्षण देने के लिये तत्पर बैठे हैं, परन्तु कोई ले तो सही। उन्होंने सच रूपी सौदे को देने के लिये सत्संग रूपी दुकान खोल रखी है, जिसे भी सौदे की चाह हो समर्पण रूपी पैसा देकर सौदे को ले सकता है। वास्तविक सच रूपी सौदे के लिये किसी भी प्रकार के बाहरी साज-सामान की जरूरत नहीं है, बस अपने मन को संतार्पित करके उस सच रूपी सौदे को लिया जा सकता है।

सत्संग दुकान पर सच सौदा कोई लेनहार दिल दा भागवान होवे। कोई भाग्यवान ही होगा जो आकर यहाँ सौदा लेगा। सब कोई सौदा नहीं लेंगे यहाँ पर। इसलिये विचार करें और जब विचार करते-करते अपने कल्याण की चाहना हमारे अंतर उत्पन्न हो जाए तो भौतिक पदार्थों से मुख मोड़कर संत-महात्माओं के पास पहुंच जाएं।

ऐसे ही कुछ विचार राजा के मन में भी उत्पन्न होने लगे-

ब्रह्मविद्या के पढ़ने से ही, उपजत आत्मज्ञाना है।
ब्रह्मज्ञान से नाशे सब दुख, मिटता तन अभिमाना है।।

ब्रह्मज्ञान से सर्व दुःखों की निवृत्ति और परमानंद की प्राप्ति हो जाती है। यहाँ तक का प्रसंग होके आया था-

सत्गुरु ब्रह्मज्ञान का दाता

अब राजा अपनी विचार रूपी कटारी को और तीव्र करके अज्ञान रूपी वृक्ष के समूल नाश का उपाय सोच रहा है। विचार करते-करते उसे पूर्व में संतों के संग के परिणाम स्वरूप ये भाव उदित होता है कि अज्ञान के समूल नाश के लिए ब्रह्मज्ञान जरूरी है, परन्तु ये ब्रह्मज्ञान मिलता कहाँ से है ? ये सोचने पर राजा को यह भाव जागा कि-

ब्रह्मज्ञान के लेने कारण, संत शरण में जाना है।

ब्रह्मज्ञान लेना है तो संतों के पास जाकर उनकी शरण लेनी ही पड़ेगी क्योंकि और किसी के पास यह वस्तु मिलने वाली नहीं है।

सत्गुरु महाराज जी का भजन भी है कि-

"ब्रह्मज्ञान का दान सत्गुरु देवत है"

ब्रह्मज्ञान का दान तो सत्गुरु ही दे सकता है, और कोई दे ही नहीं सकता। और इस दान जैसा दान है ही नहीं। याद करना।

न गोप्रदानं न महीप्रदानं न चान्नदानम्।
यथावदन्तीह लोकाः सर्वदानेष्वमयप्रदानम्।।

भली पृथ्वी का कोई दान करे, भली भोजन का कोई दान करे, भली सोने चांदी के पहाड़ लगाकर कोई उनका दान करे, भली कोई गो दान करे, घोड़े या हाथी का दान करे। पर इन सबसे, संसार की प्रत्येक वस्तु से बढ़कर संसार का दान कौन सा है ? विद्या का दान, आत्मज्ञान का दान। और इसलिये गुरु की महिमा जैसी किसी की महिमा नहीं है क्योंकि किसी के द्वारा ऐसा विलक्षण ज्ञान नहीं मिल सकता।

और सब जो दान मिलते हैं वे सब समाप्त होने वाले हैं, परन्तु ये ब्रह्मज्ञान का दान जो मिलता है, वो कभी समाप्त नहीं होता। ये तो दिन–दिन बढ़ता रहता है, दिन–दिन इसमें और ही आनंद आता है। संसार की प्राप्त वस्तुओं में आनंद नहीं आता। हाँ थोड़ी देर के लिए सुख जरूर मिलता है, फिर उसी में दुःख मिलना शुरू हो जाता है। राजा सोचता है कि मुझे भी इस ज्ञान की प्राप्ति हेतु संतों की शरण लेनी चाहिए क्योंकि–

और कहीं से नांही मिले यह, कहता वेद पुराना है।

और किसी से मिलने वाला है ही नहीं क्योंकि और किसी के पास ये सौदा है ही नहीं और जब सौदा होगा ही नहीं तो देगा कहाँ से ?

सच का सौदागर : सत्‌गुरु

संत महात्माओं के पास ये सौदा रखा है अपितु उनके पास देने के लिए केवल सच का सौदा अर्थात् ब्रह्मज्ञान ही है क्योंकि वे केवल सच को ही देने वाले हैं–

सच ही देवें सच ही लेवें

सच ही बोलें, सच ही सेवें।

सम, दम, आदिक, षट् गुणधारी

देखा जग में संत उदारी, सारग्राही परम विचारी

संत महात्मा क्या करते हैं ? सच देते हैं, सच ही लेते हैं। सच का ही व्यापार करते हैं और सच के अलावा किसी चीज का लेन–देन नहीं करते। स्वयं तो उस ब्रह्मपद में, उस आत्मपद में नाम–जप करते हुए स्थित रहते हैं, अपितु जो उनकी शरण में आते हैं उन्हें भी उस ब्रह्मपद में, आत्मपद में स्थित करते हैं। सच का सारा व्यवहार ऐसे ही संत महापुरुषों की शरण में जाने से मिलेगा।

अतः जो सच लेते हों, सच देते हों, सच बोलते हैं, सच देखते हों, सारा सच का ही व्यवहार हो जहाँ पर उन महापुरुषों के पास ही (भेखी के पास नहीं) सच का सौदा मिल पायेगा, उनके पास ही ब्रह्मज्ञान की उपलब्धि हो सकती है। अन्य के पास नहीं।

इसलिए गुरु महाराज जी बार–बार फरमाते हैं

"प्रभुजी मेलहो संत सचारे"

प्रार्थना करें प्रभू से कि हे परमात्मा इस झूठे संसार में सच्चे संतों से मेरा मिलाप करवाओ और भगवान की कृपा से जैसे ही ऐसे संतों की प्राप्ति हो तुरन्त उनकी शरण ले लेनी चाहिए। क्योंकि–

"और काहू से नांही मिले यह कहता वेद पुराना है।" वेद पुराणों का भी यही कथन है कि सच्चे संतों के अलावा और कहीं से नहीं मिलने वाला है ये सौदा, ये मिलेगा तो पूर्ण संत की शरण में ही मिलेगा।

आगे गुरु महाराज जी फरमाते हैं–

बादल बिन ना वर्षा जैसे, शशि बिन मिले ना धाना रे।

हाट बिना ना सौदा जैसे, गुरु बिन मिले ना ज्ञाना रे।।

योगवशिष्ठ के प्रसंग में भगवान वशिष्ठ राम को दृष्टांत देकर समझाते हुए कहते हैं–

हे रामजी "बादल बिना ना वर्षा जैसे" बादल के बिना वर्षा हो नहीं सकती। बादल होंगे तभी पानी बरसेगा क्योंकि बादल के अंदर ही पानी है। आसमान साफ हो तो वर्षा नहीं हो सकती।

"शशि बिन मिले ना धाना रे"

और जैसे खेती के बिना अनाज नहीं मिल सकता खेती अगर नहीं करेंगे तो अनाज की प्राप्ति नहीं होगी। खेती करने से ही अनाज मिलेगा।

"हाट बिना ना सौदा जैसे"

बिना दुकान के या दुकान खुली ही न हो तो सौदा नहीं मिल सकता उसी प्रकार

"गुरु बिन मिले ना ज्ञाना रे"

गुरु के बिना ज्ञान, आत्मज्ञान और विज्ञान, मिल नहीं सकता।

आत्मानुभूति सत्‌गुरु के सानिध्य में

शाब्दिक ज्ञान तो शास्त्रों के पढ़ने से मिल जाएगा पर आनुभविक ज्ञान की प्राप्ति, वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति गुरुदेव की कृपा के बगैर नहीं हो

सकती।

शाब्दिक ज्ञान प्राप्त करना कोई बड़ी बात नहीं है। अनंत शाब्दिक ज्ञान मिल सकता है हमारे को, परन्तु अनुभव की बात ही कुछ और है।

शाब्दिक ज्ञान और अनुभव के ज्ञान में फर्क क्या है ? इसको समझाने के लिए गुरु महाराज जी फरमाते हैं कि एक पुस्तक में लिखा है कि समुद्र की गहराई 20, 000 फुट है इसको हमने याद कर लिया कि गहराई 20,000 फुट है। परन्तु समुद्र के अंदर 20,000 फुट जब उतरकर देखते हैं उसको कहते हैं अनुभवी ज्ञान।

सिर्फ कहने, सुनने से ज्ञान की उपलब्धि नहीं होती। अनुभवी ज्ञान तो तभी प्राप्त हो सकता है जब गहराई में जाकर जानेंगे कि वहाँ क्या है ? लिखा तो हैं कि सागर की तली में हीरे हैं, मोती हैं, मगरमच्छ हैं, कई प्रकार के लोक हैं, पढ़कर याद कर लेने से क्या होगा ? अरे उसमें उतरकर तो देख कि कैसे हीरे हैं, कैसे मोती हैं, कैसी मछलियाँ हैं, कैसे मगरमच्छ हैं ? कैसे जीव हैं ? ये तो उनके देखने पर ही पता चलेगा कि कैसी अनुभूति होती है ? याद करने मात्र से कुछ भी होने वाला नहीं।

ऐसे ही हमने भी याद कर लिया है कि आत्मा अजर है, अमर है, अविनाशी है, अचल है, अनादि है, अनंत है, अखंड है, अपार है, अछेद है, अभेद है। अर्थात आत्मा के संबंध में जो अनेक प्रकार के विशेषण हैं वो सब हमने याद कर लिये हैं परन्तु आत्मा है कैसे ? जब तक अनुभव नहीं किया तब तक पता नहीं, क्योंकि आत्मा की अनुभूति के बगैर जीवन में कोई परिवर्तन होने वाला नहीं और यह अनुभूति शास्त्र पढ़ने मात्र से तब तक संभव नहीं जब तक कि पूर्ण गुरुदेव का संग नहीं मिला। शाब्दिक ज्ञान तो बहुत मिल सकता है, गुरु के बगैर भी परन्तु आत्मिक, आंतरिक ज्ञान की प्राप्ति बगैर गुरु के संभव नहीं। गुरु महाराज जी का एक वचन सर्वानंद संदेश में लिखा है—**आत्मसाक्षात्कार पूर्ण देहधारी गुरु के बिना नहीं होगा, अगर होगा भी तो फलीभूत नहीं होगा।**

अहंकार शून्यता पूर्ण देहधारी गुरु से

ऐसे कभी–कभी पूर्ण सत्गुरु के बिना कोई विचार करे कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ तो विचार करते–करते उसको झलक भली मिले पर वो फलीभूत नहीं होता क्योंकि उसको पता ही नहीं चलता कि आत्मा का सुख मिला है या किसी और चीज का।

चूंकि देहधारी गुरु सब शंकाओं का समाधान कर निवारण करता है, इसलिए उनके सानिध्य में ही आत्मानुभूति हो सकती है। अतएव पूर्ण देहधारी गुरु की शरण में जाना चाहिए। पूर्ण देहधारी गुरु जब तक नहीं किया, शास्त्र इस जीव का उद्धार नहीं कर सकते। याद करना।

कोई ऐसा बड़भागी हो, जिसकी थोड़ी सी भक्ति पूर्व में रह गयी हो, वो प्राप्त कर लें, कुछ शास्त्र से, परंतु साधारणतः शास्त्र से प्राप्ति होना मुश्किल है।

देहधारी पूर्ण सत्गुरु केपास ही मन की सारी शंकाओं का नाश होता है, अभिमान का नाश होता है। क्योंकि मूर्ति के सामने, शास्त्र के सामने झुकना बड़ा सरल है, परन्तु देहधारी गुरु के सामने झुकना बड़ा कठिन है। प्रत्यक्ष में गुरु भी तो एक पांचभौतिक शरीर ही है और पूर्ण गुरु की आज्ञाऐं भी बड़ी अजीब होती है।

महापुरुष बहुत अजीब आज्ञाऐं देते हैं और परीक्षाऐं भी लेते हैं। शास्त्र क्या परीक्षा लेंगे ? क्या अभिमान मिटाऐंगे ?

अभिमान का नाश तो केवल पूर्ण गुरु के पास जाने से ही हो सकता है, मूर्ति या शास्त्र के सामने अहंकार का नाश न होकर अहंकार बढ़ता है। अहंकार हमारा ज्यादा ही बढ़ता है कि मैं कितना बड़ा भक्त हूँ, कितनी बार मथा टेकता हूँ। देहधारी गुरु के सामने सिर झुकाना, सर ही नहीं अपने आपको झुका देना अंदर से। पूर्ण समर्पण करने पर ही गुरु से आत्मज्ञान की प्राप्ति हो सकती है।

सत्गुरु की सार्थकता कब ?

विचार करें कि देहधारी पूर्ण गुरु तो बहुतों ने किया है, फिर भी उनको प्राप्ति नहीं होती। सभी का कोई न कोई गुरु तो है ही पूर्ण गुरु की शरण में तो बहुत लोग हैं। फिर क्या कारण है प्राप्ति न होने का?

कारण यह है कि गुरु करना फैशन सा हो

गया है आज कल। हमारे कल्याण की इच्छा से हम गुरु नहीं करते बल्कि देखा–देखी, कि इसने गुरु किया है, उसने गुरु किया है, में हम गुरु कर लेते हैं। और बगैर कल्याण की इच्छा जागृत हुए अगर हमने गुरु कर भी लिया तो कोई फायदा होने वाला नहीं।

गुरु महाराज की का भजन है–

'अगर है आश आनंद की तो, जाओ गुरुदेव की शरणा'

'अगर आनंद की आश हो तो जाओ गुरुदेव की शरण में' चाहिए ही नहीं आनंद और गुरु के पास चले गये तो क्या होगा ?

समझें हमारे को अनाज चाहिए ही नहीं और अनाज की दुकान पर अनाज ले आये। तो क्या होगा? हमारे को जरूरत नहीं है तो पड़ा–पड़ा सड़ जायेगा वो अनाज। अर्थात् जरूरत है तो वो ही चीज फायदेमंद है और अगर जरूरत ही नहीं तो उसका सदुपयोग नहीं।

इसी प्रकार अगर आनंद की इच्छा ही मन में उत्पन्न नहीं हुई हमारे को और हमने गुरु कर लिया तो कोई फायदा हमारे को पहुंचने वाला नहीं। क्योंकि जिज्ञासा के बिना, तीव्र उत्कंठा के बिना, केवल दूसरों को देखकर, अगर पूर्ण देहधारी गुरु कर भी लिया तो कल्याण की चाहना के अभाव में पूर्ण समर्पण नहीं हो सकेगा और जिस स्थिति की प्राप्ति होनी चाहिए वो नहीं होगी हमारे को।

वैसी ही तीव्र इच्छा जागृत करनी पड़ेगी जैसी राजा के अंदर पैदा हुआ कि पता नहीं अब क्या होगा।

अरे मेरे अंदर से भोगों की चाहना गयी नहीं।

"निशिवासर रज–रज खाते हैं पर यह मन नांही अघाते हैं" ये मन तो अघता ही नहीं **"ये जन्म अमोलक बीत रहा है, मन शत्रु हमको जीत रहा।"** ऐसे मन में विचार भी तो उत्पन्न हो कि ये मन रूपी शत्रु हमको जीत रहा है। इस मन रूपी शत्रु को हमें जीतना है।

"मन जीते जग जीत, मन पर जीत करो"

तो वो जीत कहाँ पर मिलेगी ? वो तो संतों की शरण में जाने से ही मिलेगी। राजा के मन में ये बात पक्की हो गयी।

सत्गुरु में अडिग विश्वास

राजा को विश्वास हो गया कि ब्रह्मज्ञान तो केवल सत्गुरु की शरण में, सच्चे संतो की शरण में जाने से ही मिल सकता है और किसी से ये मिलने वाला नहीं है। जब ऐसी मन में इच्छा उत्पन्न हो जाऐगी। तभी जाके संतों की शरण में जाने का कुछ फायदा होगा हमारे को।

अतः पूर्ण देहधारी गुरु से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है परन्तु उसको ही होती है जो पूर्ण समर्पण कर दे अपना। जो पूर्ण रूप से झुक जाता है गुरु की शरण में।

राजा ने भी ऐसा विचार करके निश्चय किया

'ऐसा मन में सोचके पूर्ण निश्चय धार।
राजा रानी मोक्षहित, आये संत द्वार।।"

संत के द्वार पर, गुरु के द्वार पर जाने के लिए मन में पहले विचार कर लें कि संतों की शरण में जाना है। और जब निश्चय पूर्ण हो जाए कि मुझे शरण में जाकर तत्व की प्राप्ति करनी है तो इस पूर्ण निश्चय से ही कल्याण होगा हमारा। साथ ही साथ मन में ये निश्चय भी हो जाए कि ये जो मेरा गुरु है, वही बेड़ा पार करेगा मेरा। इसी के ज्ञान से मेरे को आत्मज्ञान की प्राप्ति होगी। इसी के उपदेश से मेरा बेड़ा पार होगा। ऐसा निश्चय हो जाए कि ये ही गुरु मेरे को तारेगा तो ये विश्वास आत्मप्राप्ति में सहायक होगा।

सत्गुरु कृपा का अधिकारी मुमुक्षु

ऐसा ही निश्चय और विश्वास करके। **"राजा रानी मोक्ष हित आए संत द्वार"** किसके लिए आए राजा–रानी ? मोक्ष के लिए। किसी पदार्थ के लिए नहीं।

हम तो संसार के दुःख दूर करने के लिए, संसार के पदार्थों की प्राप्ति के लिए संतों के पास पहुंच जाते हैं। विचार करें हममें से अधिकांशतः लोग संतों के पास किसलिए जाते हैं। कोई दुःख दूर करने जाऐगा तो कोई कहेगा कि हम बहुत गरीब हैं। हमारे ऊपर तो संकटों के बादल छाए हुए हैं। कोई गुरु कर ले तो ये संकट हट जाएं हमारे ऊपर से। कोई कहेगा हमारे बेटे की नौकरी नहीं लगती या फिर हमारा काम–धंधा चलता नहीं', या फिर बच्चे बड़े हो

गये हैं, उनका रिश्ता नहीं होता। इन दुःखों को दूर करने के लिए ही गुरु करने का विचार आता है। अर्थात् सांसारिक इच्छाओं की प्राप्ति ही गुरु करने का ध्येय रहता है।

परन्तु गुरु करने का कारण होना क्या चाहिए? क्या मूल बात होनी चाहिए ? वो पता नहीं हमारे को। हमारे लिए तो गुरु करना बस ऐसा ही है कि संकट टाल दे हमारे, उससे कष्ट दूर हो जाऐं हमारे बस। याद करना अगर हम भी इसीलिए ही गुरु करते है। तो गुरु करना बेकार ही है हमारा। कोई फायदा नहीं गुरु करने का।

राजा–रानी किसलिए आते हैं संत शरण में–

"राजा रानी मोक्ष हित आए संत द्वार"

मोक्ष की इच्छा हो गयी। असली आनंद की इच्छा हो गयी। मुमुक्षत पैदा हो गयी अंतर में।

चार बातो का वर्णन आता है–

1. विवेक 2. वैराग 3. षट्सम्पदा 4. मुमुक्षता

विवेक से वैराग उत्पन्न हुआ राजा को, वैराग उत्पन्न होने से दैवी सम्पदा के गुण स्वतः ही आ गये और मुमुक्षता हो गयी कि मुझे अब मोक्ष की प्राप्ति करनी है बस। ऐसे मन में विचार हो गया।

"ऐसे मन विचार के पूर्ण निश्चय धार"

पूर्ण निश्चय हो गया कि बस अब संत शरण में जाकर अपने आप को पहचानूंगा, अपना आत्मकल्याण करूंगा, आत्मसाक्षात्कार करूंगा और किसी को जब ऐसा विचार जागृत हो जाता है तो स्वतः ही संतों की, गुरु की कृपा उस पर बरसने लगती है।

तो राजा ने भी मन में यह विचार करके निश्चय किया कि और कोई इच्छा नहीं करनी मोक्ष के अलावा।

जब तक न व्यक्ति संसार से संतुष्ट नहीं होता तब तक वो परमार्थ के रास्ते पर चल ही नहीं पाता। याद कर लेना। संसार के पदार्थों से संतुष्ट होना है तो बहुत कठिन। संतुष्ट हो नहीं सकता आदमी।

परन्तु फिर भी जितनी मूलभूत जरूरते हैं जैसी रोटी की, कपड़े की, मकान की और ये उसको मिली हुई है और व्यक्ति इनसे संतुष्ट हो जाए तो ही वो परमार्थ की तरफ अच्छी तरह चल सकता है।

परन्तु होता क्या है ? हमारी सारी असंतुष्टता संसार की तरफ है। परमार्थ के प्रति असंतुष्ट नहीं होते हम।

जो संसार के प्रति असंतुष्ट रहते हैं वो और जिनकी मूलभूत आवश्यकताऐं पूरी नहीं होती, उनका परमार्थ में लगना बहुत मुश्किल होता है।

परन्तु जिनके पास धन है, दौलत है अगर उनके अंदर विचार उत्पन्न हो जाए तो उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति जल्दी हो सकती है, क्योंकि उन्होंने देख लिया कि धन में भी सुख नहीं। महल मकान में भी सुख नहीं। अनेक प्रकार की संपत्तियों में भी सुख नहीं उन्होंने अनुभव कर लिया तो फिर उनकी वास्तविक सुख की तरफ दौड़ स्वतः ही प्रारंभ हो जाऐगी।

और जिनके पास है नहीं हैं वो बिना अनुभव के अगर यूं ही त्याग कर देते हैं तो थोड़ी मुश्किल बनी ही रहती है। क्योंकि अनुभव न होने से आकर्षण बना ही रहता है कि शायद धन में सुख हो, पदार्थ में सुख हो।

चूंकि राजा के पास तो सब कुछ था इसलिए राजा को जल्दी ही वैराग हो गया कि इतने पदार्थों को भोगा, पर इनमें सुख तो है ही नहीं, अपना कल्याण इनसे होता नहीं इसलिए सुख इच्छा से संतों की शरण में चल पड़ा।

हम भी मोक्ष की इच्छा लेकर यदि संतों के द्वार पर आऐंगे। केवल कल्याण की चाहना लेकर यदि आऐंगे तो संत महात्मा भी हमारे ऊपर कृपा करेंगे।

फिर उस तत्व की प्राप्ति में देर नहीं। संत–महात्मा तो हस्तकमलावत् उस तत्व की प्राप्ति करवा सकते हैं पर हमारे अंदर कमी रह जाती है। हम अपनी कमी को दूर कर अपने अंदर इच्छा उत्पन्न करें कि हमारे को मोक्ष ही चाहिए और कुछ नहीं।

ये कथा यहीं रखते हैं। गुरु महाराज कृपा करें हम सब पर कि हमारे अंदर भी आत्म–कल्याण की इच्छा उत्पन्न हो जाए।

स्वामी शांतिप्रकाश वाणी-17

साधू संग ही जीवन का परम आश्रय है

(परम श्रद्धेय सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज)

स्तुति :

ओऽमकारं बिंदु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओऽमकाराय नमो नमः।।
सर्व स्वरूपं आदि अनूपं भूमि भूपं भय भाना।
अंत न ऊपं छाय न धूपं काढ़त कूपं धरध्याना।।
रहस्यारामं दायक धामं नित निष्कामं निर्वानी।
पाद न मामं निशदिन शामं, श्री टेऊँरामं गुरुज्ञानी।
सभई चओ-हरि ऽऽऽ ॐ हरि ऽऽऽ ॐ।।

कीर्तन :

गोविंद जय जय गोपाल जय जय।
राधा रमण हरि गोविंद जय जय।।

मूल सूत्र : ।। राग आसा।।

साध संगति में आना आना, आके हरि गुन गाना।।टेक।।
साध संगति में आने वाले, बन जाते हैं भागां वाले।
अपने भाग बनाना।।1।।
साध संगति में मोती हीरे मिलते हैं पर धीरे धीरे।
मन में धीरज लाना।। 2।।
साध संगति में जे नित आते, मन वांछित फल सेई पाते।
नेमी नेम निभाना ।। 3।।
साध संगति अमृत वर्षे, कहे टेऊँ पी गुरुमुख हर्षे।
पीकर शोक हटाना ।। 4।। (प्रेम प्रकाश ग्रंथ)

प्रेमियों, प्रेम से बोलो, सत्नाम साक्षी। जैसा कि आप सभी को पहले से ही मालूम है कि आज भाई हरचूराम जी की वर्सी है। भाई हरचूराम भी एक सिद्ध महात्मा थे। जो भी वचन कहते थे वो होकर रहता था। देखो भाई, महात्मा लोग कहते हैं कि मटका भरने के लिए वहाँ जाना चाहिये जहाँ पानी की पर्याप्त व्यवस्था हो। उसी वृक्ष को हिलाना चाहिये, जिसमें फल हों, ऐसे ही हमें भी ऐसे संत के पास जाना चाहिये जिसके पास अपनी प्रज्ञा हो, यानि जिसकी कथनी और करनी में कोई अंतर न हो।

अब एक दिन की बात है, कीरत नाम का एक प्रेमी, संतों के यहाँ सेवा करता था। उसका व्यवह भी अच्छा था। वस्तुतः इस कीरत के पास मर्दा शक्ति नहीं थी, इसलिये यह घरवाली और सभी का छोड़कर संतों की सेवा में पहुंचा। कीरत का ऐ व्यवहार देख कर उसके ससुराल वालों ने उस ऊपर पुलिस केस किया। अतः उसे पुलिस पकड़ के लिये वहाँ (संतों के स्थान पर) आई। कीरत ने सारी हकीकत भाई हरचूराम जी को कहकर सुनाइ

अब संत तो दयालू होते हैं, संतों के मन दया आई। भाई हरचूराम जी ने उस कीरत सेवाधा को अंदर बैठाकर स्वयं बाहर आये। पुलिस वालों भी संतों को कीरतराम के पकड़ने की बात बताई औ कहा कि कीरत नपुंसक है उसने अपनी घरवाली औ ससुराल वालों से धोखा किया है। सांई हरचूराम सारी बात सुनकर, कीरत को बुलाया। कीरत बाह आया, अब संतो ने पुलिस वालों को समझाया कि बाबा यह नपुंसक नहीं हैं। यह प्रभु का प्यारा है लेकिन पुलिस वाले मानने को तैयार नहीं थे, अंत भाई हरचूराम जी ने उस प्यारे कीरत को कहा कि तुम अपनी इस धोती को खेल कर दिखाओ तो स मालूम पड़ जायेगा। आखिर उसे धोती खोलने प मजबूर कियां गया, वो प्रेमी भी रो रहा था और म में परमात्मा को प्रार्थना भी कर रहा था। संतों ने शरण आये की लाज रखी, अब क्या भगवत लील हुई वो सुनो-जैसे ही उसने धोती खोली तो क देखा कि वो सचमुच मर्द ही देखने में आया। य आश्चर्यचकित घटना देखकर सभी पुलिस वाले शर्मिंद महसूस कर रहे थे। अतः जल्दी से वो वहां से भा खड़े हुये। तो ऐसे हमारे सांई हरचूराम सिद्ध महापुर थे। संतों की कृपा रूपी करामत से नामर्द भी मर्द गया। यह संतों की सेवा का फल है।

एक माता जो भाई हरचूराम जी की बहुत से

करती थी। उसके पेट में बला थी। अतः इसी दर्द के कारण वह जोर–जोर से चिल्लाती थी। उसकी यह वेदना देखकर सन्तों को एक दिन बहुत दया आ गयी, और जाकर उस माता के पेट पर जोर से लात मारी, जैसे उस माता को सन्तों की लात लगी, लात लगने से माता की वो बला निकल गयी और वह एकदम स्वस्थ हो गयी।

वैसे भाई हरचूराम जी किसी का भोजन स्वीकार नहीं करते थे, यदि किसी के यहाँ भोजन करते भी थे तो उसे एक रूपिया अवश्य देते थे, वे कहा करते थे, कि मुफ्त का भोजन नहीं करना चाहिये।

वे करामात के करतार थे। एक बार भाई ज्योतिराम अपने पिता को सांई हरचूराम जी के पास ले आये। उसके पिता को मुंह में भयंकर रोग था। भाई ज्योतिराम ने सांई हरचूराम जी से पिता के रोग दूर करने की प्रार्थना की, इस समय सांई हरचूराम अपनी मौज में थे अतः गुस्से में आकर उन दोनों (ज्योतिराम व उसके पिता) को वहां से भगा दिया। अतः दोनों वापिस घर आये। लेकिन ज्योतिराम ने अपने पिता को घर पर बैठाकर पुनः आकर संतों से प्रार्थना की, इस पर सांई हरचूराम जी ने कहा कि भाई अपने पिता को तारे तबीब के पास ले जाओ। लेकिन ज्योतिराम का विश्वास अटल था, अतः उसने कहा, सांई हमारे लिये तो आप ही सबकुछ हो, हम पर कृपा करो। सांई हरचूराम जी गुस्से में आकर ज्योतिराम को गाल पर एक जोरदार थप्पड़ मारा और कहा चला जा यहां से अपने घर। अब क्या घटना घटी–ज्योतिराम घर आकर क्या देखता है कि पिता के मुंह का रोग एकदम चला गया है। ज्योतिराम के पूछने पर पिता ने बताया कि थोड़ी देर पहले मुझे ऐसा महसूस हुआ कि किसी ने मुझे बड़ा जोरदार थप्पड़ मारा है, परंतु फिर धीरे–धीरे ऐसा महसूस हुआ कि मेरा सारा का सारा रोग स्वतः ही दूर हो चुका है। ऐसी अजीब लीला देखकर दोनों पिता पुत्र बहुत खुश हुये। भाई महापुरुषों की नब्ज को कोई कोई विरला ही समझता है।

सांई हरचूराम जी ऐसे सिद्ध महात्मा कैसे हुए, वो भी अजब घटना है। सांई हरचूराम का जन्म सांई सेऊराम जी की आशीर्वाद से हुआ था। वो कैसे कि–सांई हरचूराम की माता को कोई संतान नहीं थी। अतः वो इसी मनोरथ से सांई सेऊराम जी की श्रद्धा व पूर्ण विश्वास के साथ सेवा करती थी।

एक दिन उस माता ने सांई सेऊराम को मौज में बैठा हुआ देखकर प्रार्थना की **"सांई मूंखे हिकड़ो लाल डियो"** माता ने कहा सांई मुझे एक लाल दो। संत भी अपनी मौज में थे, मौज में आकर, उस माता से कहा–हाँ जाओ–जाओ, तुम्हें दो लाल मिलेंगे, एक मुझे देना और एक को अपने पास रखना बस ?

माता ने संतों की वाणी सुनकर आश्चर्य से कहा कि सांई आपको कौन सा लाल दूं मेरे को कैसे पता लगेगा।

इस पर सांई सेऊराम जी ने कहा–हमारा जो पुत्र (लाल) होगा उसकी पीठ पर बाल (केश) होंगे। यही उसकी निशानी है। समयानुसार उस माता को गर्भ हुआ और उसने दो पुत्रों को जन्म दिया। एक को बराबर पीठ पर बाल थे, वो ही बालक हमारे सांई हरचूराम थे। माता ने वचनानुसार उसे सांई सेऊराम को सौंप दिया। सांई हरचूराम ने भी सन्तों की शरण में आकर संतों की खूब सेवा करके एवं सुमरण करके स्वयं भी सिद्धि के मालिक बन गये। कितने ही रोगियों के रोग को दूर किया, अनेक अनाश्रितों को आश्रय दिया। बाबा महापुरुषों की यही महिमा है।

महापुरुषों की सेवा से, उनके संग से अनेक लाभ मिलते है।। जीव का लोक परलोक सुधर जाता है। हमें भी जितना हो सके अपने जीवन में कैसे भी करके साध संगत करना चाहिए।

बोल कृष्ण चन्द्र भगवान की जय।
सत्गुरु टेऊँराम महाराज की जय।
सांई हरचूराम साहेब की जय।

प्रेम प्रकाशी दिलीप (जलगांव), प्रेम प्रकाश आश्रम, बड़ौदा–6

सच्ची तीर्थयात्रा

एक संत किसी प्रसिद्ध तीर्थ स्थान पर गये थे। वहाँ एक दिन वे तीर्थ–स्नान करके रात को मन्दिर के पास सोये थे। उन्होंने स्वप्न में देखा–दो तीर्थ–देवता आपस में बातें कर रहे हैं। एक ने पूछा–

'इस वर्ष कितने नर–नारी तीर्थ में आये?'

'लगभग छः लाख आये होंगे।' दूसरे ने उत्तर दिया।

'क्या भगवान ने सबकी सेवा स्वीकार कर ली?'

'तीर्थ के महात्म्य की बात तो जुदी है, नहीं तो उसमें से बहुत ही कम ऐसे होंगे जिनकी सेवा स्वीकृत हुई हो।'

'ऐसा क्यों ?'

'इसीलिये कि भगवान में श्रद्धा रखकर पवित्र–भाव से तीर्थ करने बहुत थोड़े ही लोग आये। जो आये, उन्होंने भी तीर्थों में नाना प्रकार के पाप किये।'

'कोई ऐसा भी मनुष्य है जो कभी तीर्थ नहीं गया, परंतु उसको तीर्थों का फल प्राप्त हो गया और जिस पर प्रभु की प्रसन्नता बरस रही हो।'

'कई होंगे, एक का नाम बताता हूँ, वह है रामू चमार, यहाँ से बहुत दूर केरल देश में रहता है।'

इतने में संत की नीद टूट गयी। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और इच्छा हुई केरल देश में जाकर भाग्यवान् रामू चमार का दर्शन करने की। संत उत्साही और दृढ़निश्चयी तो होते ही हैं। चल दिये। बड़ी कठिनता से केरल पहुंचे। पता लगाते–लगाते एक गाँव में रामू का घर मिल गया। संत को आया देख रामू बाहर आया। संत ने पूछा–'क्या करते हो भैया ?'

'जूते बनाकर बेचता हूँ महाराज।' रामू ने उत्तर दिया।

'तुमने कभी तीर्थयात्रा भी की है?'

'नहीं महाराज मैं गरीब आदमी–पैसा कहाँ से लाता तीर्थ यात्रा के लिये ? तीर्थ का मन तो था परंतु जा सका नहीं।'

'तुमने और कोई बड़ा पुण्य किया है ?'

'ना महाराज। मैं नीच पुण्य कहाँ से करता?'

तब संत ने अपना स्वप्न सुनाकर उससे पूछा–

'फिर भगवान की इतनी कृपा तुम पर कैसे हुई?'

'भगवान तो दयालु होते ही हैं, उनकी कृपा दीनों पर विशेष होती है।' (इतना कहते–कहते वह गदगद हो गया, फिर बोला–महाराज। मेरे मन में वर्षों से तीर्थयात्रा की चाह थी। बहुत मुश्किल से पेट को खाली रख–रखकर मैंने कुछ पैसे बचाये थे। मैं तीर्थयात्रा के लिये जाने ही वाला था कि मेरी स्त्री गर्भवती हो गयी। एक दिन पड़ोसी के घर से मेथीकी सुगन्ध आयी, मेरी स्त्री ने कहा–'मेरी इच्छा है मेथी का साग खाऊँ, पड़ोसी के यहाँ बन रहा है, जरा मांग लाओ।' मैंने जाकर साग मांगा। पड़ोसिन बोली–' ले जाइये, परंतु है यह बहुत अपवित्र। हम लोग सात दिनों तक सब–के–सब भूखे थे, प्राण जा रहे थे। एक जगह एक मुर्दे पर चढ़ाकर साग फेंका गया था। वही मेरे पति बीन लाये। उसी को मैं पका रही हूँ।' रामू फिर गद्गद होकर कहने लगा–मैं उसकी बात सुनकर काँप गया। मेरे मन में आया, **पड़ोसी सात–सात दिनों तक भूखे रहें और हम पैसे बटोरकर तीर्थयात्रा करने जायें ? यह तो ठीक नहीं है। मैंने बटोरे हुए सब पैसे आदर के साथ उनको दे दिये। वह परिवार अन्न–वस्त्र से सुखी हो गया। रात को भगवान ने स्वप्न में दर्शन देकर कहा–'बेटा। तुझे सब तीर्थों का फल मिल गया, तुझ पर मेरी कृपा बरसेगी।'** महाराज। तबसे मैं सचमुच सुखी हो गया। अब मैं तीर्थ स्वरूप भगवान को अपनी आंखों के सामने ही निरन्तर देखा करता हूँ और बड़े आनन्द से दिन कट रहे हैं।

रामू की बात सुनकर संत रो पड़े। उन्होंने कहा–सचमुच तीर्थयात्रा तो तुमने ही की है।

संकलित

सच्ची कहानी

गुरु गुड़ ही रहे, चेला चीनी हो गया !

(मुखिया श्रीविद्यासागर जी)

1

वि. संवत् 1900 की एक सच्ची और विचित्र घटनाने यह कहावत प्रमाणित कर दी है–

'गुरु गुड़ ही रहे, चेला चीनी हो गया।'

दक्षिण के एक शहर में भगवान् श्रीकृष्ण का एक मन्दिर है। महन्त थे उस समय बाबा धरमदासजी। एक दिन एक अहीर का लड़का उनके पास आया और उनका चेला हो गया। वह माता–पिता हीन एक बारह साल का लड़का था। वह अपने गांव में अपने काका के पास रहता था। परंतु उस कौए काका ने ऐसी–कैं–कैं लगायी कि लड़के को भागना पड़ा। लेकिन यदि काकाजी की 'कैं–कैं' न होती तो न तो वह वहां से भागता और न विजिगापट्टम् के मन्दिर का महन्त ही बन सकता। शहर के समस्त रईस, समस्त अहलकार और समस्त भक्त नर–नारी उस मन्दिर में आया करते थे और मूर्ति के साथ ही महन्त को भी प्रणाम किया करते थे। इसीलिये यह सिद्धान्त माना गया है कि मालिक की अकृपा में भी कृपा छिपी रहती है। रोष के भीतर भी पोष छिपा रहता है। अस्तु, उस लड़के को नाम मिला–गरीबदास। गरीबदास को दिनभर मन्दिर की पांच गायें वन में चरानी पड़ती थीं। दोपहर और शाम को बनी–बनायी रोटी खायी और पड़कर सो रहे। यही गरीबदास की दिनचर्या थी। लिखना–पढ़ना कुछ नहीं। पूजा–बंदगी कुछ नहीं। दूध पीना और गायें चराना।

2

एक दिन आयी एकादशी। महन्तजी ने गरीबदास से कहा–'आज दोपहर को यहाँ मत आना। मेरा व्रत है, इसलिये भोजन शाम को बनेगा। तुम आधा सेर आटा और बीस आलू लिये जाओ। दोपहरी को स्नान करना और वन की कंडी बीनकर आग सुलगाना। पानी से उस जगह को पवित्र कर देना। समझे ?'

गरीब.–जी हाँ।

धरम.–अपने अंगोछे पर आटा गूंदना। मैं तुमको एक लौकी का कमण्डलु दूँगा, उस से पानी का काम करना। समझे ?

गरीब.–समझे ?

धरम.–आध–आध पाव के चार टिक्कर बनाना। फिर आलू भूनना। आज नमक नहीं खाना चाहिये। इसलिये नमक नहीं दूंगा, समझे ?

गरीब.–समझे। तो अपने आलू भी अपने पास रखिये। समझे ?

बाबा धरमदास का तकिया–कलाम था–'समझे।' चेला गरीबदास ने भी वही तकिया–कलाम स्वीकार कर लिया। इस हरकत पर बाबाजी नाराज नहीं हुए, किंतु प्रमुदित हुए कि चेला ने एक बात तो सीखी।

धरम.–पागल है क्या ? नमकहीन आलू और भी अच्छे लगते हैं। सोंधापन मिलता है। समझे ?

गरीब.–समझे।

धरम.–जब भोजन बन जाय, तब अपने गले का हीरा उतारना, समझे ?

गरीब.–समझे। हीरा कैसा ? समझे!

धरम.–जिस दिन तुझे चेला किया था, उस दिन तेरे गले में मैंने एक शालग्राम की मूर्ति–ताबीज बनाकर बांध दी थी, उसी को हीरा कहते हैं, और वह ताबीज है कहाँ ? तेरा गला तो सूना है ? समझे।

गरीब.–समझे। उतारकर फेंक दिया। समझे?

धरम.–बड़ा गधा है। कहाँ फेंक दिया ? समझे?

गरीब.–छप्पर में खुरस दिया है। समझे।

धरम.–पूरा उल्लू मालूम पड़ता है। समझे। अबे, उसे फेंक क्यों दिया ? समझे।

गरीब.–गले में पत्थर बांधने से फायदा ? समझे। सोते समय कभी–कभी वह गले के नीचे आ

जाता था तो मालूम पड़ता था कि जान गयी। समझे। मैं उसे नहीं पहनूंगा। समझे।

धरम.–अरे राम–राम। चेला है कि चैला। समझे। ले आ उसे मेरे पास। समझे ?

गरीबदास घबड़ा गया। कहीं वृद्ध साधु उसे उस नाहक पत्थर के लिये पीटने न लगे। यह सोचकर वह चटपट ताबीज खोज लाया और गुरुजी को दे दिया।

धरम.–देखो बच्चा। तुम अभी नादान हो। समझे ? इस कपड़े के भीतर शालग्राम की मूर्ति है, समझे ? मूर्ति के भीतर गुपालजी रहते हैं। समझे ?

गरीब.–वही गुपालजी कि जिन्होंने 'बिनदामन' में अवतार लिया था ? समझे। मेरी ही जाति के थे–अहीर थे। दिनभर गायें चराया करते थे और मुरली बजाया करते थे। समझे।

धरम.–हाँ–हाँ वही। समझे। जब भोजन बना लेना, तब इस ताबीज को गले से उतारकर आगे रख देना और कहना कि 'गुपालजी। भोग लगाओ।' समझे ? फिर तुम भोजन करना। समझे?

गरीब.–समझे।

धरम.–अच्छा तो आ, हीरा बांध दूं। समझे ?

गरीब.–अहं। समझे।

धरम.–कोई हरज नहीं है। समझे ?

गरीब.–उहूँ। समझे।

धरम.–हठ नहीं करना चाहिये। समझे ?

गरीब.–गले में नहीं बाधूंगा। सोते समय कभी गुपाल जी ने मेरा गला टीप दिया तो ? चोर आदमी को दूर ही रखना चाहिये। समझे। मेरी कमर में बांध दीजिये। समझे ?

धरम.–हुश। कमर में नहीं। लाओ बाजू में बांध दूँ। समझे। हाथ जोड़कर आँखें बंद करके भोग लगाना। समझे ?

गरीबदास ने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया। बाबाजी ने वह ताबीज बाजूबंद की तरह बांध दिया। इसके बाद आधा सेर आटा और बीस आलू दिये। आधा पाव गुड़ इसलिये दिया कि बाबाजी उसकी बातों पर खुश हो गये थे। इसके अलावा उसने उनका तकिया–कलाम कण्ठ कर लिया था। फिर एक तूंबा देकर कहा–'जाओ बच्चा। हरेक एकादशी को ऐसा ही करना पड़ेगा। समझे ?'

गायें लेकर गरीबदास ने नदी का रास्ता पकड़ा।

3

जब दोपहरी हुई, तब गुरुजी के बताये विधान के अनुसार गरीबदास ने चार टिक्कर बनाये। आलू भूनकर भुरता बनाया और चारों पर थोड़ा–थोड़ा रख दिया। ढाक के पत्तों से एक पत्तल भी बना ली थी। उसी पर चारों टिक्कर रख दिये और मूर्ति भी रख दी। इसके बाद उसने अपने दोनों हाथ जोड़े और आँखें बंद कीं, फिर कहा–'गुपालजी। भोग लगाओ।'

आँखे खोलकर गरीबदास ने देखा कि चारों रोटियाँ ज्यों की त्यों रखी हैं। एक भी कम नहीं हुई। यानि गुपालजी ने भोग नहीं लगाया। वह सोच रहा था कि कम–से–कम एक रोटी तो गुपालजी खा ही लेंगे।

उसने फिर नेत्र बंद किये। फिर वही प्रार्थना की। मगर टिक्करों में कमी न हुई। गरीबदास ने प्रतिज्ञा की कि जब तक गुपालजी भोग न लगायेंगे, तब तक वह भोजन न करेगा। गुरुजी की आज्ञा ही ऐसी थी। ऐसा मुमकिन नहीं कि भोग लग जाये और भोजन में कोई कमी न आये।

दोपहर के ग्यारह बजे से गरीबदास की यह हरकत शाम के चार बजे तक जारी रही। गुपालजी ने देखा कि गरीबदास वज्र मूर्ख हैं। गुपालजी प्रकट हो गये। वे या तो वज्र पण्डित के प्रति प्रकट होते हैं या वज्र मूर्ख के प्रति। बीचवाले यों ही मुंह उठाये बैठे रहते हैं।

अबकी बार गरीबदास ने जो नेत्र खोले तो देखता क्या है कि एक बारह साल का लड़का बैठा हुआ एक टिक्कर खा रहा है।

गरीब.–गुपालजी। तुम बड़े सुधर हो। जी

चाहता है कि चिपटके रह जाऊँ। मगर हो कठोर भी बहुत। समझे ? मार डाला मुझे भूख से। तब प्रकट हुए, समझे ? पहले ही बुलावे में आ जाते तो क्या जाति घट जाती ? समझे ?

मुस्कराकर गुपालजी ने कहा–'अब पहले ही बुलावे में आ जाया करूंगा।'

चटपट एक टिक्कर खतम करके गुपालजी खड़े हो गये और बोले–'तुम भूखे तो नहीं रह जाओगे ?

गरीब.–नहीं। एक टिक्कर ज्यादा था। समझे?

गुपालजी–लेकिन अबकी बार मेरे साथ राधाजी भी आयेंगी। तुम्हारे लिये दो ही टिक्कर बचेंगे। समझे ?

गुपालजी अन्तर्धान हो गये। गरीबदास ने भोजन किया और अपना काम करने लगा। उसकी खुराक आध सेर की थी। परंतु आज वह कुछ भूखा रह गया।

4

फिर एकादशी आयी। बाबाजी ने आटा दिया, तब गरीबदास ने कहा–'गुरुजी। पहली एकादशी में अकेले ठाकुरजी आये थे। अबकी बार ठकुरानी भी साथ आयेंगी। पावभर आटा और दीजिये। समझे ?

बाबाजी ने सोचा कि भूखा रह गया होगा, इसलिये बकवाद कर रहा है। बेपरवाही के साथ तीन पाव आटा तौलकर दे दिया। आलू भी दे दिये थे। बाबाजी ने उसकी बात समझी नहीं। सुनी ही नहीं। सुनी, तो दिल्लगी मानी।

दोपहर को फिर वही लीला हुई। छः टिक्कर थे। सब पर बिना नमक का आलू का भुरता रखा हुआ था। ज्यों ही ठाकुरजी को बुलाया गया, त्यों ही ठाकुर जी ठकुरानी सहित आप आ गये। दो टिक्कर भोग में ही चले गये।

गुपाल.–भूखे तो नहीं रहोगे गरीबदास ?

गरीब.–उस दिन तो तीन ही टिक्कर बचे थे और आज चार बचे हैं। भूखा नहीं रहूंगा। समझे ?

गुपाल.–परंतु अबकी एकादशी में सेर भर आटा लाना। नहीं तो भूखे रह जाओगे। समझे ?

गुपालजी चले गये। गरीबदास भोजन करने लगा। उसने गुपालजी की बात नहीं याद रखी। क्योंकि वह उस बात को समझ नहीं सका था। दिल्लगी समझी थी।

फिर एकादशी आयी। गरीबदास ने तीन पाव आटा लिया था, इसलिये छः टिक्कर बने थे। भोग लगाया गया। ठाकुरजी और ठकुरानी जी के साथ में दो मूर्तियाँ और भी पधारीं। सत्यभामा और रूक्मिणी जी सहित चारों ने चार टिक्कर उठा लिये। अपने दो ही टिक्कर देख गरीबदास जी मसोसकर रह गया।

उसने सोचा–'ठाकुरजी की ठकुरानियों का अन्त नहीं है क्या।'

जब सब लोग खा–पी चुके, तब हंसकर गुपालजी ने कहा–'कहो गरीबदास। मैंने कहा नहीं था कि आटा सेर भर लाना ? खैर, अबकी एकादशी पर डेढ़ सेर आटा लाना। समझे ?

गरीब.–सो क्यों ? समझे।

गुपाल.–मेरे दो सखा भी आना चाहते हैं–मनसुखा और श्रीदामा। वे तो अभी आ रहे थे, कहते थे कि गरीबदास को देखेंगे कि कैसे भोग लगाता है। समझे ?

गरीब.–उनको लाने की जरूरत नहीं। मैं ठाकुरजी को भोग लगाता हूँ या ठाकुरजी के खानदान भर को ? समझे ?

गुपाल–समझो, चाहे न समझो। अबकी बार आटा ज्यादा लाना समझे ?

इस लीला द्वारा भगवान महन्त धरमदास की आँखें खोलना चाहते थे। इस मर्म को गरीब गरीबदास कैसे समझ सकता था। वह चुपचाप भोजन करने लगा। ठाकुरजी अपनी कंपनी–सहित गोलोक चले गये।

धरम.–बेटा गरीबे। आज फिर एकादशी है। समझे ?

गरीब.–रोज–रोज एकादशी खड़ी रहती है। समझे ?

धरम.–तुम्हें क्या तकलीफ होती है ? समझे ?

गरीब.–जिस पर बीतती है, वही जानता है। समझे ?

धरम.–क्या तुम भूखे रहते हो ? तीन पाव खा जाते हो ? यहाँ तो तुम दोपहरी में आधा सेर ही खाते हो ? वन में तीन पाव में भी भूखे रहते हो ? समझे? क्या आटा बेचने लगे हो ? समझे।

गरीब.–मैं ही सब खा जाता हूं क्या ? समझे। ठाकुरजी के भोग में कुछ खर्च नहीं होता है ? समझे। कभी दो जने आते हैं, कभी चार आ जाते हैं। अबकी बार छः प्रानी आयेंगे। डेढ़ सेर आटा दीजिये, नहीं तो मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा। आपकी चैं–चैं से तो कक्काजी के कैं–कैं ही भली थी। समझे?

धरमदास ने डेढ़ सेर आटा दे दिया और स्थिर किया कि आज खुद दोपहरी में छिपकर देखेंगे कि वह आटे को फेंकता है या बेचता है या क्या माजरा है।

भनभनाता हुआ गरीबदास जंगल की तरफ चला गया।

दोपहरी हुई। महन्त धरमदास छिपकर वहाँ जा पहुंचे जहां गरीबदास टिक्कर बना रहा था। एक झाड़ी में पीछे की तरफ बैठ गये। गरीबदास ने बारह टिक्कर बनाये थे। आटा बचाया नहीं था। सब रोटियों पर थोड़ा–थोड़ा आलू का भुरता रखा था। जरा–जरा सी मिठाई भी सबके साथ रख दी गयी थी। दोनों हाथ जोड़कर ज्यों ही गरीबदास ने भोग लगाया, त्यों ही यह क्या–

धरमदास ने देखा कि सोलह हजार रानियों सहित, आठ महारानियों सहित, तीन सखाओं सहित मुरलीधर प्रकट हुए। सबने सब रोटियाँ टुकड़े–टुकड़े कर खा डालीं। उस दिन गरीबदास को कुछ भी नहीं बचा। सोलह आना एकादशी को सामने देख, वह बेचारा अकबका गया। धरमदास का शरीर पसीने–पसीने हो रहा था। भोग या सर्वस्व भोग लगाकर नटवर तो रासलीला करने लगे। सब लोग नाचने और गाने लगे। गरीबदास ने कहा–'मैंने पहले ही कहा था कि चोर आदमी से दूर ही रहना चाहिये। समझे ?'

थोड़ी देर बाद वह परस्तान गायब हो गया। कहीं कुछ नहीं, मनमारे बैठे हुए गरीबदास के पैर पकड़कर धरमदास रोने लगे। यह नयी आफत देखकर बेचारा गरीबदास और भी घबड़ा गया और उछलकर दूर जा खड़ा हुआ।

धरम.–धन्य हैं महाराज। जो आपको साक्षात् दर्शन होता रहा और साक्षात् भोग लगता रहा। हाय, मुझे तो जीवनभर पूजा करते हो गया। कभी सपने में भी अपने गुपालजी को न देखा। आज से मैं चेला और आप गुरु। समझे।

गरीब.–आप कहते क्या हैं ? समझे। आप तो कहते थे कि आटे को बेचता हूँ। देखा कैसे बेचता हूँ। समझे ?

धरम.–समझे। मैं पापी हूँ। मैं अपने प्रभु द्वारा त्यागा गया हूँ। समझे मुझसे कहीं ज्यादा आपकी पहुंच है। अब मन्दिर पर चलें। आज से आप महन्त हुए और कल से मैं गायें चराया करूंगा।

गरीबदास और गायों को साथ लेकर धरमदास जी मन्दिर पर गये। गरीबदास के बहुत रोकने पर भी उसे महन्ती दे दी गयी। दूसरे दिन से धरमदास जी गायें चराने लगे।

शहरवालों को जब यह घटना मालूम हुई तो उनके हृदय में भगवान् कृष्ण का विश्वास कहीं ज्यादा बढ़ गया। इस घटना पर लोगों ने कहा–

'गुरु गुड़ ही रहे, चेला चीनी हो गया।'

साभार–कल्याण

प्रभु को हृदय पूर्वक सर्वस्व अर्पण करो

सदैव अपना सर्वस्व प्रभु को हृदयपूर्वक अर्पण कर देना चाहिए और अर्पण करने का अहं भी हृदय में उत्पन्न नहीं होना चाहिए। प्रकृति के द्वारा स्वयं परमात्मा ही कार्य कर रहे हैं, और उन्हीं की इच्छा से सब हो रहा है। फिर नाहक की इच्छा करके मन को चंचल क्यों करना ? व्यर्थ में शोक किसका करना ? प्रभु को ही सर्वस्व अर्पण करके कार्य करते रहें तो आनंद बना रहता है।

परमात्मा तो प्रकृति के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर खींचता है, फिर चाहे सुख देकर खींचे या दुःख देकर, अतः अपना व्यक्तित्व मिटाकर समष्टि के साथ एक होकर कार्य करें तो कार्य बोझस्वरूप नहीं लगेगा, प्रत्येक कार्य हो रहा है प्रकृति के द्वारा, मैं तो केवल साक्षी हूँ............... ऐसा समझ कर हम कार्य करें तो सदैव परमात्मा में ही रहेंगे और पूरे विश्व में अपने प्रभु के स्वरूप का अनुभव करके आनंदित होते रहेंगे।

अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में हमें केवल मुक्त होने के चिंतन की आदत डालनी है, जब तक शरीर है तब तक सुख–दुःख के प्रसंग तो आते ही रहंगे। उनमें फंसे बिना उन्हें प्रसार होने दो और अपने आत्मसुख–परमात्मसुख में तृप्त रहो, इसी में मनुष्य जीवन की सार्थकता है, इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति–परिस्थिति कभी एक जैसी नहीं रहती है और न ही रहने वाली है, बदलती हुई परिस्थितियों में ही बिना घबराये ज्ञानरूपी खड़ग से काम लेना है। जो हो चुका है, उस पर अब विचार करने की जरूरत नहीं है। वर्तमान कैसा है और उस में क्या–क्या करना है। इतना ही विचारना है। साक्षी–दृष्टा पर दृष्टि रख कर निर्लेप भाव से काम करते जाना है। पढ़ी हुई, विचार की हुई बातों को घबराहट के प्रसंगों पर याद करके वर्तमान स्थिति को आनंदमय बनाने की कोशिश करना चाहिए। जहाँ मनुष्य हार जाता है वहां देव का किया हुआ है.....ऐसी व्यावहारिक दृष्टि से संतोष कर सकता है। लेकिन वास्तविक दृष्टि से देखें तो जगत भी नहीं है और देव भी नहीं है। यदि प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न ही न हो तो वैराग्य किससे उत्पन्न हो ? अतः उस में किसी का दोष क्यों निकालें ? व्यावहारिक दृष्टि से जब तक जीवन है, तब तक ऐसा सब होता ही रहेगा।

अहंकार करने के लिये जब 'मैं' ही न रहा तो 'तू' कहाँ से आया ? यदि कोई है तो 'वही' यानी परमात्मा है। जब तक घड़ा पानी में डूबा रहता है, तब तक उसे पानी में कहीं भी ले जाओ तो उस का वजन नहीं लगता, किन्तु घड़े को पानी से बाहर निकालते ही वह भारी लगने लगता है। इसी प्रकार जब तक मन को ब्रह्म–परमात्मा में डुबाया हुआ रखेंगे, तब तक जगत का बोझ महसूस नहीं होगा लेकिन प्रभु से अपने को भिन्न देखा तो दुःख रूपी भार तुंरन्त ही महसूस होने लगेगा वस्तुस्थिति यही है।

अतः सर्वस्व प्रभु को अर्पण करके मै मेरा का भाव शिथिल करते जाओ... मन से निकालते जाओ।

–इन्द्रचन्द लाला, जयपुर

पावन स्मृति **सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज**

कितनी जल्दी ये 16 माह बीत गये पता ही न चला कैसा लग रहा है मानों कल की ही बात है। कल तक तो हमारे गुरुवर हमारे साथ थे और आज वो हम सब को रोता बिलखता छोड़कर चले गये देखा जाए तो भी निर्गुण रूप में हमेशा हमारे साथ हैं और सदा साथ रहेंगे मैं तो बात भूल ही नहीं पाती हूँ जब स्वामी जी आखिरी बार गोंदिया आये थे और हम लोग स्वामी जी से बातें कर रहे थे तो सांई ने हमसे कहा बस अब हम गोंदिया नहीं आऐंगे और हमने समझा सांई हमसे किसी बात से नाराज हैं। इसलिये ऐसा कह रहे हैं हमें क्या पता था कि वो हमसे कभी न आने की बात कर रहे हैं। हमें खुलकर बता दिया हम ही मूर्ख इतने अज्ञानी हैं कि उनके इशारे को समझ ही न पाए, काश हम इस बात को समझ पाते और जी भरकर सांई से बैठे बातें करते, भगवन हमारी आपसे एक विनम्र विनती है कि हमें ऐसी शक्ति दो कि आपके हर रूप को पहचान सकें आप तो हमेशा हमारे सामने ही हैं कभी संत टेऊँराम बनकर तो कभी सर्वानंद रूप में कभी शांतिप्रकाश कभी हरदासराम और अब हमारे भगत प्रकाश के रूप में आपका यह रूप सदा अजर अमर रहे सभी प्रेमियों के दिलों में लहर बनकर रहे गर्व से कहें हम सभी प्रेमप्रकाशी हैं।

याद आपकी पल–पल आती रहे कभी न भूलूं कभी न बिसरूं
हर उस क्षण को जो सम्मुख आपके बिताये मैंने मेरे प्यारे
गुरुवर हरदासराम

दासी–मीरा अनदानी (गोंदिया)

सदा सबको आगे बढ़ाना सीखें

कुछ लोगों की आदत होती है। कि वे दूसरों के जीवन की उन्नति देखकर जलने लगते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने–आप में कभी संतुष्ट नहीं हो पाते हैं। और न ही सहनशील हो पाते हैं।

जिस प्रकार दूसरों को मान देने वाला व्यक्ति समाज में सदा आदर पाता है। उसी प्रकार दूसरों को आगे बढ़ता देख खुश होने वाला व्यक्ति या दूसरों को उमंग उत्साहपूर्वक आगे बढ़ाने वाला व्यक्ति भी सदैव जीवन की उन्नति को प्राप्त करता है।

जब हम किसी के साथ भला करते हैं। तो उसकी दुआऐं हमें प्राप्त होती हैं। दुआओं की शक्ति मनुष्य को जीवन में ऊँचा उठाती है तथा उसके पथ की हर बाधा दूर करती है।

सहनशील व्यक्ति केवल अपनी व्यक्तिगत प्रगति ही नहीं चाहता, ब्लिक वह समाज के अन्य लोगों को भी ऊपर उठता हुआ देखना चाहता है। सच्चे सहनशील व्यक्ति की यही निशानी है जो मनुष्य केवल अपनी ही उन्नति व स्वार्थ देखता है वह कभी सच्चा सहनशील नहीं हो सकता। समाज के हितकारी महापुरुष 'वसंधैव कुटुम्बकम्' की भावना फैलाते हुए जीवन का सफर तय करते हैं। वे कांटों के मार्ग में असहाय पड़े दुखी मनुष्यों को उठाकर गले से लगाते हुए चलते हैं। धूल भरे पथ में जो राहगीर उन्हें सबसे कमजोर जान पड़ता है। वे उसे सहारा देकर जीवन पथ में आगे बढ़ाते हैं।

हमें सहनशील बन समाज के अज्ञान–अंधकार में भटक रहे लोगों को जीवन का सही रास्ता दिखाना चाहिए। यदि आप ज्ञानी हैं, तो ज्ञान का उपयोग कर, योग हैं, तो आपनी योग शक्ति के प्रभाव से, तथा समाज सेवक हैं तो अपनी सेवा के बल से समाज के पथभ्रष्ट लोगों को जीवन उन्नति का सच्चा मार्ग दर्शाइये। हो सकता है, इस कार्य में आपको समाज के लोगों की गाली, कटु शब्द या उपेक्षा भी सहनी पड़े, किन्तु आप अपने परोपकार से एक पैर भी पीछे न हटाइये। ईश्वर आपकी मदद करेगा। आप हिम्मत रखिए, गिरे हुए को आप उठाइये, उसकी मदद कीजिये इससे आप उनकी दुआ एवं आशीर्वाद पाने के पात्र बन सकेंगे। दुआओं का यह बल आपकी सहनशीलता को जीवन में कभी भी कम नहीं होने देंगे।

–नरेश प्रेम प्रकाशी, अमरापुर स्थान, जयपुर

आँखों देखी सत्य कथा

अन्त वेले गुरुनाम जपने से गुरु लोक की प्राप्ति

कुमारी अनीता अमलानी ने 12 वर्ष की अवस्था में सन्त नरेशलाल प्रेम प्रकाशी से भजन करने की प्रेरणा पाकर सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज से नाम की दीक्षा लेकर प्रेम प्रकाश आश्रम, द्वारिकापुरी में नित्य सेवा, झाडू पोंछा, बर्तन मांझना, भंडारे में सेवा, ढोलक बजाना, भजन, आरती, एकादशी का नियम से व्रत, नाम स्मरण करती रही। लगभग 10 अक्टूबर 2001 को मामूली बुखार हुआ व 8 दिन बुखार चला। इन 8 दिनों में इसने खूब नाम का स्मरण किया व घरवालों से कहा कि स्वांस का कोई भरोसा नहीं इसलिये मुझे नाम स्मरण करने दो। अमावस्या से एक दिन पहले अनिता की बहन शोभा को शाम के समय **नाम स्मरण** में अनिता का मृत शरीर नजर आया व ठीक अमावस्या के दिन जब आश्रम में सत्‌संग के बाद सन्त श्री द्वारा नाम जपाया जा रहा था उसी समय उसने प्राण त्याग दिये। तीसरे दिन उसने अपनी बहन को स्वप्न में कहा **"मैं सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के साथ आनन्द में बैठी हूँ। तुम लोग मेरी चिन्ता नहीं करना। मैंने अपनी इच्छा से शरीर छोड़ा है।"** 17 वर्ष की अवस्था में श्राद्धपक्ष की अमावस्या की शाम को शरीर छोड़ा व पुरुषोत्तम मास के प्रथम दिन उसका संस्कार किया गया व एकादशी रखने के प्रभाव से उसका बारहवां भी एकादशी को आया व नाम जपने के प्रभाव से उसकी अस्थियां संत नरेशलाल द्वारा हरिद्वार में 10 नं. घाट पर सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की आज्ञा से सन्त लखीराम दरवेश की अस्थियों के साथ परवान कर दी गयीं। धन्य हैं ऐसे शिष्य जो गुरु का नाम जपकर गुरु लोक को प्राप्त होते हैं।

धन गुरु टेऊँराम

–दिशा प्रेम पकाशी, द्वारिकापुरी, इन्दौर से

फरीदाबाद सत्संग दा नज़ारा

फिल्मी तर्ज (फिल्म संगम)

तर्ज–तेरे मन की गंगा और मेरे मन की जमना का बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं।
सत्संग का बुलावा है, फरीदाबाद से आया, उठो भक्तों चलो फ़रीदाबाद चलें।

1. सारी संगत मिल के चली है, माता की बरसी मनाने को,
तुम भी चलो संग सब के प्रेमी, गुरु की जोत जलाने को।
भक्त हुआ मतवाला ये मेला देखन वाला, दिल अपना हम शाद करें।
यह सत्संग बुलावा है, फरीदाबाद से आया, चलो भक्तों चलो फरीदाबाद चलें।

2. संतों का हो मेल जहां पर, संगम धाम कहलाता है,
हो जाएं गुरुभक्त इकट्ठे, स्वर्ग वहीं बस जाता है।
गुरु भगत प्रकाश जी आए, संगतां ने शीश निवाए, गुरु महिमा को याद करें।
यह सत्संग का बुलावा, है फ़रीदाबाद से आया, उठो भक्तो चलें फरीदाबाद चलें।

3. दूर दूर से सत्संग करने, कितने संत पधारे हैं,
बरसी मनाने हर कोने से, भक्त यहाँ पर आए हैं।
चढ़ी सत्संग की खुमारी, करो चलने की तैयारी नां व्यर्थ समें बर्बाद करें।
यह सत्संग का बुलावा, है फरीदाबाद से आया, उठो भक्तों चलो फरीदाबाद चलें।

4. गुगलानी कर नेक कमाई, गुरु टेऊँ पार उतारेंगे।
सब कुछ कर दो गुरु के अर्पण जीवन वो ही सुधारेंगे
लग संत किशोर की शरनी, कर ले तू अच्छी करनी, गुरु तुझ को आबाद करें।
यह सत्संग का बुलावा, है फरीदाबाद से आया, उठो भक्तो चलो फरीदाबाद चलें।

–मास्टर सुभाष गुगलानी, हरियाणा

भजन

स्वामी टेऊँराम मुहिंजी बेड़ी पार लगाइ जांय
लहरुन लोदनि खां कढु सतगुरु–छोलन मां त छदाइ जांय
त आसरो हिकु तुहिंजो आहे–तो बिन बियो केर पार लगायें
हथड़ा हिम्मत जा देई मुखे–मंजिल ते पहुंचाइ जांय
सतगुरु टेऊँराम मुंहिंजी बेड़ी पार लगाइ जांय
लहरुन लोदन खा कढु सतगुरु–छोलन मां त छदाइ जांय
2. बख्श गुनाह कर का भलाई–महिर कंदे शल थींदी सणाई
आहे सभ कुझ तुहिंजे हथ में–महिर जा मीहड़ा वसाई जांय
स्वामी टेऊँराम मुंहिंजी बेड़ी पार लगाइ जांय
लहरुन लोदन खा कढु सतगुरु छोलन मां त छदाइ जांय
3 हीणन जो हमाराह तूं आहीं–आउ अची लहु सार सदाई
राझन आहे तुहिंजो गुलाम–हिन सफर खे सफलो बणाइ जाय
स्वामी टेऊँराम मुहिंजी बेड़ी पार लगाइ जांय
लहरुन लोदन खा कढ़ी सतगुरु छोलन मा त छदाइ जांय

हरीश कुमार वेडवानी, गोंदिया

जाने वाले एक संदेश, सद्गुरु से कह देना
इक नन्हादास ?याद में रोये, उसको दर्शन दे देना।............2

1. जिनको सद्गुरु बुलायें, वो किस्मत वाले होते हैं,
जो सद्गुरु से मिल नहीं पाते, छुप–छुप करके रोते हैं,
जितनी परीक्षा ली है मेरी, सद्गुरु और किसी की मत लेना।
इक नन्हा दास ....

2. मुझको ये विश्वास है इक दिन, सद्गुरु मुझे अपनी गोद में बिठायेंगे।
प्यारे सद्गुरु मुझे अपने पास बुलाकर अपना नाम जपायेंगे।
एक बार मुझे अमरापुर बुलायेंगे, सद्गुरु इतनी कृपा कर देना।
इक नन्हा दास ....

3. कैसे लगते हैं मेरे सद्गुरु मुझको जरा बताओ तो
क्या क्या लीला करते हैं प्रेमी जरा सुनाओ तो
दास जय की ये अर्जी सद्गुरु के दर पे लगा लेना।
इक नन्हा दास ....

–नन्हा जय शिवनानी
अजमेर से

गंगा मैया के पावन तट पर सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव सम्पन्न

"सद्गुरु सर्वानन्द का, जन्म दिवस अभिराम, हरिद्वार में मेला लगा आये भक्त तमाम"

परम श्रद्धेय तपोमूर्ति, महर्षि, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 105 वाँ जन्मोत्सव सुरम्य गंगा मैया के पावन तट पर स्थापित प्रेम प्रकाश आश्रम भूपतवाला में 26 अक्टूबर से 30 अक्टूबर तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता व प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्तों के पावन सानिध्य में संपन्न हुआ। आईये गुड़िया प्रेमप्रकाशी की कलम से हम भी मेले में सम्मिलित होकर इसका आनन्द उठायें :

26 अक्टूबर—कितना मनभावन, मनमोहक दृश्य था प्रातःकाल सभी श्रद्धालुगण गुरुमहाराज जी के जन्म दिवस की खुशी में जल्दी–जल्दी तैयार होकर श्री दरबार में एकत्रित होने लगे प्रभात वेला, पावन गंगा मां का तट और महान हरिनाम का संकीर्तन करती "प्रभात फेरी" आश्रम के चारों और प्रेमियों को हरिनाम का अमृत पिलाती, उनके मन में हरिनाम के मीठे रस का संचार करती हुई परिक्रमा कर रही थी। मण्डल की परम्परा के अनुसार 4:30 बजे से 5:30 बजे तक प्रतिदिन हरिनाम संकीर्तन की परिक्रमा लगाई जा रही थी।

आश्रम के मुख्य द्वार के बिल्कुल सामने विशाल परिसर में मन को मोहित, चित्त को आकर्षित करने वाला विशाल सत्संग परिसर बनाया गया। परिसर के बिल्कुल सामने मंच पर एक झोपड़ीनुमा प्रकोष्ठ। जिसमें हमारे प्यारे इष्टदेव लक्ष्मीनारायण भगवान, आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, गुरुवर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, और सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के चित्ताकर्षक तैल चित्रों को विराजित किया गया था। मंच के ऊपर पर्दे पर आचार्य टेऊँराम जी का चित्र शोभायमान था। नीचे सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी का चित्र व बड़े विशाल सुन्दर अक्षरों में पूज्य महाराज श्री का जन्मोत्सव अंकित था।

सत्संग परिसर के अन्दर बड़ी–बड़ी झूमर लाईटें लगाई गईं थी। तथा मंच के बायें तरफ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमदभगवत गीता के पाठ साहब रखे हुए थे। निर्धारित समय 7 बजे से सत्संग कार्यक्रम शुरू हुआ, सत्संग की समाप्ति पर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमदभागवत गीता के पंचदिवसीय पाठ रखे गये। इसके पश्चात 9 बजे हवन स्थल पर सभी सन्त व श्रद्धालु एकत्रित हुए। आश्रम के अन्दर बायीं और स्थित विशाल वृक्ष के नीचे हवन कुण्ड बनाया गया। कितना मनमोहक दृश्य था। बीच में बना पवित्र अग्निकुण्ड जिसके चारों और शोभित होते संतवृंद पवित्र मंत्रों का उच्चारण करते हुए अग्निकुण्ड में आहूति डाल रहे थे। सभी प्रेमी इस दृश्य को देखने के लिये आश्रम की समस्त छतों पर जा चढ़े। 1 घण्टे के मंत्रोंच्चारण के पश्चात पूर्ण आहूति देकर यज्ञ की समाप्ति की गयी। तत्पश्चात् प्रेम प्रकाश ध्वजा की पूजा अर्चना करके ध्वजा को ध्वजा स्तम्भ तक ले जाया गया, मंदिर के शिखर पर स्थित ध्वजा स्तम्भ में प्रेम प्रकाशी ध्वजा को स्थापित किया गया। प्रेमीगण एकटक नजर से इस दृश्य को देखने लगे। समस्त प्रेमीगण व सन्तगण **"हम गीत सनातन गायेंगे"** भजन को बोल रहे थे व तेज वेग से करतल करते हुए इस दुर्लभ दृश्य को देखने लगे। ध्वजा को स्तम्भ पर स्थापित करने के पश्चात "संत श्री मोनूराम जी" द्वारा नारियल तोड़ा गया व पुष्पों की वर्षा की गयी ध्वजा स्थापित करने के पश्चात नीचे शहनाई वादन शुरू हुआ सभी प्रेमी मस्ती में आकर झूमने गाने लगे।

एक घण्टे तक सभी श्रद्धालु व सन्तगण अविराम गति से हाथों से करतल व पैरों से नृत्य में मस्त थे अन्त में शिवोऽम के तीन बार उच्चारण और सद्गुरु सर्वानन्द जी की जय जयकार के साथ इस कार्यक्रम की समाप्ति हुई इस कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी प्रेमीगण दोपहर को होने वाले हरिनाम संकीर्तन की तैयारी में जुट गये।

सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के जन्म उपलक्ष में प्रतिवर्ष श्री प्रेम प्रकाश आश्रम से शोभायात्रा निकाली जाती है, पर इस वर्ष अमरापुर के दरवेश सन्त श्री लखीराम जी के

ब्रह्मलीन होने के कारण इस शोभायात्रा को स्थगित कर दिया गया था। शोभायात्रा के स्थान पर गुरु महाराज जी की आज्ञा से श्री दरबार में दोपहर 3 से 5 बजे तक हरिनाम का संकीर्तन रखा गया। प्रेमीगण शीघ्रता शीघ्र इस हरिनाम संकीर्तन में शामिल होने लगे। सन्तगण द्वारा "राधा रमण हरि बोल, धन बाबा टेऊँराम, सारा जग तारिया, भज गोविंदम बाल मुकुंदम सर्वान्नदम् हरे हरे, की धुनि लगाई जा रही थी। प्रेमीगण भी मुख से इस धुनि को बोलते व हाथों से करतल करते हुए इस महान संकीर्तन की गंगा में डुबकी लगा रहे थे पूरा सत्संग स्थल प्रेमियों के समूह से भर गया। श्री दरबार के चारों कोनों से ध ुनि का स्वर गुंजायमान हो रहा था। अन्त में स्वामी जी की जय जयकार बोल कर इस महान दिव्य हरिनाम संकीर्तन की समाप्ति हुई।

प्रेमीगण शीघ्रता से फिर इस महान संकीर्तन में डूबने व गुरु महाराज के अमृत वचनों को श्रवण करने के लिये आश्रम के सामने बने सत्संग परिसर में पहुंचे। विशाल परिसर का मंच सन्तगणों से शोभायमान हो रहा था। अनेक स्थानों से आऐ संन्तगणों ने अपने अमृत वचनों का श्रवण प्रेमियों को कराया तत्पश्चात् 7 बजे मंच पर गुरु महाराज जी उपस्थित हुए तो ऐसा लग रहा था कि तारों के समूह में चन्द्र देवता खिल गये हैं। पूज्य स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी को जैसे ही शुरू किया पूरा सत्संग पण्डाल प्रेमियों से खचाखच भर गया। स्वामी जी ने अपनी सौम्य वाणी में पल्लव पाकर मेले का शुभारम्भ किया।

27 अक्टूबर–इस दिन प्रातः 7 बजे से 10:30 बजे व सांय 5 से 8 बजे तक सत्संग वर्खा चलती रही जिसमें गुरु महाराज व अन्य सन्तगणों ने श्रद्धालुओं को अमृत वचनों का श्रवण कराया। इस दिन सिन्धी में प्रार्थना पुस्तिका व स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन चरित्र का हिन्दी में तीसरा व अन्तिम भाग का विमोचन पूज्य गुरु महाराज जी के पावन कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

28अक्टूबर–प्रातःकाल 6 बजे से ही असंख्य प्रेमी श्री दरबार के परिसर में इकट्ठे हो गये श्री दरबार के मुख्य द्वार पर संकीर्तन यात्रा जो कि संत लखीराम जी महाराज के अस्थि परवान के उपलक्ष्य में रखी गयी थी, द्वार पर सुसज्जित रथ तैयार था। बीच में संत श्री लखीराम जी की अस्थियों का कलश रखा गया। इस संकीर्तन यात्रा के रथ को पुष्पों से सुसज्जित किया गया।

आगे–आगे सन्त वृंद का समूह बीच में अस्थि कलश का चौपहिया वाहन और उसके पीछे हरिनाम की धुनि में मस्त प्रेमियों का विशाल समूह, संत श्री लखीराम जी की अन्तिम यात्रा में शामिल थे।

संकीर्तन यात्रा के आगे पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व अन्य सन्तगण पैदल चल रहे थे। संतों के द्वारा "राधा रमण हरि बोल, साक्षी शिवोऽम–शिवोऽम की मध ुर धुनि गूंज रही थीं। जिसके पीछे–पीछे अपार श्रद्धालु अपने मुख को संकीर्तन से पावन करते हुए बढ़ते जा रहे थे।

यह अंतिम यात्रा धीरे–धीरे स्वामी सर्वानन्द घाट से निकल कर स्वामी सर्वानन्द स्मृति स्थल 10 नम्बर घाट पर

1. सिन्धी में नित्य नियम प्रार्थना व हिन्दी में स्वामी टेऊँराम जी महाराज जीवन चरितामृत का तीसरा व अन्तिम भाग की पुस्तकों का विमोचन।

2. संत श्री लखीराम जी "दरवेश" की अस्थियों का दस नम्बर घाट पर विसर्जन।

3. सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज के चित्र वाले चांदी के सिक्के का विमोचन।

4. सतनाम साक्षी संदेश सिंधी त्रैमासिक पत्रिका, अमरापुर संदेश अंग्रेजी की त्रैमासिक पत्रिका का विमोचन हुआ।

5. स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 105 पौण्ड का केक।

6. मेले में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये चिकित्सा केन्द्र भी कार्यरत।

7. मेले में स्वामी जी के विभिन्न स्टीकर व किताबें कैसेट्स की स्टालें।

8. श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल द्वारा प्रेमियों की सुविधार्थ लागत मूल्य पर विभिन्न खाद्य पदार्थों की स्टॉलस्।

पहुंची। वहाँ पहले से ही प्रेमियों का बड़ा समूह 10 नम्बर घाट पर भी उपस्थित था, पूज्य महाराज श्री आगे दस नम्बर घाट पर उतरे उसके पीछे सन्त श्री लखीराम जी का अस्थि कलश नीचे दस नम्बर घाट पर लाया गया। पूजा अर्चना के बाद संत श्री लखीराम जी की अस्थियों को संतों के द्वारा गंगा मैया की गोद में विसर्जित कर दिया गया। सभी श्रद्धालु संत श्री लखीराम जी की जय जयकार करने लगे।

फिर स्वामी जी व अन्य संतों ने गंगा मैया में स्नान किया सभी प्रेमी स्वामी जी के साथ गंगा माता की गोद में एकादशी के महान पवित्र दिन स्नान करने को आतुर थे समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए स्वामी जी ने सभी प्रेमियों को सत्संग परिसर में शीघ्र उपस्थित होने को कहा। स्वयं भी सत्संग के लिये आश्रम की और प्रस्थान किया। सत्संग के पश्चात भण्डारा खाकर प्रेमियों ने अपने–अपने कक्ष में जाकर विश्राम किया और शाम को निर्धारित समय पर सत्संग आरम्भ हुआ इस दिन आचार्य श्री टेऊँराम जी महाराज के चित्र वाले चांदी के सिक्कों का विमोचन पूज्य स्वामी जी द्वारा किया गया।

29 अक्टूबर–आज श्री दरबार में ब्रह्मभोज का आयोजन था। हरिद्वार में रहने वाले अनेक संतों महन्तों को इस ब्रह्मभोज में आमंत्रित किया गया था। प्रातःसत्संग की शुरूआत निर्धारित समय पर हुई, सत्संग की समाप्ति पर ब्रह्मभोज शुरू हुआ, विभिन्न आश्रमों के सन्तों का श्री दरबार में प्रवेश, हम सभी मिलकर इस दृश्य को देखने लगे अनेक प्रकार के संत–महन्त श्री दरबार में प्रवेश करने लगे, श्री दरबार का मंदिर में स्थित सत्संग परिसर व भण्डारा स्थल संतों व महात्माओं से भर गया, संतों व महात्माओं को भण्डारे के पश्चात ससम्मान वस्त्रादि भेंट किये गये। इस दिन **सत्नाम साक्षी संदेश सिंधी, अमरापुर संदेश अंग्रेजी की त्रैमासिक पत्रिकाओं** का विमोचन हुआ फिर प्रेमियों के लिये भण्डारा शुरू हुआ और प्रेमियों ने प्रेम पूर्वक भण्डारा ग्रहण किया। शाम को भी पूर्व दिनों की तरह सत्संग चला।

30 अक्टूबर–आज मेले का समापन दिवस था जिसके लिये प्रेमीगण अनेक स्थानों से आकर गंगा मैया की गोद में इकट्ठे हुए आज हमारे परम वन्दनीय सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज का 105 वां जन्मदिवस था इस दिन सभी संत व श्रद्धालु हमारे प्यारे सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज को अपने सम्मुख उपस्थित हैं ऐसा मान रहे थे।

इस दिन प्रातःकाल पूज्य स्वामी जी व सन्तों द्वारा "श्री मंदिर" में सद्गुरु भगवान के विग्रहों को पंचामृत से अभिषेक कराया गया। नवीन वस्त्रों भूषणों से गुरु महाराज जी की प्रतिमा को श्रृंगारित किया गया।

प्रातः 7 बजे प्रार्थना के साथ इस दिन की शुरूआत की गयी अनेक स्थानों से आए सन्तगणों ने अपनी अमृतवाणी में स्वामी जी के गुणों पर प्रकाश डाला तत्पश्चात पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपनी ओजस्वी वाणी में प्रेमियों को बताया कि–

दोहा– पूर्व पुण्य ते पाईया मानुष का अवतार।
कहे टेऊं तिंहं सफल कर सुमरो सिरजणहार।।

पूज्य गुरुमहाराज जी ने कहा कि हमने पूर्व जन्म में कोई अच्छे कर्म किए हैं तभी हमें मानुष का शरीर प्राप्त हुआ, अब इस शरीर को सफल बनाना है तो कैसे बनाऐं ? उसके लिये है सत्संग और सन्त महापुरुषों का समागम। जहाँ से हमें सत्य का ज्ञान हो ये सत्य क्या है ? शास्त्र कहते हैं कि सच ढका हुआ है। छुपा हुआ है प्रकट नहीं और सत्य को प्रकट करने के लिये साधना पुरुषार्थ और तपस्या करनी पड़ती है शरीर को साधना मन को भी साधना उसके बाद सत्य की प्राप्ति होती है, हमारे आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज उपदेश दे रहे हैं मन को समझा रहे है जिज्ञासु कहते हैं, जिसके मन में इच्छा होती है, एक इच्छा होती है संसार की दुनिया के पदार्थ मुझे और मिले, सुख के साधन प्राप्त हो यह होती है सांसारिक इच्छा, दुनिया की इच्छा समाप्त होने वाली नहीं, एक के बाद दूसरी इच्छा जागृत होती है, हमें इन इच्छाओं के ऊपर जीत प्राप्त करनी चाहिए, हमारे दुश्मन कौन हैं, उनके बारे में भी गुरु महाराज जी कहते हे। अन्दर छुपे बैठे हैं। अहंकार, लोभ, माया और ममता इन दुश्मनों को दूर करना चाहिये। इस प्रकार स्वामी जी ने अपनी सौम्य वाणी को यही विराम दिया। 10:30 बजे पूज्य संत जयदेव जी ने श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं भगवत् गीता के पाठों पर भोग डालकर कार्यक्रम की समाप्ति की।

इसी प्रकार सायंकालीन विशेष व अंतिम सत्संग सभा में सत्संग मंच पर आसीन पूज्य स्वामी जी व सन्तमण्डल की चमक से पूरा सत्संग पण्डाल जगमगा रहा था। सत्संग परिसर के मंच की बांयी तरफ सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज का विशाल चित्र रखा गया था। जिसके आगे 105 दीपकों को रखा गया।

गुरु महाराज जी ने अपने कर कमलों से उन ज्योतियों को प्रज्जवलित किया सभी प्रेमियों ने तेज वेग से करतल के साथ उच्च स्वर में स्वामी जी के जय जयकार की, तत्पश्चात सत्संग शुरू हुआ। 7:30 बजे जैसे ही स्वामी जी ने अपनी मधुर वाणी शुरू की पूरा सत्संग पण्डाल प्रेमियों से खचाखच भर गया। पूज्य स्वामी जी तारामण्डल के बीच चमकते चन्द्रमा की भांति शोभायमान प्रतीत हो रहे थे। आश्रम व सत्संग परिसर के बीच की सड़क प्रेमियों से भर गयी। सेवादारियों ने प्रेमियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए परिसर के दोनों तरफ के परदों को हटा दिया था। मार्ग में आने जाने वाले लोग कोतुहुलवश इस अद्‌भुत नजारे को देखने लगे, सत्संग की समाप्ति के उपरान्त स्वामी जी ने गुरुमहाराज जी से आशीर्वाद मांगा व मेले के समाप्ति की, तत्पश्चात् 8:00 बजे स्वामी जी व अन्य सन्तगणों को तीन मंजिला केक काटने का आग्रह किया गया। 105 पौण्ड का तीन मंजिला घूमता हुआ केक प्रेमियों के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र था, स्वामी जी द्वारा केक काटने के साथ ही सारा पाण्डाल सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज के जयघोष से गुंजायमान हो उठा।

फिर पूज्य स्वामी जी मंच पर आकर खड़े हो गये चारों ओर ''वाधायूं–वाधायूं लख लख वाधायूं सांईअ जे जन्म जी लख लख वाधायूं'' के स्वर आकाश में गुंजायमान होने लगे, सभी प्रेमीगण अपने–अपने स्थान से उठकर नृत्य करने लगे। प्रेमीगण गुरु महाराज जी को नृत्य करने के लिये उनका हाथ पकड़ने लगे पर पूज्य महाराज श्री ने अपने वरद हस्त को उठाकर सभी प्रेमियों को आशीर्वाद दिया।

सभी प्रेमी बेमन से अपने स्थान से उठकर इस मेले के सुखद क्षणों की यादों में खो गये उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि उन्हें अब अपने शहर अपने निवास पर लौटना है। फिर सभी प्रेमीगण स्वामी जी से यही प्रार्थना करने लगे कि आप आशीर्वाद दें कि ऐसे मंगलमयी अलौकिक क्षण हमें पुन जल्दी ही प्राप्त हों।

इस पंचदिवसीय उत्सव में वर्तमान मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज, सन्त शिरोमणि स्वामी देवप्रकाश जी महाराज उल्हासनगर के अतिरिक्त स्वामी मनोहरलाल जी कोटा, स्वामी जयदेव जी दिल्ली, स्वामी नामदेव जी हांगकांग, स्वामी अनंत प्रकाश जी पूना, संत हरिओमलाल जी, ग्वालियर, संत प्रतापराय जी मुरैना, संत दयाप्रकाश जी जयपुर, संत हीरानन्द जी जयपुर, संत झामनदास जी सिवनी, संत स्वरूप प्रकाश जी अहमदाबाद, संत शंकरलाल जी धुलिया , संत झामनदास जी भीलवाड़ा, संत श्यामलाल जी कोटा, संत मोनूराम जी जयपुर, संत लालूराम जी दिल्ली, संत मुरलीधर जी खैरथल, संत नरेशलाल जी इन्दौर, संत हंसप्रकाश जी अहमदाबाद, संत शम्भूलाल जी इन्दौर, संत नरेश कुमार जी, संत लक्ष्मण जी, श्री अमरापुर स्थान के नन्हे सन्तगण अनेक सन्तवृंद इस महाकुंभ में शामिल हुए।

गोन्दिया–गोन्दिया प्रेम प्रकाश आश्रम में भी सद्‌गुरु महाराज का पंचदिवसीय जन्मोत्सव धूम–धाम से मनाया गया। वाराणसी में सिन्धु नगर प्रेम प्रकाश आश्रम में इन्दौर के सन्त शम्भूलाल जी की उपस्थिति में जन्मोत्सव का आनंद प्रेमियों ने लिया। ग्वालियर सहित देश विदेश के समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों से जन्मोत्सव मनाये जाने के समाचार प्रेम प्रकाश संदेश कार्यालय को प्राप्त हुए हैं।

पद स्मरण प्रतियोगिता

(ब्रह्म–दर्शनी पुस्तक)

अब अन्तिम तिथि 15 अप्रैल 2002

आचार्य गुरुवर सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित ब्रह्म–दर्शनी पुस्तक के 250 पद याद करके 15 अप्रैल 2002 तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर में सुनावें।

सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार ''चैत्र मेले'' में दिये जायेंगे। इन पदों को आप आस–पास के क्षेत्र एवं विद्यालयों में बच्चों को याद करवायें। याद करवाने वाले पुरुषार्थी भक्तजनों को भी ''विशेष पुरस्कार'' से सम्मानित किया जायेगा।

आप सभी इस प्रतियोगिता में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें एवं दूसरों को भी पद याद करवाने के लिये प्रेरित करें। इस प्रतियोगिता की विस्तृत जानकारी हेतु आप जुलाई–अगस्त–सितम्बर 'प्रेम प्रकाश संदेश' के अंक देखें।

पुस्तक एवं कैसेट प्राप्ति स्थल–श्री अमरापुर स्थान एम.आई.रोड, जयपुर, 372423, 372424 इसके अलावा दिल्ली, हरिद्वार, अजमेर, बड़ौदा, उल्हासनगर, बम्बई, कोटा, इन्दौर, खैरथल, आगरा, ग्वालियर आदि सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध है।

कार्तिकोत्सव की प्रभात फेरी में उमड़ पड़ा हरिभक्तों का सैला

"सब मासों में उत्तम है, पुनीत कार्तिक मास। अमरापुर आ नाम जप उत्सव होता खास।
"देखो प्रेमी आयके, कार्तिक उत्सव आज। बीत न जाऐ ये वेला सोते–सोते आज।।"

इस मास में क्षण भर भगवान की भक्ति करने से मनुष्य के करोड़ों जन्मों के पाप नाश हो जाते हैं। अब इतने पवित्र मास में पवित्र स्थल श्री अमरापुर स्थान इस पवित्र उत्सव से अछूता कैसे रह सकता है ? प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री अमरापुर स्थान पर कार्तिक महापर्व बड़े ही हर्ष व उल्लास से श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व अन्य सन्तों के पावन सानिध्य में 16 नवम्बर से 30 नवम्बर तक संपन्न हुआ।

कार्तिक उत्सव का आरम्भ 16 नवम्बर शुक्रवार के दिन पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, श्रीमद् भागवत व कार्तिक मास की कथा के पाठों को आरम्भ करके किया गया तथा सन्त श्री के द्वारा अगले दिन से होने वाली प्रभात फेरी के आयोजन की सूचना श्रद्धालुओं को दी गयी।

17 अक्टूबर–आज प्रभात फेरी का प्रथम दिवस था यह वह दिन था जिसका प्रेमियों को वर्ष भर इन्तजार रहता है, हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रभात फेरी का समय प्रातः 6 से 7 बजे का रखा गया। प्रातः 5:30 बजे से ही श्रद्धालुओं का श्री दरबार में आने का सिलसिला शुरू हुआ। अमृत वेला में श्री दरबार में प्रवेश करने पर ऐसा लग रहा था कि मानों मेले का सा माहौल है आज "आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज" का पावन अवतरण दिवस शनिवार भी था। अति उत्तम कार्तिक मास की अमृत वेला में हरिनाम का संकीर्तन और वो भी अमरलोक श्री अमरापुर दरबार में इतने महान समय का लाभ भला कौन नहीं उठाना चाहेगा ? आज प्रथम दिवस में बड़ी संख्या में श्रद्धालु श्री दरबार में आये।

प्रेमीगण श्री दरबार के मन्दिरों के दर्शन करने मथा टेकने में व्यस्त थे। इधर सन्तों के कक्ष के समीप बने बरामदे में सेवादारियों द्वारा चौपहिया वाहनों को विद्युत उपकरण लगाये जा रहे थे। प्रेमीगण शीघ्र ही मथा टेकने के पश्चात इस प्रभात फेरी में शामिल हो रहे थे। ठीक 6:00 बजे गुरु महाराज की जय जयकार के साथ महान संकीर्तन फेरी को आरम्भ किया ग

चौपहिया वाहन पर बड़ी सादगी से सजावट की थी तथा आगे आचार्य स्वामी टेऊँराम जी की चित्ताकर्षक (सिद्ध मूर्ति दण्डे वारो सांई) को विराजित किया गया उनके मुख पर पड़ने वाली लाईट ऐसी प्रतीत हो रही थी, कि अन्धकार में सूर्य देव जी उदय हुए हैं।

वाहन के आगे ध्वनि विस्तारक यंत्र लगाया हुआ आगे–आगे प्रेमीगण उनके पीछे अमरापुर स्थान का विद्य समूह और युवा प्रेमी हाथ में ढोलक ढफली झांझ लिये उनके साथ "संत मोनूराम जी"माईक लिए चल रहे थे संत पीछे चौपहिया वाहन और उसके ठीक पीछे प्रेमीगण प्रेम होकर हरिनाम कीर्तन को रसमय बनाने के लिये आतुर हो थे।

"धन बाबा टेऊँराम, सारा जग तारिया" की धुनि साथ सुसज्जित चौपहिया वाहन आगे सरका एवं अमृत वेल श्री दरबार के शांत व सौम्य वातावरण में मधुर स्वर गुंजाय होने लगा।

गुरुमुख द्वार पर आचार्य श्री के वाहन के पहुंचने साथ ही पहली परिक्रमा आरम्भ की गयी। "साक्षी शिवोऽ शिवोऽम शिवोऽम" की ध्वनि के साथ ही यह जुलूस आगे ब लगा, प्रेमीगण प्रेमातुर होकर बढ़े चले जा रहे थे। गौशाल निकट आकर इस महान फेरी को रोका गया, तथा संत श्री द्वारा "गोपाल कृष्ण –राधा कृष्ण की धुनि लगाई गयी प्रेमीगण इतने मस्त हो गये कि हाथ से करतल करने लगे मिनट तक महाआनंद को लूटने के पश्चात "शिवोऽम" ध्वनि के साथ प्रेमीगण आगे की ओर बढ़ने लगे।

अब यह प्रेमीगण व संतों का काफिला श्री दरबा पृष्ठ भाग में आकर विशाल परिसर में पहुंचा यहाँ पहुंचते–पहुंचते प्रेमियों का समूह दुगुना हो गया था। प स्थान पाकर प्रेमी घेरे के रूप में परिणित हो गये तथा हरि पीने के लिये आतुर हो गये। संतों द्वारा निम्न दोहा बोल श्रद्धालुओं को अमृत रस का पान कराया गया।

"अमरापुर स्थान में जप साक्षी सतनाम
जाके जप से दर्श दे, सत्गुरु टेऊँराम"
"सद्गुरु टेऊँराम का श्री अमरापुर स्थान
सत्नाम साक्षी मंत्र का बैठ करो गुणगान"

इस प्रकार गुरुमुख द्वार पर आकर दादा तीर्थदास जी द्वारा ये दोहा बोला गया.....

"भई, गजब की बांसुरी तो बजती थी वृंदावन बसईयाँ की
करूं तारीफ क्या उस मुरलीधर बजईयाँ की
चलता न था जोर जहाँ
वज्र की तीर और तलवारों से
विजय होती थी जहाँ, नटवर की तानों से"

सभी प्रेमीगण चुपचाप एकटक होकर संत श्री की ओर देखने लगे फिर संतों द्वारा **"सत्नाम साक्षी सदा बोल प्यारा"** की धुनि प्रेमियों के दिल में उड़ान भरने लगी और प्रेमीगण तेज वेग से करतल करते और मुख से सत्नाम साक्षी जपते हुए इस मधुर वेला का आनन्द उठाने लगे। संतों के पावन सानिध्य में प्रेमियों का यह जुलूस प्रेम रस का पान करते हुए आगे बढ़ने लगा।

प्रातःकालीन सौम्य वातावरण और संतों के साथ धीरे–धीरे हरिनाम का रस पीते हुऐ ये प्रभात फेरी का जन सैलाब "महाराज श्री" के कक्ष के समीप जाकर रूका। यहां संत श्री के द्वारा **"जय टेऊँरामा अति बलवाना, राम गुण गाना"** की धुनि को सुनकर भावावेश में आकर दोनों हाथों को ऊपर उठाते हुए प्रेमी नृत्य करने लगे।

अब कोई भी प्रेमी ऐसा न बचा था जो इस महान प्रभात फेरी में हाथ से करताल व मुख से हरिनाम का उच्चारण न कर रहा हो। ढोलक व अन्य वाद्य यंत्रों की ध्वनि तेज हो गयी। प्रेमीगण भी कहाँ पीछे थे ? वो भी तेज वेग से नृत्य करने लगे समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए "शिवोऽम" का उच्चारण करके जुलूस आगे बढ़ा। तत्पश्चात् दादा तीर्थदास जी द्वारा **"हरिओम नमो शिवोऽम धुनि"** का स्वर गुंजायमान होने लगा। दरबार के आगे परिसर में बने अमरापुरेश्वर महादेव का मन्दिर देखकर प्रेमीगण और भी ऊंचे स्वर में **"सदा शिव हरि ओम नमो शिवाय"** उच्चारित करने लगे।

प्रभात फेरी में उच्चारित मधुर संकीर्तन

1. **जय–जय राधा रमण हरि बोल**
जय जय राधा रमण हरि बोल
हरि बोल–हरि बोल

2. **सतनाम साक्षी सदा बोल प्यारा**
सदा बोल प्यारा
सदा बोल प्यारा

3. **राधे–राधे गोविन्द–गोविन्द राधे**

4. **जय टेऊँरामा, अति बलवाना**
सर्व सुख धाम जय टेऊँरामा।
हरि मिलाना–जय टेऊँरामा।
दर्शन कराना–बिगड़ी बनाना।
अमरापुर वासिया रे। मेरे मन बासिया रे।।

5. **मन मोह लिया मुरली वाले ने**
मुरली वाले ने श्याम प्यारे ने

6 **भज गोविन्दम बाल मुकुन्दम**
सर्वानन्दम हरे–हरे

7. **टेऊँराम बाबा किसका है**
तेरा नहीं वो मेरा है
टेऊँराम बाबा मेरा है।

8. **आयो आयो आयोलाल**
जेको चवन्दो झूलेलाल
तहिंजा थींदा बेड़ा पार

9. **वृन्दावन में श्याम हैं**
अयोध्या में श्रीराम
अमरापुर मांहि बसे सद्गुरू टेऊँराम।

इस प्रकार **"जय जय राधा रमण हरि बोल, जय जय राधा रमण हरि बोल"** का मधुर स्वर गुरुमुख द्वार के चारों कोनों में गुंजायमान होने लगा, सभी प्रेमीगण पुनः नृत्य में व्यस्त हो गये। अब अमरापुर स्थान के नन्हे–नन्हे विद्यार्थी गण कहां पीछे रहने वाले थे। नन्हे–नन्हे, उज्जवल वस्त्र धारण किये संत भी अपने छोटे करों को ऊपर उठाकर नाचने लगे। अहा। क्या दृश्य था संतों का यह रूप देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा था।

धीरे–धीरे संकीर्तन जुलूस आगे बढ़ा और प्रेमीगण हरि नाम का रस पीने में इतने मग्न हो गये कि पता ही नहीं चला कब समय बीतता चला गया। 6:50 तक तीनों परिक्रमा समाप्त हुई ओर श्रद्धालु पुनः इस हरिनाम का रस पीने के लिये सत्संग हाल में पहुंचने लगे। श्री दरबार के चारों द्वारों से प्रेमीगण सत्संग हॉल में शीघ्र ही पहुंचने लगे।

सत्संग हॉल के मध्य मनमोहक रंग बिरंगी मालाओं से शोभायमान होता मंदिर जिसमें विराजमान थे" इष्टदेव लक्ष्मीनारायण, सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज और सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के मनमोहक स्वरूप रखे हुये थे। भीतरी भाग में भगवान लक्ष्मीनारायण, सद्गुरु महाराज जी के श्री विग्रह एवं समाधि स्थल को भी सजाया गया था।

मंच पर संतगण शोभायमान हो रहे थे सभी प्रेमी सत्संग हॉल पर इकट्ठे होकर गुरु महाराज जी की जय जयकार करने लगे तत्पश्चात् संत श्री द्वारा यह दोहा बोला गया–

"संत सभी पूंज्य है तांको है प्रणाम।
श्वासों में नित ही बसे सद्गुरु टेऊंराम

मधुर व प्रेम से सनी वाणी को सुनकर प्रेमी भाव विभोर हो गये तत्पश्चात संत श्री के द्वारा **"टेऊंराम बाबा किसका है, तेरा नहीं वो मेरा है"** का जैसे ही उच्चारण हुआ प्रेमियों का हृदय अधीर होकर छटपटाने लगा और अपने बाबा को अपना बनाने के लिये ऊँचे स्वर में बोल उठा **"तेरा नहीं वो मेरा है टेऊंराम बाबा मेरा है"** सभी प्रेमीगण बाबा को अपना बनाने के लिये ऊंचे स्वर में बोलने लगे **"मेरा है भई मेरा है"** ढोल, मंजीरें और झांझ का स्वर भी तेज होता और मध्य होता, पर प्रेमियों का स्वर **"मेरा है भई मेरा है"** ऊंचा ही रहता, अंत में संतों द्वारा **"अच्छा बाबा सबका है"** बोलकर प्रेमियों को उनका बाबा दे दिया जाता और सभी प्रेमी गुरु महाराज जी की जय जयकार करने लगे, अन्त में प्रेम प्रकाशियों के पवित्र मंत्र सत्नाम साक्षी का 108 बार जाप किया गया और तीन बार अंगुली उठाकर सोहऽम करके प्रभात फेरी की समाप्ति की गयी।।

इस प्रकार रोज श्रद्धालुगण इस महान दिव्य परिक्रमा का आनन्द उठाने के लिये अतिशीघ्र ही दरबार में आने लगे इस का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जहाँ पहले दिन 600–700 प्रेमियों ने भाग लिया वहाँ दूसरे दिन हजार प्रेमी इस महासंकीर्तन के अति दुर्लभतम सुअवसर का लाभांश प्राप्त करने के लिये आये।

कार्तिक मास के अन्तर्गत कुछ पवित्र दिन जैसे गोपाष्टमी व आंवला नवमी के दिन अप्रत्याशित रूप से प्रेमियों की संख्या में वृद्धि होने लगी। गोपाष्टमी के दिन सांय 4 बजे श्री मंदिर में स्थित गौशाला में गोमाता की पूजा अर्चना की गयी।

आंवला नवमी के दिन पूर्व दिनों की तरह परिक्रमा के बाद सत्संग के पश्चात श्री दरबार के परिसर में स्थित आंवले के वृक्ष की पूजा अर्चना की गयी। सन्तो के पावन सानिध्य में प्रेमीगणों ने वृक्ष के नीचे प्रसाद ग्रहण किया। **रविवार 25 नवम्बर के दिन श्री दरबार में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया** जिसमें अनेक श्रद्धालुओं ने रक्तदान किया।

26 नवम्बर आज एकादशी का महान पवित्रतम दिन था। आज से प्रभात फेरी का समय प्रेमियों की श्रद्धा व सुविधा को देखकर 5:30 बजे से 7:15 बजे का कर दिया गया, शहर के कोने–कोने से श्रद्धालुगण इस पवित्र माह के महान पवि[illegible] दिवस पर अटूट श्रद्धा धारण किये अमरापुर दरबार में आने [illegible] इस दिन संत श्री द्वारा "श्रीकृष्ण" की जय जयकार कर[illegible] धुनि लगाई गई। **"गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो, गो[illegible] मेरो है गोपाल मेरो है" श्री बांके बिहारी नन्दलाल मेर[illegible]**

6:45 बजे गुरुमुख द्वार पर आकर प्रभात फेरी स[illegible] हुई और सत्संग हाल पर 7:15 बजे तक प्रेमी हरिनाम के [illegible] में डूबे रहे। श्रद्धालुगण इस तरह हर रोज हरिनाम का [illegible] पीकर अपने जीवन की घड़ियों को अमूल्य बना रहे थे।

28 नवम्बर आज पूर्व दिनों की अपेक्षा कई श्र[illegible] और अधिक आए क्योंकि आज हमारे पूज्य गुरुवर [illegible] भगत प्रकाश जी महाराज हमारे साथ थे दूसरी प[illegible] लगाते हुए जैसे ही प्रेमियों का समूह गुरु महाराज [illegible] कक्ष के समीप पहुंचा, गुरु महाराज जी भी इस फे[illegible] शामिल होने के लिये निकले सभी प्रेमीगण गुरु महारा[illegible] को देखकर अति उत्साही हो गये और तेज वेग से [illegible] जयकार करने लगे।

आगे–आगे श्रद्धालु उनके पीछे प्रेम प्रकाश मण्डल[illegible] स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज और अमरापुर के विद्या[illegible] शोभायमान हो रहे थे। श्रद्धालुगण गुरु महाराज के अ[illegible] सानिध्य में हरिनाम का पान कर रहे थे। गुरुमुख द्वार पर [illegible] फेरी से सत्संग हाल पर एकत्रित हुए जहाँ "हरि बोल" [illegible] [illegible]ुरातिमधुर धुनि शुरू हुई अब तो भीड़ में आनन्द की तरंगे [illegible] लगीं। प्रेमीगण तेज वेग से नृत्य करने लगे, तत्पश्चात स[illegible] के द्वारा यह दोहा बोलकर सत्नाम साक्षी मंत्र का स्मरण [illegible] गया।

"सत्नाम साक्षी मंत्र जप अमरापुर मांहि
सद्गुरु टेऊंराम तब दर्शन देंगे तांहि"

दिव्य आनन्द का रसास्वादन करते हुए समय [illegible] गति से बढ़ता जा रहा था और अन्तिम दिवस 30 न[illegible] कार्तिक पूर्णिमा का आ ही गया। आज प्रभात फेरी का अ[illegible] दिन था जयपुर शहर के श्रद्धालु इस अन्तिम फेरी के परम[illegible] को प्राप्त करने के लिये चारों और से उमड़ पड़े आज श्रद्[illegible] की भीड़ ने इतना बड़ा रूप ले लिया जिसका अनुमान [illegible] कठिन था।

नित्य की भांति 5:30 बजे सद्गुरु महाराज की [illegible] जयकार के साथ प्रभात फेरी गतिमान हुई हरिनाम के सं[illegible] के साथ फेरी आगे बढ़ी जा रही थी। धीरे–धीरे प्रेमियों की [illegible] बढ़ने लगी कैमरामेन व मूवी मैन इन दुर्लभ दृश्यों को

करने में व्यस्त हो गये जैसे ही चौपहिया वाहन रूका सभी प्रेमीगण अमृत रस का पान करने के लिये रूक गयें।

सभी श्रद्धालु प्रेम विभोर होकर **"जय जय राधा रमण हरि बोल"** की धुनि लगाकर प्रभात फेरी को अनुराग के रंग में रंग रहे थे। अपने गुरु की मस्ती में लीन होकर श्रद्धालु अपने स्वर को तीव्रातितीव्र कर रहे थे तथा ढोलक झांझर और करताल आदि साज मिलकर एक विचित्र प्रकार की स्वर लहरी की सृष्टि कर रहे थे। समय को ध्यान में रखते हुए फेरी को आगे बढ़ाया गया।

प्रेमीगण करताल करते हुए आगे बढ़ने लगे अब तक श्रद्धालुओं की संख्या ने बहुत बढ़ा रूप धारण कर लिया था सेवाधारी चौपहिया वाहन के चारों और अनियंत्रित भीड को नियंत्रित करने में असमर्थ हो रहे थे। बड़ी कठिनाई के साथ पहली परिक्रमा गुरुमुख द्वार पर आकर समाप्त हुई सभी श्रद्धालु मंत्र मुग्ध होकर सद्गुरु टेऊंराम जी महाराज की जय--जयकार करते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे, आखिर 7:15 तक तीन परिक्रमा पूरी हुई।

फिर संत मोनूराम जी द्वारा निम्न हृदयस्पर्शी दोहा गाकर प्रेमियों को अमृत रस पिलाया गया--

"ब्रजमण्डल सम धाम है, परम मनोहर जान
वृंदावन सम जानिये अमरापुर स्थान।"
"पावन गुरु का रूप है पावन गुरु का धाम।
पावन गुरु नाम है सद्गुरु टेऊँराम।"

सब ऊँचे स्वर में टेऊँराम बाबा की जय--जयकार करने लगे, श्री अमरापुर स्थान के संतों द्वारा पूज्य सद्गुरु महाराज की धुनि लगाई गयी--

मुंहिजो सद्गुरु टेऊँराम आ-- दण्डे वारो
जहिंजो पिता चेलाराम आ-- दण्डे वारो
जहिंजो गुरु आसूराम आ-- दण्डे वारो
जहिंजो अमरापुर धाम आ-- दण्डे वारो

सद्गुरु महाराज की जय जयकार के बाद "सत्नाम साक्षी" महामंत्र का 108 बार जाप किया गया।

अहा कितना सुन्दर सुख संवाद है आज के आनन्द का वर्णन इस लोह लेखनी से बाहर की बात है, प्रेमी इस प्रेमरस सागर से निकलना ही नहीं चाहते थे, पर समय तो बढ़ता जा रहा था। आखिर 7:30 बजे शिवोऽम के तीन बार उच्चारण के साथ असंख्य प्रेमियों की तर्जनी एक साथ ऊपर उठी और शिवोऽम की समाप्ति के कुछ क्षण पश्चात प्रेमीगण जड़ मूर्ति की तरह खड़े ही रह गये।

धीरे--धीरे श्रद्धालु अपने स्थानों से माथा टेकने के लिए आगे बढ़े आज श्री दरबार अपनी अनुपम शोभा से श्रद्धालुओं के मन को आकर्षित कर रहा था फिर सन्तों द्वारा प्रार्थना बोलकर सत्संग की शुरूआत की गयी। विभिन्न स्थानों से आए सन्तगणों ने अपने अमृत प्रवचन प्रेमियों को श्रवण कराये और फिर प्रातः 9 बजे हमारे वर्तमान **"प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज"** ने अपनी ओजस्वी वाणी में प्रेमियों को बताया कि

दोहा--हरि का मार्ग कठिन है , ज्यों खांडे की धार।
डिगमिग हो तो गिर पड़े, निश्चल उतरे पार।।
"मैं मेरा गुरु चरणों में दीजिये भेंट चढ़ाए।
कहे टेऊँ तीन लोक में जीवन मुक्त हो जाये।"
भजन--न सुखलो मोहब्बत मार्ग--
पुरजी पैर तपाऐ।।

स्वामी जी ने बताया कि हरि की भक्ति गुरु की भक्ति का मार्ग बहुत कठिन है यमराज नचिकेता को बताता है कि जिस ईश्वर की खोज करने निकले हो वो पाना आसान नहीं है पहले अपने आप को पहचानो जब तक हम अपने मैं को निकाल नहीं देंगे परमात्मा मिलने वाले नहीं परमात्मा के मार्ग पर चलना है तो मन को निश्चल बनाओ मन का चंचल स्वभाव दूर करो तभी परमात्मा की प्राप्ति होगी।

"निश्चल मन से मिलत है निश्चल आत्म राम
टेऊँ मन निश्चल करे।

कहते हैं परमात्मा निश्चल है उसे पाना है तो मन को निश्चल बनाओ।

सत्संग की समाप्ति पर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, श्रीमद्भागवत् गीता और कार्तिक मास की कथा का भोग डाला गया और फिर सत्यनारायण की कथा के बाद प्रातः 11:15 बजे से 3 बजे तक प्रेमियों ने भण्डारे में प्रसाद ग्रहण किया--

इसी प्रकार कार्तिकोत्सव अवसर पर इन्दौर प्रेम प्रकाश आश्रम से भी नित्यप्रति प्रभातफेरी के आयोजन में सैकड़ों की संख्या में प्रेमियों ने हरिनाम संकीर्तन के महाआनन्द में गोता लगाया।

ग्वालियर प्रेम प्रकाश आश्रम में भी प्रभात फेरी का आयोजन (28नवम्बर) में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने हरिनाम का अमृत चखा। वाराणसी (काशी) व अन्य अनेक आश्रमों से भी कार्तिकोत्सव की गूंज अमरापुर धाम तक सुनाई दी।

गुड़िया प्रेम प्रकाशी,
जयपुर से

ज्ञान–सत्संग–चर्चा

सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज–संत मण्डल का देशाटन

संत रज से पावन हुई हरियाणा की हरियाली
अमृत वर्षा से सराबोर हुए हरियाणा वासी

हरिद्वार मेले की समाप्ति पश्चात् स्वामी जी ने हरियाणा प्रेमियों की दर्शन पिपासा को देखते हुए निर्धारित कार्यक्रमानुसर हरियाणा प्रान्त के पिनगंवा गांव से अपना सफर प्रारम्भ किया। स्वामी जी दिनांक 2.11.01 को पिनगंवा ग्राम में पहुंचे। वहां पहुंचने पर उनकी राह देखते हुए प्रेमियों ने स्वामी जी पर पुष्प वर्षा प्रारम्भ कर दी व बैंड बाजों के मध्य स्वामी जी का स्वागत किया गया। स्वामी जी की राह में फूलों की चादर भी बिछाई गयी थी।

निर्धारित कार्यक्रमानुसार सत्संग के लिये विशेष पंडाल बनाया गया था। रात्रि 8 बजे सत्संग प्रारम्भ हुआ सर्वप्रथम अमरापुर के विद्यार्थियों ने मधुर भजन सुनाये तत्पश्चात् श्री भक्त वीरभान जी ने अपने मधुरवाणी द्वारा मधुर भक्ति भजनों को सबके समक्ष प्रस्तुत किया। इनके पश्चात् भगत मूलचन्द जी ने सन्तों की महिमा बाताते हुए बताया कि जैसे महान पुरुषों का संग बड़े भाग की निशानी है। यह कई जन्मों के पुण्य के पश्चात् प्राप्त होती है तथा इस समय को सांसारिक बातों में नहीं गंवाना चाहिए जितना समय मिल सके उतना हरिनाम का उच्चारण करना चाहिए।

"समय का अति कदर करना खोइये न कुंसग में।
जो बचे व्यवहार से, सो सफल कर सत्संग में।।"

भगत मूलचन्द जी के सत्संग समाप्ति के बाद पूज्य सदगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने सत्संग रूपी अमृत की वर्षा करते हुए बताया कि इस मनुष्य जीवन का मूल्य बहुत कीमती है। यह चोला हमें 84 लाख योनियों के पश्चात् प्राप्त होता है। स्वयं देवी देवता आदि अनेक प्रकार के सन्त महात्मा भी इसकी अनन्त महिमा गाते हैं। देवी देवता इस मानुष चोले की प्राप्ति के लिये बहुत तरसते हैं वह चाहते हैं कि हमें मानुष चोला प्राप्त हो जाये हम भगवान की प्राप्ति कर सकें।

दोहा–चोरासी लख योनि का, मानुष है सरताज।
कहे टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज।।

भजन–हिन देहीअ जी महिमा भारी, वेद ग्रन्थ बुधाइनि था
ऋषि मुनि ऐं ज्ञानी ध्यानी, सन्त साध भी गाइनि था
तहिंमें भगिती साधर साधे, प्रभूअ खे वठु पाए रे
मिलियो मनुषु जनमु तोखे आहे, सो व्यर्थु छदि न विञाए,
हर–हर अहिड़ो मिले न चोलो, वठु तूं सफलु बणाँए रे

स्वामी जी ने भजन के माध्यम से बतलाया कि इस मनुष चोले की महिमा सब वेद गाते रहते हैं। तथा प्रत्येक सन्त अ सत्संग वरखा में इसका गुणानुवाद जरूर करते हैं। इतनी म होते हुए भी अगर हम इस जीवन को यूंही गंवा दें तो फिर हम पृथ्वी पर जन्म लेना ही व्यर्थ है हमें अपने गुरु से प्राप्त नाम स्मरण कर गुरु के द्वारा प्राप्त शिक्षा पर चलकर इसको सप बनाना चाहिए। क्योंकि गुरु के नाम के आधार बिना हमारा इस संसार सागर से पार तरने वाला नहीं है।

भजन– सभ कष्ट हमारा दूर हुआ, दुख चिन्ता का सब चूर ह
मैं निर्धन था धनवान बना, मन में शुभ गुण भरपूर ह
मैं नींद में अज्ञान में सोया था, कर कृपा मोहि जग
मन मेरे आनन्द छाए, मन मेरे आनन्द छाए
गुरुदेव मिले अब भाग खुले, जीवन को सफल ब

स्वामी जी ने गुरु महिमा के बारे में फरमाया कि के मिलने पर हमारे कष्ट दूर हो गये, मेरी सारी चिन्ताएं सम हो गयीं मैं सांसारिक भोगों के पीछे भागता था, लेकिन गुरु द्वारा प्राप्त नाम के जाप से मैं उन विषयों से छूट सका हूँ। प्रकार गुरु महिमा बताते हुए स्वामी जी ने पल्लव पाकर सत की समाप्ति की।

दिनांक 3–11–01

आज भी रात्रि 8 बजे प्रेम प्रकाश महिला मण्ड पिनगंवा द्वारा सत्संग को गति प्रदान की गयी। इनके तदोप सन्त दयाप्रकाश जी ने सत्संग प्रारम्भ किया और संत जय जी ने अपनी वाणी में बतलाया कि जो सन्त महात्मा हमारे में आते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि ये हमें सिर्फ द देने आते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य अपने भूले भटके भक्तों सद्मार्ग में लगाना होता है। कहीं भक्त विषय विकारों में परमात्मा को भूल नहीं जाएं। संत जयदेव जी के सत्संग सम के पश्चात् पूज्य गुरु महाराज स्वामी भगत प्रकाश जी ने अ वचनों में आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज महिमा करते हुए बताया कि उनका मन सदा सांसारिक वस् से परे था। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी प्रकार चिन्ता नहीं की तथा सदा निर्लेप रहते थे। सदा अपने गुर द्वारा प्राप्त नाम में तल्लीन रहते थे संसार के सब सन्तो अलग थे।

दोहा–सद्गुरु टेऊँराम की महिमा कही न जाय।
कठिन समय में होत है सर्वानन्द सहाय।।

स्वामी जी ने सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के गुणों के षय में बताया कि वह अपार गुणों से संपन्न थे उनमें वैराग्य कीरी प्रभु भक्ति आदि अनेक प्रकार के गुण विद्यमान थे। द्गुरु महाराज जी के विषय में किसी कवि ने इस भजन द्वारा नके दस गुणों का व्याख्यान किया है।

जन– हिक वैराग बियो फल फकीरी, टियों वहदत चोथीं यादगिरी
पंजो मालिक जो मन में मर्म, स्वामी टेऊँराम वरितो जन्म
छहो शांति संतो फल सादगी, अठो अनुभव नांई आजादगी
दहों दिल में दया ए धर्म, स्वामी टेऊँराम वरतो जन्म
जागियो कृष्णा जा पूरब कर्म, स्वामी टेऊँराम वरतो जन्म

स्वामी जी ने कहा कि सद्गुरु महाराज के अनेक गुणों प्रभु के प्रति प्रेम प्रथम गुण था। और उनके दिल में सब न–हीन व्यक्तियों के लिये दया थी।

अतः हम भी ऐसी प्रार्थना करें कि भक्त वत्सल भगवान म पर ऐसी कृपा करें हम भी गुरु से प्राप्त नाम का जाप कर मरपद की प्राप्ति करें। इन्हीं वचनों के साथ स्वामी जी ने ल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की।

थीन यात्रा में विद्यार्थियों व नवयुवकों द्वारा भी भजन गायन

दिनांक 4–11–01 को स्वामी जी ने प्रातः 7 बजे नगंवा प्रेमियों से विदाई ली एवं स्वामी जी प्रातः 8:30 बजे थीन आश्रम पहुंचे। वहां पहुंचने पर प्रेमियों ने स्वामी जी का व्य स्वागत किया एवं उनके साथ आये सन्त मण्डली को थोचित स्थान दिया गया, प्रातः 10:30 बजे हवन आरम्भ हुआ। समें सब सन्तों ने स्वामी जी के साथ वैदिक मन्त्रोच्चारण मध हवन कुण्ड में आहूतियां दीं। हवन समाप्ति के बाद प्रेम काश ध्वजा की पूजा अर्चना की गयी व ध्वजारोहण किया गया। ज वन्दना के पश्चात **स्वामी टेऊंराम स्कूल** के विद्यार्थियों ने ामी जी के आगे अनेक मनमोहक भजन प्रस्तुत किये उन जनो ने सब प्रेमियों का मन मोह लिया।

दोपहर 12 बजे आम भण्डारे का आयोजन किया गया समें हथीन गांव के सब निवासियों ने प्रसाद ग्रहण किया।

रात्रिकालीन सत्संग 8 बजे प्रारम्भ किया गया, जिसमें बसे पहले प्रेमप्रकाश मण्डली हथीन के नवयुवकों ने प्रभू नाम पी भजन प्रस्तुत किये उनके पश्चात् अमरापुर के विद्यार्थियों अमरापुर महिमा पर भजन सुनाये। संत मनोहरलाल जी ने ने वचनों में प्रेम की महिमा करते हुए बताया कि प्रेम सच्चा ी होता है, जो उस प्रभू परमात्मा से लगाया जाये न कि सारिक झूठी बातों से लगाया जाये। इस संसार में प्रेम तीन कार का होता है। एक तो देखा देखी जो व्यक्ति को देखकर हिर किया जाए। दूसरा जो स्वार्थी प्रवृति का होता है, व्यक्ति र्फ अपने स्वार्थ सिद्धि में लगा रहता है। तीसरा प्रेम मन से किया जाता है जो कि सन्त महात्मा अपने प्रियतम भगवान से लगाते हैं, उस प्रेम में किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं होता है, इन्हीं वचनों के साथ उन्होंने अपनी वाणी को विराम दिया। संत मनोहरलाल जी के बाद पूज्य स्वामीजी ने अमृतपान कराते हुए बतलाया कि महात्माओं का जन्म ही संसार के व्यक्तियों का दुख दूर करने के लिये होता है। उनका चित्त निर्मल होता है व सबको समान मानते हैं। उनके लिये नीचं ऊंच का भेदभाव नहीं होता।

दोहा– बन्दऊ संत समान चित, हित अनहित नहिं कोय।
अंजलि गत शुभ सुमन जिनि, सम सुगन्ध कर देय।।

भजन–
जेके शुभ गुण सां सीगारिनि था, सदा सच जो दगु देखारिनि था।
सभु पापनि मैल निवारिन था, जे के हरि जो नामु जपाइनि था।
भेद भ्रान्ति भ्रम मिटाइनि था, मनु रांवल रंग रचाइनि था।
संत से, संत से, संत से, संत से।

स्वामी जी ने आगे बतलाया कि जो संत महात्मा होते हैं वे सदा अपने आपको तो शुभ गुण से सींगारते ही हैं साथ में अन्य व्यक्तियों को भी अपने साथ मिलाते हैं। सारे पापियों को पाप मुक्त करा देते हैं। प्रत्येक सन्त सबको राम नाम का जाप करने की सलाह देते हैं। खुद तोअमर बनते हे। साथ में अपने साथ वाले लोगों को भी अमर बना देते है। सद्गुरु स्वामी टेऊंराम भी स्वयं तो अमर हुए और साथ में उनके पीछे चलने वाले भक्त भी अमर बन गये।

दोहा–आप अमर चरित्र अमर, अमर आपका नाम।
तव शरणागत भी अमर हो, धन गुरु टेऊंराम।।

भजन–तू निमाणनि जो धणी कोन दिठो बियो रखवालो
सारी दुनिया थी जपे नाथ–सदा तुहिंजो नालो
तुहिंजी वाणी थी दिए दिल खे सदा दिलदारी
स्वामी टेऊंराम वञां–तोतां सदा बलिहारी
छो त तुहिंजी आ मिठा सूरत प्यारी–2

स्वामी टेऊँराम जी की महिमा के बारे में स्वामी जी ने बतलाया कि वे अनाथों को सहारा प्रदान करने वाले हैं। उनकी वाणी सदा प्रत्येक मनुष्य के अन्दर ऐसी आवाज उत्पन्न करती है कि मनुष्य अपने आप परमात्मा की भक्ति में रम जाता है। ऐसे महान पुरुष सदा सबको सच्ची राह दिखाते है, तथा सबको भव से पार उतार देते हैं, अतः हमें भी चाहिए कि हम उन महापुरुषों का संग कर अपना बेड़ा पार करें।

इन्हीं वचनों के साथ स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम दिया, सत्संग पश्चात् पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की।

पलवल में भव्य शोभायात्रा

दिनांक 5–11–01 को स्वामी जी सन्तों के साथ प्रातः

7 बजे हथीन से प्रस्थान कर पलवल पहुंचे। वहां पर स्वामी जी के स्वागत के लिये एकत्रित प्रेमियों ने स्वामी जी पर पुष्पों की वर्षा की। विशाल जन समूह स्वामी जी के आगे नाचते गाते चलने लगा। कई प्रेमियों द्वारा इस चल समारोह में जगह–जगह ठंडा जल व प्रसाद का वितरण किया गया। यह शोभा यात्रा 10 बजे प्रेम प्रकाश आश्रम पलवल में समाप्त हुई, आश्रम पहुंचने पर कुछ समय पश्चात् हवन का आयोजन किया गया। इसमें सभी सन्तों व स्वामी जी के द्वारा आहूतियाँ दी गई तथा हवन समाप्ति के पश्चात् प्रेम प्रकाश ध्वजा को मंदिर के शिखर पर स्थापित किया गया। अन्त में स्वामी जी ने पल्लव पाकर इस अवसर पर सभी प्रेमियों को बधाईयाँ दीं।

रात्रि सत्संग का आयोजन 8 बजे प्रारम्भ हुआ। इसमें अनेक सन्तों, भक्तों व प्रेमियों ने भजन व प्रार्थनाऐं परम पिता परमात्मा के समक्ष प्रस्तुत किये। इन सबके पश्चात् 9:30 बजे पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों में फरमाया कि हमें अपने मन को सदा अपने वश में रखना चाहिए। क्योंकि यह मन हमें प्रभु परमात्मा की तरफ भी ले जाता है। और यही मन हमारा दुश्मन रूप में सांसारिक विषयों की तरफ परिवर्तित करता है।

दोहा–मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
मन ही ते प्रभु पाइये, मन ही के प्रतीत।
मन की माता ममता मारो, मन के बाप गर्व को गारो।
धार नम्रता चीत।।
मन जीते जग जीत, मन से जीत करो।

पूज्य स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में अमृतपान कराया कि यह मन हमारा मित्र भी बन सकता है, अगर हम इसे सच्ची राह या परमात्मा की तरफ ले जायें। मन में अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं। उन विकारों की तरफ ध्यान न देकर सिर्फ अपने प्रभु को मनाते रहना ही सच्ची भक्ति है। यह भक्ति हमारे पूज्य आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने की थी।

भजन–टिन चइन दरबारन हून्दे, महिलात मारियुन जे हून्दे
खबड़ खास दि़ठुम कन्दो वास दि़ठुम ऐं अभ्यास दि़ठुम
ओ, ओ, ओ, सुणों सादगी स्वामी टेऊँराम जी

स्वामी जी ने महिमा भजन के व्याख्यान में सुनाया कि स्वामी टेऊँराम जी महाराज अनेकों माल मिल्कियत के मालिक थे। उनके पास अनेक आश्रम थे। फिर भी उनका किसी वस्तु के प्रति मोह नहीं था। क्योंकि उन्होंने अपने मन को वश में कर लिया था। अतः हमें भी अपनी वाणी द्वारा यही ज्ञान बताया कि हमें अपने मन को वश में करके परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए, इन्हीं वचनों के साथ स्वामी जी ने सत्संग को समाप्त किया।

दिनांक 6–11–01 को निर्धारित कार्यक्रमानुसार र
बजे सत्संग आरम्भ हुआ। सभी सन्त महात्माओं ने अपने मुख
द्वारा अमृतवाणी बरसाते हुए सभी प्रेमियों को अमृतरस क
कराया। ठीक 10:30 बजे पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रका
महाराज ने सत्संग प्रारम्भ किया। स्वामी जी के सत्संग प
भण्डारे का आयोजन किया गया, जिसमें शहर के हजारों
ने प्रसाद पाया।

सांय सत्संग का कार्यक्रम 7 बजे रखा गया सर्व
प्रेम प्रकाश मंडली पलवल के प्रेमियों ने भजन प्रस्तुत
रात्रि के 8 बजे सन्त महात्माओं द्वारा सत्संग को आरम्भ
गया। स्वामी जी ने आज अपने सत्संग में जीवन की नश
के बारे में बताया कि हमारा जीवन एक पानी के बुलबु
समान है। यह किस समय समाप्त हो जाए इसका कुछ वि
नहीं है।

दोहा–मानुष देह अमोल है मिले न बारम्बार
ज्यों फल पाके, भूमि गिरे बहुरि न लागहिं डा

भजन–इस जग में प्राणी रे तुम दो दिन है मेहमान।
इक दिन जाना है दुनियां से निश्चय करके ये जान।

1. **यह दुनिया है मुसाफिर खाना इसमें किसका नाहिं ठिकान**
चल चल गये पुनि चल चल जाते, रहे न को इन्सान।
2. **नदी नाव का यह जग मेला, जान मदारी का यह खेल**
आया किनारा टूटा तमाशा, करे न को पहचा

पूज्य स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में भजन के मा
से समझाया कि हमारे जीवन में दो दिन होते हैं एक तो
का दूसरा दिन मृत्यु का होता है। इन दोनों दिनों के मध्य
जाने वाले शुभ कर्म हमारे साथ मृत्युपर्यन्त परलोक में च
हैं। यह संसार एक स्टेशन के समान है इसमें अनेक लोग
हैं अनेक लोग जाते हैं। जिसके पास गुरु के नाम रूपी टि
होता है, वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर लेतें हैं।

दोहा–गफलत में न गंवाईये मानुष देह महान।
कह टेऊँ तुम जागके भजले श्री भगवान।।

हमें अपने अमूल्य मानुष तन को इन सांसारिक बा
नहीं गंवाना चाहिए। इनसे हमको कुछ भी प्राप्त होने वाला
है। हम सदा भगवान के आगे सांसारिक वस्तुओं की मांग
रहते हैं। लेकिन यह सब वस्तुऐं प्रभु परमात्मा के मिलने
स्वतः ही मिल जाती हैं। जिस प्रकार गेंहू के साथ धान भी
मिल जाता है।

भजन–मानुष चोला दुर्लभ पाया राम भजन बिन वृथा ज
ऐसा वेला हाथ न आए क्यों तुम मूर्ख पाप कम
पाप करे तन गंवा न देना,
नाम हरी का भुला न देना, जीवन अपना रूला न दे

स्वामी जी ने बताया कि मानुष चोला हमें प्राप्त हुअ

यह फिर प्राप्त हो या न हो उसका किसी भी व्यक्ति को पता नहीं है। इसलिये हमें आठों याम परम पिता परमात्मा को याद करते रहना चाहिये।

हमारा एक भी श्वांस व्यर्थ न चला जाए इन सब बातों को ध्यान में रखकर प्रभु की भक्ति करनी चाहिए। इन्हीं आशीर्वाद रूपी वचनों के साथ स्वामी जी ने सत्संग समाप्त किया व पल्लव पाकर इस दो दिवसीय सत्संग ज्ञान उत्सव की समाप्ति की।

फरीदाबाद में माता चतरी बाई का वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न

पूज्य स्वामी जी ने दिनांक 7–11–01 को पलवल से प्रातः 7:45 बजे प्रस्थान किया व 8:30 बजे प्रेम प्रकाश आश्रम फरीदाबाद पहुंचे। आश्रम के मुख्य द्वार पर उपस्थित सन्त किशोरप्रकाश जी के नेतृत्व में भक्तजनों ने फूल बरसाकर अति हर्षोल्लास के साथ स्वामी जी का स्वागत किया। आज फरीदाबाद शहर के प्रेमीगण स्वामी जी के दर्शन के लिये इस प्रकार उमड़े जैसे पानी से भरी नदी में बाढ़ आ गयी हो। स्वामी जी ने सभी को दर्शन व आशीर्वाद देकर कृतार्थ किया।

प्रातः 10:00 बजे सर्वप्रथम नवग्रहों की पूजा अर्चना की गयी। नवग्रह पूजा समाप्ति पश्चात् हवन का आयोजन किया गया, इसमें स्वामी जी के साथ सन्त महात्माओं व शहर के गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया हवन पश्चात् प्रेम प्रकाश ध्वजा की पूजा अर्चना कर उसे मंदिर की छत पर लौहस्तम्भ में स्थापित कर लहराया गया।

मध्यान्ह 12 बजे आम भण्डारे का आयोजन हुआ सर्वप्रथम ब्रह्माभोज में ब्राह्मणों ने भोजन ग्रहण किया तत्पश्चात् सन्तों व प्रेमियों द्वारा प्रसाद ग्रहण किया गया। अपरान्ह तीन बजे विशाल शोभा यात्रा प्रेम प्रकाश आश्रम से निकाली गयी। इसमें अनेक आकर्षक झांकियां थीं जो सभी प्रेमियों के मन को अत्यधिक लुभा रही थीं। इसमें आगे–आगे हाथी घोड़े चल रहे थे। उनके पश्चात् मनोहर झांकियाँ चल रही थीं। सबसे पीछे रामधुनि का कीर्तन करता हुआ जन सैलाब चल रहा था।

इन सबके मध्य पूज्य स्वामी जी इस प्रकार शोभायमान हो रहे थे जैसे तारों के मध्य चन्द्रमा शोभायमान होता है। यह शोभा यात्रा सांय 7:30 बजे पुनः आश्रम प्रांगण में आ समाप्त हुई। स्वामी जी ने पल्लव पाकर इस मेले का शुभारम्भ किया।

दिनांक 8–11–01 को प्रातः 8 बजे अमरापुर के विद्यार्थियों द्वारा प्रार्थना कर सत्संग को प्रारम्भ किया गया। इसके उपरांत वृन्दावन के पंडित श्री रामकिशन शास्त्री जी ने अपने वचनों द्वारा सभी प्रेमियों को भगवत भक्ति का रसास्वादन कराया। शास्त्री जी के बाद सन्त हरीओमलाल जी ने प्रेम महिमा को समझाते हुए फरमाया कि सच्चा प्रेम वही होता है जो प्रभु परमात्मा से किया जाय, उस प्रेम में किसी भी प्रकार का स्वार्थ छिपा हुआ न हो, यह प्रेम उन गोपियों के समान होना चाहिये जो कृष्ण के ऊपर सर्वस्व निछावर करने के लिये तैयार थीं। यह प्रेम शबरी की तरह होना चाहिये सिर्फ भगवान के दर्शन की प्यास ही मन में रहे बाकी सब बातें विस्मृत हो जाएं। 10 बजे प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवत् गीता के पाठों का भोग पारायण सन्त हरीओम लालजी व सन्त किशोर प्रकाश जी द्वारा किया गया।

भोग समाप्ति के पश्चात् प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपनी वाणी में बतलाया कि सन्त महापुरुषों का जन्म लोक कल्याण के लिये होता है। वह सदा वृक्ष की भांति दूसरों के लिए सुख रूपी फल पैदा करते हैं और नदी की भांति अपने ज्ञान रूपी जल का प्रवाह करते हैं।।

दोहा– तरूवर सरोवर सन्तजन–चौथा बरसे मेह।
परमार्थ के कारणे–चारों धारी देह।।

भजन–सूरत से इक मूरत बनकर संत जगत में आते है।
सेवा कर श्रद्धालु उनसे चार पदार्थ पाते हैं।
मन रूपी रावण की ममता मारन के लिये
आदि व्याधि उपाधि अविद्या टारण के लिए
संत जगत में आते हैं जग तारण के लिये।

स्वामी जी ने अपने सत्संग में इस भजन के माध्यम से संतों की महिमा करते हुए बताया कि संत सदा भगवान का रूप बनकर इस संसार में अवतरित होते हैं। जो व्यक्ति इने संत महापुरुषों की सेवा करते हैं, उन्हें संसार के सभी पदार्थों की प्राप्ति होती है। सन्त दया व करूणा के भण्डार होते हैं, व बादल के समान सदा लोक कल्याण हित वचनों रूपी अमृत की वर्षा निरन्तर बरसाते रहते हैं।

स्वामी जी ने बताया कि हमें गुरु सदा सही राह दिखाते रहते हैं। यह उन महान पुरुषों की महानता है। एक जगह दादू जी ने गुरु महिमा के विषय में लिखा है

दोहा–भव सागर में डूबता, सद्गुरु काढ़े आई।
दादू खे वह गुरु मिल्या, लीये जान चढ़ाई।।

स्वामी जी ने फरमाया कि हम इस संसार रूपी भवसागर में डूब रहे थे भाग्यवश हमें गुरु केवट मिल गये और उन्होंने हमारी स्थिति को देखकर, हमें अपने हाथों से निकालकर ईश्वर नाम चिन्तन नौका में चढ़ा लिया है। अब हम नहीं डूब सकेंगे, यह गुरु महाराज की दयालुता है।

भजन–

जगतर जे झूठे झंझटनि खां मन मुहिंजे खे जहिं मोड़ियो
राम मिलण जी राह बुधाए जीउ जगदीश्वर सां जोड़ियो
विषयन जे वहन्दड़ वाहनि खा हथ दई जंहि पारि कयो
वाट दसे वैरागिन वारी अधमनि जो उद्धार कयो

प्यार देई जे ख्याल खसे विया तिनि जहिड़ो ना जग में बियो
दूर वञी तिनि देश वसायो मिलण तिनि जो मुशकिल थियो।

स्वामी जी ने कहा कि हम अज्ञानी जीव इस संसार समुद्र में बहते जा रहे थे। जैसे कठिन समय में हमारे गुरुदेव ही हमारी सहायता के लिये प्रगट हुये। स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भी हमारी रक्षा के लिये इस पृथ्वी पर अवतार धारण किया और स्वयं तो इस संसार सागर से पार तरे साथ उनके अनेक भक्त भी पार तर गये। स्वामी टेऊँराम जी की महिमा के विषय में स्वामी जी ने बताया कि वह बचपन से ही गुरु भक्ति में लग गये। वह सदा सब में अपने प्रियतम को देखते थे।

भजन–

परमेश्वर से लगन लगाई–बचपन से गुरु सेवा कमाई
सत्गुरु शब्द में सुरति मिलाई–बैठ एकांत में शांति पाई
सदैव रहता था निष्काम, सभ में व्यापक देखा राम
बनकर योगी हो बैठा, किया जंगल में विश्राम
मेरे सद्गुरु टेऊँराम, सुमरे श्री साखी सत्नाम।

स्वामी जी ने बतलाया कि आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सदैव दुनियादारी से न्यारे रहते थे उन्हें किसी प्रकार की चिन्ता नहीं थी। उन्हें चिन्ता थी तो एक उस प्रभू परमात्मा की।

वह स्वयं तो महान बने, उनके शिष्य भी महान बने आज हम माता चतरी बाई के वर्सी उत्सव में सम्मिलित हुए हैं। इससे पता चलता है कि हमारे सद्गुरु महाराज कितने महान पुरुष होंगे। माता चतरी बाई के जीवन के विषय में प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने बतलाया कि माता सदा प्रभू भक्ति में लीन रहती थी। उनके मुख से सदा सत्नाम साक्षी मंत्र का सुमरण होता रहता था। आज हम जो कुछ यहां देख रहे हैं वो सब माता का आशीर्वाद ही है। अतः हमें चाहिये कि हमारे गुरुदेव हम पर ऐसी कृपा करें जिससे हम भगवत भक्ति में लीन रहें और अपना जीवन धन्य कर सकें। सत्संग के उपरान्त स्वामी जी ने पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की।

आज सांय सत्संग कार्यक्रम 6 बजे प्रारम्भ हुआ, जिसमें आस–पास व गांवों से आने वाले अनेक भक्तजनों ने माता चतरीबाई के जीवन पर प्रकाश डाला और महिमा का गुणगान किया। आज पूज्य स्वामी जी ने अपने मुखारविन्द से महापुरुषों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सन्त महापुरुष इस संसार में भूले भटके प्राणियों को ईश्वर की प्राप्ति करने के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं

दोहा–महापुरुष इस दुनिया में बड़े काम को आते हैं।
मिटाते खौफ मरने का, अमर आत्म लखाते हैं।।

भजन–संतनि तां कुरिबानु, करियां तन मनु प्रानु

1\. **संतनि पंहिजो रूप सुञातो, पूरण आत्म पद**
निसंगु थी निर्मानु।। 1।।

2 **जन्म मरण खां संत न्यारा, परहित काणि जिनि**
कनि सभ जो कल्यानु।।2।।

स्वामी जी ने भजन के द्वारा सत्संगियों को संत महापुरुष अपना जीवन सदा भक्ति में ही गुजारते किसी प्रकार से कोई भी डर नहीं होता है। वह काल प्राप्त कर लेते हैं। वे अपने निजस्वरूप को पह आत्मपद की प्राप्ति करते हैं। उनमें किसी भी व्यक्ति ऊंच नीच का भाव नहीं होता है। वह स्वयं ब्रह्म स्वरूप ब

दोहा–संत राम में भेद नहीं, संत राम स्वरूप
कहे टेऊं रट राम को, भये राम के रूप

स्वामी जी महाराज ने आगे बताया कि संत स मुख से राम नाम का जाप करते हैं। उनका सारा स में चला जाता है। हमें भगवान की ऐसी कृपा प्राप्त ह हम भी गुरु के चरणों में लग सकें।

भजन–अविद्या की तम है उर माहीं–सत् असत् मोहि सू
ब्रह्मज्ञान की ज्योति, ह्रदय माहिं जगाओ
गुरुजी मुझे अपने चरन लगाओ।

हमारे मन का अंधियारा मिट जाये तथा हम और असत्य की समझ आ सके। हमारे मन में ब्रह दीपक का प्रकाश प्रकाशित हो सके।

स्वामी जी ने बताया कि यह भक्ति का मार्ग कठिन होता है। इस मार्ग को पार करना खाण्डे (तल धार पर चलने जैसा है। इस मार्ग में बहुत संभल पड़ता है।

भजन–हरि का मार्ग बहुत कठिन है, चलिये आप
धीरे–धीरे पग धार रे, तुम गिर ना जाओ

यह मार्ग अत्यधिक कठिन है। इस मार्ग मे स्वामी टेऊँराम जी महाराज व सद्गुरु स्वामी सव महाराज एवं सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी म सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज तथा माता जैसे प्रभु भक्त ही इस राह को पार कर सकते हैं। अन के लिये इस राह को पार करना आसान बात नहीं चतरी बाई के बारे में बताया कि माताजी ने स्वामी जी महाराज से नाम दीक्षा प्राप्त की व उनके द्वारा मार्ग का अनुसरण किया। अपने गुरु के प्रति अगाध श्र हुए प्रेम का प्रसार किया। सभी प्रेमियों को सच्ची रा के लिये घर घर में जा हरी नाम भक्ति की जोत जगा पद को प्राप्त किया। स्वामी जी ने कहा कि हमें भी पुरुषों की तरह परोपकार के कार्य करने चाहिये। कार्यों की शिक्षा हमें महान महापुरुषों के जीवन चरित्र

द्वारा रचित अनुभव वाणी से प्राप्त हो सकती है, और हम भी अपना जीवन सफल कर सकते हैं। इन्हीं वचनों के साथ स्वामी जी ने 8:30 बजे रात्रि को पल्लव पाकर माता चतरी बाई वर्सी उत्सव की समाप्ति की, इस उत्सव में भाग लेने वाले सभी प्रेमियों को मेले की लाख–लाख बधाईयाँ दीं।

स्वामी जी रात्रि 9 बजे दिल्ली दरबार के लिये रवाना हुए।

दिनांक 9–11–01 को स्वामी जी ने दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर झेलम एक्सप्रेस द्वारा पूना के लिए प्रस्थान किया।

पूना शहर में स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि संपन्न

दिनांक 10–11–01 को स्वामी जी अपरान्ह 3:30 बजे पूना रेल्वे स्टेशन पर पहुंचे वहां पर एकत्रित भक्तजनों ने स्वामी जी का माल्यार्पण कर स्वागत किया। वहां पर उपस्थित प्रेमियों ने स्वामी जी के साथ आये सन्तों व मेहमानों का स्वागत किया।

स्वामी जी अपरान्ह 4:15 बजे स्वामी ग्वालानन्द आश्रम पहुंचे, आश्रम के व्यवस्थापक संत रामकृष्ण जी ने मुख्य द्वार पर आकर स्वामी जी का स्वागत किया। स्वामी जी के साथ आए सभी सन्तों व मेहमानों को ठहरने के लिये आसन दिया गया।

दिनांक 11–11–01 को सत्संग का कार्यक्रम प्रातः 8:00 बजे प्रारम्भ हुआ। इसमें सर्वप्रथम अमरापुर स्थान, जयपुर के विद्यार्थियों द्वारा प्रार्थना का गायन किया गया उनके तदन्तर भगत मूलचन्द जी ने सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज व स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज की महिमा पर प्रकाश डाला। इनके उपरान्त ग्वालियर के सन्त हरीओमलालजी ने अपनी वाणी में बताया कि हमें प्रभु परमात्मा से यहीं अरदास करनी चाहिये कि हम सब आपका नाम स्मरण करते रहें, हमारे द्वारा किसी भी जीव का दिल दुखी न हो। हम बुरे कर्मो से किनारा करें व हमारे अन्दर कुमति का अन्धकार मिटे सुमति का प्रकाश हो। सन्त हरीओमलालजी के पश्चात् प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि एक प्रेम ही संसार में ऐसी वस्तु है। जिससे सम्पूर्ण संसार व परमात्मा को प्रसन्न किया जा सकता है। वृन्दावन की गोपियों ने भी भगवान कृष्ण को प्रेम की डोरी में बांधे रखा था प्रेम के बिना अपने प्रभू की प्राप्ति करना आसान नहीं है।

दोहा–प्रेम बिना पहुंचे नहीं, को जन हरी के धाम।
कहे टेऊं ताते जपो, प्रेम सहित हरि नाम।।

भजन–इक ही प्रेम प्रभु को भाया
जाति वर्ण कुल कर्म न देखा प्रेम के हाथ बिकाया

1. **प्रेम अटल जब केवट कीना, राम देख मुस्काया**
   जिन चरणों को योगी चाहत, से निज चरण धुलाया
2. **प्रेम भीलनी का जब देखा, रघुवर जब घर आया।**
   प्रेम जटायू का लख, हरि ने अपने धाम पठाया।।

स्वामी जी ने प्रेम महिमा के उदाहरण देते हुए कहा कि भगवान को एक प्रेम ही पसन्द होता है। जो भक्त सच्चे मन से प्रभू को याद करता है, भगवान भी उनकी सदा रक्षा करते हैं। परमात्मा श्रीराम भी केवट के प्रेम पर प्रसन्न हुए थे, बड़े–बड़े ज्ञानी–ध्यानी, ऋषि मुनियों को प्रभू के चरण प्राप्त नहीं होते हैं। जो चरण भक्त केवट को प्राप्त हुए। आगे बताया कि भीलनी भी निम्न जाति की थी, फिर भी राम भगवान के द्वारा उनके झूठे बेर खाये गये, यह सारी प्रेम की ही करामात थी।

हम भी भगवान के समक्ष प्रेम का ढोंग करते हैं। लेकिन हमारा मन तो सांसारिक वस्तुओं में लगा रहता है। इसलिये हमें परम सुख की प्राप्ति नहीं होती है।

श्लोक–मुख सा राम चवे–शांति न अचे जिअ खे
अन्न पाणीअ जे नाव सा–उञ भुख कीन लहे
नगर पहुंचे कीन की–बिना पन्ध कए
गुरु गम रहति रहे–सुखी रहे संसार में।

स्वामी जी ने बताया कि जिस प्रकार भोजन का नाम लेने से भूख समाप्त नहीं होती तथा बिना परिश्रम किये किसी शहर में नहीं पहुंचा जाता है। उसी प्रकार राम–राम का मुख से जाप करने से हमारी मुक्ति होने वाली नहीं है। उसके लिये तो प्रेम के मार्ग में कदम रखना ही पड़ेगा यह प्रेम का मार्ग अत्यधिक कठिन मार्ग को हमारे आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने पार किया था। उनकी प्रभू परमात्मा की तरफ वृती बचपन से ही लगी हुई थी। वे सदा अपनी माता की गोद में बैठकर माता को भजन गाने का आग्रह करते थे, उनकी माता स्वामी जी को कबीर जी के सुन्दर सुन्दर भजन सुनाया करती थीं।

भजन–अन्तरा

चइन सालन जो चीतड़ो लाऐ, बुधी अमरि खां वाणी
हर–हर चवे सुणाइन माता, हुअण में हैरानी
माउ मिठी भी दादे आसान आसन जी, वाणी चवे कहाणी
बोल बुधी पोई बारन वांगया–भरे अखियुन में पाणी
हो बालक पर अन्दर सालक–समझे गाल्ह सभाई
खण्डूअ में देह धारयाईं–टण्डे में वारी वसाई
जमण सां जाम स्वामी टेऊँराम, हो को नूर अलाही।

पूज्य स्वामी जी ने सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के महिमा भजन में बताया कि स्वामी जी का मन बचपन से प्रभू भक्ति में लीन था। स्वामी जी स्वयं शंकर भगवान के स्वरूप थे। उन्होंने संसार के भूले भटके जीवों को सत्मार्ग में लगाने के लिये इस धरती पर अवतार धारण किया था। महाराज श्री ने आगे बताया कि जिस प्रकार राम भगवान की

सेवा के लिये लक्ष्मण जी आए और प्रभु कृष्ण जी की सेवा के लिये बलराम जी आये थे, उसी प्रकार आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी की सेवा के लिये स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज आये थे, उन्होंने स्वामी टेऊँराम जी महाराज की तन-मन से सेवा की, कभी भी अपने मन में गुरु के प्रति अपने भाई का व्यवहार नहीं आने दिया। इसी गुरुभक्ति व प्रभू भजन के सुमरण से अमर पद की प्राप्ति करी व अपने जीवन को धन्य बनाया। इन्हीं शुभ कर्मों के कारण आज हम उन महापुरुषों को याद कर रहे हैं। इन्हीं वचनो के साथ स्वामी जी ने सत्संग समाप्त किया।

दिनांक 12-11-01 को प्रातः 8:15 बजे सत्संग प्रारम्भ हुआ। इसमें अन्य सन्तों द्वारा भजन गायन हुआ व स्वामी ग्वालानन्द आश्रम के व्यवस्थापक स्वामी रामकृष्ण जी ने अपने प्रवचनों में बताया कि सेवा के द्वारा अपने इष्ट गुरु को प्रसन्न किया जा सकता है। जिस प्रकार गुरु अमरदास जी ने अपने गुरु अंगददेव जी की सेवा कर अमर पद की प्राप्ति करी, और हमारे गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपने गुरु आसूराम साहेब की सेवा करी व गुरुदेव स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज गुरुदेव स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने गुरुदेव स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी की पूर्ण श्रद्धा रखकर सेवा की व मोक्ष पद को प्राप्त किया। इन्हीं वचनों के साथ संतजी ने सत्संग समाप्त किया।

प्रातः 10:30 स्वामी ग्वालानंद ग्रन्थ, व रामचरित मानस गीता का भोग पाया गया व स्वामी जी की आरती का गायन किया गया। पूज्य सद्गुरु महाराज जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि हमने अपना सारा जीवन निन्द्रा करने में गुजार दिया है। पहले माँ की गोद में सोये फिर झूले में सोये और पूरे जीवन में सोते चले आये। अब तो अपनी निद्रा को त्याग करके प्रभू का सुमरण करना चाहिये।

दोहा-सोए अविद्या नींद में, कहे टेऊँ बहुकाल
अब तो गफलत छोड़के-सुमरो दीन दयाल

भजन-करि रामु भजनु प्यारा-मिली मानुष देही थई
बिनु राम नाम जग में-कोई न स्नेही थई
श्री राम दवा जाणिजि-सभु रोग मिटाए थी
तन मन खे शान्ति दई-सभु तपति हटाए थी
पीउ प्रेम साणु सा तूं-अञां वेल न वेई थई

स्वामी जी ने कहा कि हमें आलस का त्याग करके श्री राम नाम औषधि का पान करना चाहिये। जिससे हमारे मन में उठने वाली विषय विकार रूपी बीमारियों पर काबू पाया जा सके। हमारे अन्दर उठने वाली जलन व ईर्ष्या की तपन शांत हो सके हमें सच्चे स्वरूप का साक्षात्कार हो सके और जब हम भगवान का जाप करेंगे तब हम और के दोष न देखकर अपने दोषों को देखने लगेंगे।

दोहा-करत कृपा जब ईश तब देखते मन निज दोष
कहे टेऊँ तज दोष को-धारत मन संतोष

स्वामी जी ने फरमाया कि जब हम अपने दोषों देखेंगे तब हमारे मन में ग्लानि होगी और हम अपने दोष परे हों सकेंगे। क्योंकि भगवान भी यही कहते हैं कि जो तरफ कदम बढ़ाता है, उसकी रक्षा का भार मेरे ऊपर आ ज है।

भजन-भगितनि जो रखिपालु पालु पालु, श्री राम अ

1. **भगवत खे निर्जु भगतु वणे थो-भगितनि जो सो दासु ब**
प्रेमनि जो प्रतिपालु पालु पालु, श्री राम आ

स्वामी जी ने आगे बतलाया कि भगत सदा भगवान अच्छे लगते हैं व भगवान सदा अपने भक्त की रक्षा करते जिस प्रकार भगवान ने भक्त कबीर जी की रक्षा की थी।

भजन-भगितनि जा भगिवान, हरिदमु काज संवारे

1. **भगत कबीर जी पैज रख्याईं-पाण कबीरू थी यज्ञु क**
दिलि घुरियों दे दानु

सुनने में आता है कि एक बार भक्त कबीर के विद्रोह ने अफवाह फैला दी थी कि भक्त कबीर जी ने यज्ञ करव है। जब भक्त कबीर जी को यह बात मालूम पड़ी तो वह क लगे भगवान स्वयं आकर इस यज्ञ को पूरा करेंगे और यही ह भगवान ने स्वयं आकर उस यज्ञ को पूरा किया एवं सब ग अनाथों को मुंह मांगा दान दिया, और अपने भक्त का म बढ़ाया।

स्वामी जी ने फरमाया कि राम का आधा नाम लेने जिस प्रकार भगवान ने गज की रक्षा करी उसी प्रकार हम बार राम का पवित्र नाम मुख से कहेंगे तो हमारे अनन्त ज के पाप नाश हो जायेंगे।

दोहा-पर्वत जेदा पाप हो-लेवे हरि का नाम
रजब रति आग की-साड़े सारा ग्राम

स्वामी जी ने रजब की वाणी के द्वारा बताया कि जि प्रकार आग की छोटी सी चिंगारी सारे धान को नष्ट कर द है। उसी प्रकार गुरु मन्त्र का जाप करने से हमारे कोटी-क जन्मों के सारे पापों का विनाश हो जाता है।

स्वामी जी ने आगे कहा कि प्रभु परमात्मा हम सब ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें जिससे हम गुरु के मन्दिर में आ अपने हाथों के द्वारा गुरु सेवा में सहयोग कर सकें और नित्य प्रति अपने गुरु के दर्शन होते रहें।

भजन-अन्तरा
पेरनि सा पन्धु करे अमरापुर धाम अचां
नेणनि सां सच्चा सत्गुरु मां तोखे रोज दिसां
हरदम हथड़नि सां कयां तुहिंजी सेवा मां सुखध

गुरुदेव मिठ़ा मनहार मुहिंजा सत्‌गुरु टेऊँराम
ईहा दया कयो मूंते नित जपियां तव्हां जो नाम

स्वामी जी ने इस भजन द्वारा यह प्रार्थना की, हम सदा आपके द्वार पर आते रहें व अपने नेत्रों से आपका दर्शन कर व मुख से आपके द्वारा प्राप्त नाम का सुमरण करके अपने जीवन को सफल बनावें।

इन्हीं वचनों के साथ स्वामी जी ने सत्संग समाप्त कर पल्लव पाकर उत्सव की समाप्ति की। 12 नवम्बर को मध्यान्ह 12:30 बजे पूना से बम्बई के लिये प्रस्थान किया।

जीतेन्द्र (जीतू) जयपुर से

पूना में कार्तिकोत्सव पर जाते हुए बम्बई आगमन

दिनांक 16 नवम्बर–पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज अपनी संत मण्डली सहित दोपहर 2:00 बजे मुम्बई सुपर फास्ट ट्रेन द्वारा जयपुर से मुम्बई के लिये रवाना हुए। जयपुर–मुम्बई यात्रा के मध्य कई स्टेशनों पर आये प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी व सभी संतों का भावभीना स्वागत किया, सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज के जयघोष की ध्वनि बहुत दूर–दूर तक गुंजायमान होने लगी। पूज्य स्वामी जी सभी को आशीर्वाद देते हुए दिनांक 17 नवम्बर को प्रातः 8:00 बजे मुम्बई नगरी पहुंचे। प्रेम प्रकाश मन्दिर (माहीम) व प्रेम प्रकाश मन्दिर (खार) में कई प्रेमियों ने स्वामी जी व सभी संतों का स्वागत किया। स्वामी जी के ठहरने की व्यवस्था प्रेम प्रकाश मन्दिर (खार) में की गयी थी। यहां पर सांय सत्संग का कार्यक्रम 5:30 बजे से 7:30 बजे तक रखा गया था जिसमें कई प्रेमी लाभान्वित हुए।

पूना में कार्तिकोत्सव पर दिव्य सत्संग सभा

19 नवम्बर पूज्य स्वामी जी अपनी मण्डली सहित सड़क मार्ग द्वारा दोपहर 12 बजे पूना के लिये प्रस्थान किया व सांय 4 बजे अग्रवाल कॉलोनी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम (पूना) पहुंचे। स्वामी अनन्तप्रकाश जी महाराज के नेतृत्व में कई प्रेमप्रकाशी प्रेमियों द्वारा स्वामी जी व संतों का पूना आगमन पर हार्दिक अभिनन्दन किया गया। निर्धारित कार्यक्रम अनुसार सांय सत्संग का कार्यक्रम 6 से 8:30 बजे तक रखा गया था सबसे पहले संत मण्डली ने अपने–अपने प्रवचनों द्वारा सभी प्रेमियों को अनन्त शिक्षाएें दीं। स्वामी जी ने अपने अमूल्य वचनों द्वारा उपस्थित समस्त प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए बतलाया कि–

दोहा–बुरा किसी का ना करो–सबका भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे–ताँका कर उपकार।।

भजन–सन्त सच्चा जे परमेश्वर जा, सभ जो मांगिन खैर अदा।

1. **भलो चवे या बुरो चवे को, कहिं साँ कनि ना वैर अदा**
2. **बे दावा थी दुनिया अन्दरि, सालिक कनि था सैर अदा**
3. **साहिब जी सभु सूरत जाणी, रखनि न मन में गैरु अदा**
4. **कहे टेऊं से भाग वसाइनि–जिते रखनि हू पेरु अदा**

संसार में संतों का स्थान सबसे ऊँचा होता है। वो इसलिये कि संतों के हृदय में परोपकार की भावना होती है। वे निरन्तर सभी दुखियों को दुखः दूर करने के लिए प्रयास करते रहते हैं। अगर उनके ऊपर कोई दुख आता है तो हंसी–खुशी से सहन कर लेते हैं। इसके विपरीत किसी जीव पर दुःख आता है तो वह मक्खन की तरह पिघल जाते हैं। जैसे मक्खन को थोड़ी आँच देने पर वह पिघल जाता है। उसी प्रकार संतों का हृदय भी मक्खन की तरह होता है।

संत हृदय नवनीत समाना–

उनके मक्खन रूपी हृदय पर जब जीवों के दुखों रूपी आँच पड़ती है तो झट से उनका कोमल हृदय द्रवित हो जाता है और किसी न किसी प्रकार जीवों को लोक व परलोकिक दुखों से उभारने की चेष्टा करते हैं इसके विपरीत संसारी सिर्फ अपने ही सुखों की जोड़–तोड़ में लगा रहता है इसलिये संत महापुरुषों का स्थान ऊँचा होता है। संत महापुरुष अवतार लेकर आते हैं व किसी भी पदार्थ पर दावा नहीं करते सदैव बेदावा होकर रहते हैं वे हमेशा सबको यही उपदेश देते हैं कि संसार के किसी भी पदार्थ पर दावा नहीं रखना चाहिए। क्योंकि इस नश्वर संसार की समस्त वस्तुऐं यही पर छूट जाने वाली हैं। हमारे द्वारा किये गये शुभ कर्म ही परलोक में सहायक बनते हैं। इसलिये जितना हो सके, हर कार्य को परमात्मा के निमित्त बनाकर करना चाहिए। आज संसार में जितने भी जीव दुखी हैं वे सब दावा करके ही दुखी हो रहे हैं अगर हम किसी चीज को अपना मानकर बहुत लगाव रखते हैं और वह चीज हमसे एक दिन छूट जाती है तो हमें गहरा दुःख होता है वो दुःख इसलिये होता है क्योंकि उस पदार्थ को हमने अपना मान रखा था, अगर हम दावा नहीं करते तो उस वस्तु के छूटने पर हमें दुख नहीं होता। संत महापुरुष अपने समस्त जीवन में बेदावा होकर रहते हैं इसलिये किसी भी जड़ या चेतन पदार्थ के छूटने पर उन्हें कोई संसार का दुख चलायमान नहीं कर पाता वे जीवों के कल्याण के लिए निरन्तर अग्रसर रहते हैं।

पूज्य स्वामी जी ने दृष्टांत द्वारा समझाया कि गुरु और शिष्य जंगल में चले जा रहे थे वे दोनों थक गये थे, उनको बहुत भूख भी लगी थी इतने में उनको सामने आलीशान भवन दिखाई पड़ा, वह सुन्दर भवन राजा ने अपने विश्राम के लिये एकान्त वन में बनवाया था। राजा जब राज्य कार्यों से थक जाता था तो वन में कई बार यहां पर आकर विश्राम करता था। जब गुरु व शिष्य दोनों की दृष्टि उस भवन पर पड़ी तो दोनों उस भवन की ओर चल दिये। गुरु ने शिष्य को पहले ही कह दिया कि बेटा कभी भी कुछ बनना नहीं व किसी भी पदार्थ पर दावा नहीं करना। चलते–चलते वे भवन तक जा पहुंचे उस भवन में फलों का बगीचा भी बना हुआ था, जिसमें मीठे व रसदार

फल लगे हुये थे व कई सुन्दर–सुन्दर कमरे भी बने हुए थे। पहले परमात्मा को याद कर उन्होंने फलों का भोजन किया। भोजन पश्चात् कमरों में जाकर विश्राम किया।

भगवान की लीला अक्समात राजा भी विश्राम करने हेतु उस वन में बने महल में आया। राजा के सिपाही देखकर आश्चर्य में पड़ गये कि भवन में कोई राहगीर विश्राम कर रहा है। उन्होंने सबसे पहले गुरु के कमरे में जाकर उनसे पूछा कि आप कौन हैं वे नम्रतापूर्वक चुप रहे तो सिपाहियों ने समझा कि यह कोई संत महापुरुष है। सिपाहियों ने आदरपूर्वक उनसे कहा कि राजा विश्राम करने हेतु आये हुये हैं कृपया दूसरे किसी स्थान पर जायें वे महात्मा चुपचाप चले गये इसके पश्चात राजा के सिपाही जिस कमरे में शिष्य सो रहा था उस कमरे में गये व शिष्य से पूछने लगे कि आप कौन हैं तो शिष्य ने अहंकारपूर्वक सिपाहियों को कहा कि आप देख नहीं रहे मैंने श्वेत वस्त्र धारण कर रखे हैं मैं संत हूं। सिपाहियों ने उनके अहंकारपूर्वक अल्फाज़ (वचन) सुनकर उनको अपमानित कर महल से बाहर निकाल दिया जब गुरु व शिष्य फिर से चलते जा रहे थे तो शिष्य ने गुरु से पूछा कि आपको तो सिपाही आदरपूर्वक बाहर छोड़कर आये व मुझे अपमानित कर बाहर निकाल दिया गया ऐसा क्यों हुआ तब गुरु ने उत्तर दिया कि तुम जरूर कुछ न कुछ बने होंगे उसने कहा ऐसी तो कोई बात नहीं मुझसे सिर्फ इतना पूछा गया कि तुम कौन हो मैंने कहा श्वेत वस्त्रों को देखकर ही आपको समझ जाना चाहिए कि मैं संत हूं फिर भी आप पूछते हैं, तो मैं बता रहा हूं कि मैं संत हूं तब गुरु ने कहा कि मैंने तुमसे पहले कह रखा था कि तुम कभी कुछ बनना नहीं व किसी भी चीज में दावा नहीं रखना चाहिए। तुम कुछ बने व तुमने अहंकार किया इसलिए तुम्हें अपमानित होना पड़ा।

रे मन मेरे समझत नाहीं–बहुत तुझे समझाया है।
सत वस्तु ना तुझको भावत–झूठ पीछे ललचाया है।
तीन काल में जो नहीं तेरा–उस पर दावा जमाया है।
कहे टेऊं इस मूर्खता पर, तुम्हें बहुत दुख पाया है।

स्वामी जी ने आगे बतलाया कि संत महापुरुष हमें सच्चा जीवन जीने की कला सिखाते हैं अगर हमें उनके उपदेशों का अनुसरण करें तो हमारा जीवन भी धन्य–धन्य हो सकता है। इतना कहकर स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम दिया। आज सत्संग उपरान्ति आश्रम के व्यवस्थापक सन्त अनन्त प्रकाश जी ने पूना स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम आगमन पर पूज्य स्वामी जी व सभी संतों का हार्दिक आभार प्रकट किया।

इसी क्रमानुसार दिनांक 20 व 21 नवम्बर सांय सत्संग के कार्यक्रम हुए जिसमें पूना स्थित कई प्रेमियों ने भाग लिया।

आज दिनांक 21 नवम्बर सत्संग पश्चात् पूज्य स्वामी जी ने पल्लव पाकर इस तीन दिवसीय सत्संग रूपी महायज्ञ का समापन किया।

पिम्परी में भी कार्तिकोत्सव पर दिव्य सत्संग सम

दिनांक 21 नवम्बर पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रका महाराज संत मण्डली सहित रात्रि 10 बजे पूना यात्रा को देते हुए सड़क मार्ग द्वारा पिम्परी के लिये रवाना हुए रात्रि बजे पिम्परी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पहुंचे यहां पहुंच प्रेमियों द्वारा स्वामी जी के आगमन की खुशी में रंग–ि आतिशबाजी की गयी व माल्यार्पण कर स्वागत किया ग

दिनांक 23 नवम्बर–प्रातः सत्संग का कार्यक्रम सायंकालीन प्रवचनों में स्वामी जी ने बतलाया कि–

दोहा– सत्गुरु को जिन सिर दिया
तजे लोक की लाज
कहे टेऊँ सब होवहि–
तिनके पूरन काज

भजन– गुरु की भक्ति सुगम न जानो–मुश्किल तोड़ निशान
1. इक दो दिन का काम न होना–प्रीत लगाकर पल–पल
सहन मान अपमाना है।

आपने बतलाया कि भक्ति के द्वारा परमात्मा दर्शन दे

भजन–भक्ति से रीझे भगवान–भक्ति ही भगवत को भ

भक्ति के द्वारा परमात्मा प्रसन्न तो होते हैं लेकिन भक्ति सरल नहीं है। भक्ति का मार्ग बड़ा ही दुर्गम होत लेकिन जो इन पड़ावों को पार कर जाते हैं, परमात्मा स्वीकार कर लेता है। सोने को भी जब तक आग में तप नहीं जाता तब तक उसमें निखार नहीं आता बीज भी तक मिट्टी में अपने अस्तित्व को समाप्त नहीं करता तक वृक्ष नहीं हो पाता, घड़ा भी जब तक अग्नि में ज नहीं तब तक पक्का नहीं होता। जब वह पक कर तैया जाता है तब वह घड़ा सबको शीतल व ठण्डा जल प्र करता है, सभी के संतृप्त हृदय को शीतलता प्रदान क है। अगर घड़ा अग्नि में पकने के लिए तैयार न हो तो भी शीतल जल प्रदान नहीं कर सकता। आवि की अग्नि गुजरने वाला घड़ा ही सबकी प्यास बुझा सकता है। प्रकार शिष्य जब तक परीक्षा की कसौटी से नहीं गुज तब तक अपने स्वरूप को प्राप्त नहीं होता जब गुरु शिष्य से परीक्षा ली जाती है तो कोई बड़भागी शिष्य ही परीक्षा में उत्तीर्ण हो पाता है।

दोहा– कामी क्रोधी लालची–इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा–जाती वर्ण कुल खोय

आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी अ अमृतवाणी में बतलाते हैं कि भक्ति के मार्ग पर सोच सम पाँव रखना चाहिए जो तीन लज़ाओं का त्याग करता है– 1. लोक लज्जा 2. कुल लज्जा 3. वेद लज्जा

वहीं भक्ति की राह पर चल सकता है गुरु की भक्ति तो अत्यधिक कठिन है इसमें तो शिष्य को अपना सर्वस्व गुरु के चरणों में समर्पित करना पड़ता है और गुरु भी पग–पग पर शिष्य की परीक्षा लेते हैं।

दोहा– गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है।
गड़–गड़ काढ़े खोट
अन्दर हाथ सहाय दे बाहर मारे चोट

गुरु भी शिष्य से परीक्षा लेकर पीछे ही ज्ञान देते हैं क्योंकि जो परीक्षा लेकर ज्ञान दिया जाता है वो ज्ञान शिष्य के हृदय में टिक जाता है और जो परीक्षा बिना ज्ञान दिया जाता है उस ज्ञान का हम कुछ कद्र नहीं करते, जिसके फलवरूप उस तत्व को प्राप्त नहीं कर पाते जिस तत्व को नचिकेता ने प्राप्त किया इन्हीं वचनों के साथ स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम दिया।

दिनांक 24 नवम्बर–निर्धारित कार्यक्रम के अनुसर सत्संग का कार्यक्रम हुआ।

दिनांक 25 नवम्बर–प्रातः सत्संग पश्चात् पूज्य स्वामी जी कई प्रेमियों के निमंत्रण को स्वीकार कर उनके निवास स्थानों पर गये व पल्लव पाकर सभी प्रेमियों की मनोकामनाएं पूर्ति की प्रार्थना की। आज ही सांय सत्संग पश्चात् स्वामी जी ने पल्लव पाकर सत्संग समारोह का समापन किया।

दिनांक 26 नवम्बर–पूज्य स्वामी जी ने अपनी मण्डली सहित प्रातः 4 बजे पूना स्टेशन से रेल्वे मार्ग द्वारा दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। यहां पर पूना व पिम्परी के कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी व सभी संतों को भावभीनी विदाई दी।

खैरथल में स्वामी जयमुक्तजी महाराज का प्रथम वर्सी उत्सव

दिनांक 27 नवम्बर–प्रातः 8 बजे ट्रेन दिल्ली स्टेशन पर पहुंची यहीं से पूज्य स्वामी जी अपनी मण्डली सहित सड़क मार्ग द्वारा खैरथल के लिए रवाना हो गये व दोपहर 12 बजे प्रेम प्रकाश आश्रम खैरथल पहुंचे यहां पर आश्रम के व्यवस्थापक संत मुरलीधर जी के नेतृत्व में कई प्रेमियों ने संत मण्डली का स्वागत किया। सांय सत्संग को जिसमें खैरथल व कई शहरों से आये प्रेमियों ने भाग लिया।

दिनांक 28 नवम्बर–निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 8 से 11 बजे तक सत्संग का कार्यक्रम हुआ। सत्संग पश्चात् संत नरेशलाल प्रेम प्रकाशी द्वारा पाठों का भोग डाला गया तत्पश्चात् आम भण्डारा हुआ जिसमें कई श्रद्धालुओं ने प्रेम पूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। आज ही दोपहर 1 बजे पूज्य स्वामी जी सड़क मार्ग द्वारा खैरथल से रवाना हुए व सांय 6 बजे अमरापुर स्थान जयपुर पहुंचे। इस यात्रा में स्वामी मनोहरलाल कोटा, स्वामी जयदेव दिल्ली, संत हरीओमलाल ग्वालियर, संत दयाप्रकाश जयपुर, भगत मूलचन्द जयपुर, नरेश प्रेम प्रकाशी, लक्ष्मण प्रेम प्रकाशी, परसराम प्रेम प्रकाशी जयपुर, वीरभान जैसवानी जयपुर, व कई प्रेमियों ने भाग लिया। **–नरेश प्रेम प्रकाशी, जयपुर से**

हनुमान जी के बारह नाम

हनुमानअंजनीसूनुर्वायु पुत्रो महाबलः।
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिड्गाक्षोअमित विक्रमः।।
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा।।

अर्थ–1. हनुमान, 2. अंजनी सूनु 3. वायुपुत्र 4. महाबल 5. रामेष्ट (रामजी के प्रिय) 6. फाल्गुनसख (अर्जुन के मित्र) 7. पिड्गाछ (भूरे नेत्र वाले) 8. अमित विक्रम 9. उदधिक्रमण (समुद्र को अतिक्रमण करने वाले) 10. सीताशोकविनाशन (सीता जी के शोक को नाश करने वाले) 11. लक्ष्मण प्राणदाता (लक्ष्मण को संजीवनी बूटी द्वारा जीवित करने वाले) 12. दशग्रीवदर्पहा (रावण के घमंड को दूर करने वाले)।

प्रेम प्रकाश संदेश का सदस्यता शुल्क

भारत में कहीं पर भी मंगाने के लिये
वार्षिक शुल्क रूपये 50/–
तीन वर्षीय शुल्क रूपये 140/–
दस वर्षीय शुल्क रूपये 450/–

आजीवन सदस्य नहीं बनाये जाते हैं।

विदेश में मंगाने के लिये
वार्षिक शुल्क रूपये 350/–
तीन वर्षीय शुल्क रूपये 1000/–

प्रेम प्रकाश संदेश केवल हिन्दी भाषा में प्रकाशित होती है।

कार्यालय को मनीऑर्डर से शुल्क भेजने वाले सदस्य, मनीऑर्डर करने के उपरान्त एक पोस्टकार्ड भी आवश्यक रूप से कार्यालय को लिखें।

–व्यवस्थापक

पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में विविध कार्य व सत्संग विचरण हर्षोल्लास के साथ संपन्न

बड़ोदा, 30 नवम्बर–विगत अक्टूबर व नवम्बर माह में पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में, प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा में विविध कार्यक्रम संपन्न हुये। साथ–साथ पूज्य स्वामी जी गुजरात व भारत के अन्य नगरों में पधार कर अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा सत्संग का परम आनन्द भी कराया। दिनांक 29–9–01 को पूज्य स्वामी जी संत मण्डली समेत डांडिया बाजार में पूज्य स्वामी ऊधवदास ब्रह्मचारी के जन्मोत्सव संबंध में, गीता सिंधू भवन में सत्संग दर्शन का लाभ दिया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी ने स्वामी ऊधवदास जी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुये कहा कि स्वामी ऊधवदास प्रेम प्रकाश मण्डल के विद्वान संत थे उनका गीता से विशेष प्रेम था। ऐसे संत का आज जन्मोत्सव मनाने जा रहे हैं। इसी दिन सांयकाल प्रेम पकाश आश्रम बड़ौदा में पूज्य स्वामी जी की अध यक्षता में सामाजिक कुरीति निवारण संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। जिसमें स्वामी जी ने समाज में फैली अनेक कुरीतियों के निवारण हेतु विशेष मार्गदर्शन दिया। दिनांक 30.9.01 को पूज्य स्वामी जी के सानिध्य में आश्रम पर वेदमंत्र उच्चारण का विद्वान पंडितों द्वारा एक कार्यक्रम रखा गया जिसमें पंडितों द्वारा मधुर स्वर में वेद के मंत्रों का सुस्वर उच्चारण किया गया। दिनांक 1.10.01 सोमवार को पूज्य स्वामी जी ने संत मण्डली समेत गोकुलनगर के प्रेमियों को सत्संग दर्शन का लाभ दिया। यहां पर सत्संग को विराम देकर दिनांक 2.10.01 मंगलवार को पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी संत मण्डली समेत हालोलनगर के प्रेमियों के प्रेममयी आग्रह पर हालोल पधारे। यहां पर भी स्वामी जी के सानिध्य में दिव्य सत्संग का आयोजन किया गया। हालोल के प्रेमियों को सत्संग दर्शन का लाभ प्रदान कर पूज्य स्वामी जी ने अहमदाबाद की और प्रस्थान किया। अहमदाबाद पधारने पर पूज्य स्वामी व संत मण्डली का जोरदार स्वागत किया गया। यहां पर भी पूज्य स्वामी जी की अध्यक्षता में सत्संग का सुंदर आयोजन किया गया। दिनांक 5.10.01 को संत मण्डली ने पावन तीर्थ डाकोर, गलतेश्वर व ठासरा का विचरण किया। डाकोर में भगवान रणछोड़राय का दर्शन करके गलतेश्वर जी में स्नान किया तत्पश्चात यहाँ से ठासरा के लिये प्रस्थान किया। ठासरा के प्रेमियों को दर्शन प्रदान कर पुनः बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया।

दिनांक 5 व 6.10.01 को पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज संत मण्डली समेत प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर में पधारे। यहां पर स्वामी जी ने दो दिन सत्संग का आनन्द बरसाकर पुनः बड़ोदा के लिये प्रस्थान किया। पुनः 9–10–01 को पूज्य स्वामी जी संत मण्डली समेत मथुरा–वृन्दावन धाम के लिये प्रस्थान किया। मथुरा में पूज्य स्वामी जी ने सत्संग दर्शन का लाभ देकर वृन्दावन के लिये प्रस्थान किया। वृन्दावन में एक दिन निवास के बाद पूज्य स्वामी जी ने दिल्ली को प्र किया। दिल्ली में एक दिन सत्संग–दर्शन का लाभ देक जलगांव के लिये प्रस्थान किया। जलगांव में सत्संग–दश लाभ देकर सीधे बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया। दिनांक 16–1 को पूज्य स्वामी जी संत मण्डली समेत चांणोद के लिये प्र किया यहाँ माता नर्मदा जी में स्नान आदि करके, रात्रि ग नगर के प्रेमियों के आग्रह पर गोकुलनगर पधारे। दिनां 10.01 रविवार को पूज्य स्वामी जी संत मण्डली के साथ कस्बे में पधारे यहाँ पर सत्संगानन्द करवाकर गोधरा पहुंचे ारा में रात्रि को पूज्य स्वामी जी की पावन छत्रछाया में सत्संग का आयोजन रखा गया जिसमें नगर के अ श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

बड़ौदा आश्रम पर सद्गुरु सर्वानन्द का 105 वाँ जन्मो

महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 1 जन्मोत्सव दिनांक 26.10.01 से 30.10.01 तक, पूज्य अशोक प्रकाश जी महाराज के संयोजकत्व में प्रेम प्रकाश अ बड़ौदा में बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवस पाँचों दिन, पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज, पूज्य स्वामी प्रकाश जी महाराज, स्वामी देवप्रकाश जी महाराज, स अनंतप्रकाश जी, स्वामी राजूराम जी, स्वामी किशोरलाल संत मोहनलाल, प्रेम प्रकाशी दिलीप एवं संत चरणदास व गुणीजन कलाकारों द्वारा, महर्षि सद्गुरु सर्वानन्द जी मह के पवित्र जीवन पर भजनों व प्रवचनों द्वारा प्रकाश डाला ग

जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में प्रथम दिन भव्य प्रभात का भी आयोजन किया गया। दिनांक 30–10–01 को भण्डारे का आयोजन किया गया। सांयकाल एक विशेष सम में पूज्य संत मण्डल द्वारा केक काटकर सभी को करतल से बधाई दी गई। इस अवसर पर इंदौर, फरीदाबाद, जल गोधरा, सूरत, अहमदाबाद, राजकोट, शेरा, डभोई, आदि में संख्या में प्रेमियों ने भाग लिया। अंत में पल्लव पाकर, स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज द्वारा मेले कीसमाप्ति की

मेले की समाप्ति के बाद पूज्य स्वामी जी द्वारा सूर लिये प्रस्थान किया गया। सूरत में प्रेमियों को सत्संग–दश अन्य कार्यक्रमों की अध्यक्षता करके पूज्य स्वामी जी ने ब के लिये प्रस्थान किया।

दिल्ली एवं जयपुर में सत्संग दर्शन–पूज्य स्वामी जी दि 2–11–01 को दिल्ली के लिये प्रस्थान किया। यहां पर प्रे को सत्संग व दर्शन का लाभ दिया। रानीबाग व लॉरेन्स रो पूज्य स्वामी जी के पावन-सानिध्य में सत्संग आयोजित गया। यहां के प्रेमियों को दर्शन लाभ देकर संतमण्डल जयपुर के लिये प्रस्थान किया।

दिनांक 4–11–01 से 8–11–01 तक जयपुर के वि स्थलों पर संत मण्डली के सानिध्य में दिव्य सत्संग, सम

का आयोजन किया गया। पांचों दिन बड़ी संख्या में प्रेमियों ने पूज्य संत मण्डली का सत्संग–दर्शन का भरपूर लाभ लिया। यत्र–तत्र पूज्य संतमण्डली का बैण्डबाजों व फूलों को बरसाकर स्वागत किया गया। जयपुर के प्रेमियों को सत्संग दर्शन का लाभ प्रदान कर सन्त मण्डली ने बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया। दिनांक 10–11–01 को पूज्य स्वामी जी ने संत मण्डली समेत अहमदाबाद के लिये प्रस्थान किया। यहां पर पूज्य स्वामी जी ने माता सावत्री द्वारा निर्मित मंदिर का उद्‌घाटन किया, उद्‌घाटन के बाद पूज्य स्वामी जी ने सत्संगामृत का रसास्वादन भी कराया। अहमदाबाद की विशेष यात्रा को विराम देकर पुनः बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया दिनांक 22, 23, –11–01 को संत मण्डली सूरत में कार्तिक महोत्सव के लिये **प्रेम प्रकाश आश्रम, सूरत** में पधारे। यहां पर दो दिन सत्संग विचरण करके 24 को अहमदाबाद के लिये प्रस्थान किया। अहमदाबाद में सत्संग दर्शन का लाभ देकर दिनांक 24–11–01 को सीधे गांधीधाम आदिपुर के लिये रवाना हुये। आदिपुर पूज्य लीलाशाह के जन्मोत्सव के संबंध में संत मण्डली समेत पूज्य स्वामी जी पधारे। आदिपुर दो दिन सत्संग वर्खा कर पुनः 26–11–01 को प्रातः बड़ौदा पहुंचे।

पूज्य स्वामी धर्मप्रकाश जी महाराज का 94 वाँ जन्मोत्सव संपन्न

पूज्य स्वामी धर्मप्रकाश जी महाराज का 94 वाँ जन्मोत्सव पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के संयोजकत्व में दिनांक 26–11–01 से 30–11–01 तक बड़ौदा में धूमधाम से संपन्न हुआ। इस समारोह में पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज भी उपस्थिति थे। पांच दिन लगातार कई कलाकारों व गुणीजनों द्वारा पूज्य स्वामी जी के ज़ीवन पर प्रवचनों द्वारा प्रकाश डाला गया। पूज्य स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज द्वारा मेले की अध यक्षता की गयी। दिनांक 26–11–01 को प्रातः पाठ रखे गये तत्पश्चात हवन हुआ हवन के बाद ध्वजा वंदन किया गया। बाद में पल्लव पाकर उत्सव की शुरूआत हुई। दिनांक 30–11–01 को पूज्य स्वामी धर्मप्रकाश जी के जन्मदिन पर आमभण्डारा व सांय 94 दीप प्रज्जवलित कर केक काटकर सभी को करतल ध्वनि से बधाई दी गयी।

नवनिर्मित चित्र प्रदर्शनी का भव्य उद्‌घाटन

इसी बीच आश्रम के सत्संग सभागार के एकदम पीछे नवनिर्मित स्वामी धर्मप्रकाश चित्र प्रदर्शनी" का भव्य उद्‌घाटन पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी एवं स्वामी स्वयं प्रकाश जी के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस प्रदर्शनी में साधक ध्यान, सुमरन आदि करके अपने मन को शांत कर सकता है।

–प्रेम प्रकाश आश्रम, बड़ौदा

विशेष समाचार

मनपा बड़ौदा द्वारा निर्मित "स्वामी टेऊँराम उद्यान" में आचार्य सद्‌गुरु टेऊँराम महाराज की 5.5 फुट ऊँची कमलासन मूर्ति का भव्य अनावरण

बड़ोदरा–30 नवम्बर 01–किसी कारणवश मूर्ति स्थापना का यह कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है।

समीक्षा

दीनी एक ज़री "सीडी" कैसेट

पूज्य सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज

बड़ोदरा–सद्‌गुरु महाराज जी के 105 वें जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा के प्रकाशन विभाग द्वारा सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज के प्रवचनों का प्रथम सी.डी. कैसेट **"दीनी एक ज़री"** का भव्य विमोचन पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। यह प्रथम अवसर है कि सद्‌गुरु महाराज का एक सुंदर प्रवचन सी.डी. में प्रसारित किया गया है। इसका मूल्य मात्र 50/– रू. रखा गया है। यह प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा के बुक स्टाल पर उपलब्ध है।

असीं हटड़ो कढियो आ हक जो

पूज्य सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज

बड़ौदरा–सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी माहराज के 105 वें जन्मोत्सव के पावन दिवस पर बड़ौदा आश्रम के संत शिरोमणि स्वामी अशोकप्रकाश जी महाराज के पुनीत प्रयासों से सद्‌गुरु सर्वानन्द जी के एक नवीन कैसेट **"असीं हटड़ो कढियो आ हक जो"** सद्‌गुरु सर्वानन्द भाग–1 का भव्य विमोचन पूज्य स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। यह कैसेट एकदम साफ व सफाई से रिकॉर्डिंग की गयी है। इसका मूल्य मात्र 20/– रू. रखा गया है। यह कैसेट आश्रम के बुक स्टाल पर उपलब्ध है।

बुधो तारा जी कहाणी सी.डी.कैसेट

पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज

बड़ोदरा–पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के प्रवचनों की सी.डी.कैसेट श्रृंखला में यह तीसरी सी.डी. **"बुधो तारा जी कहाणी"** कैसेट का भव्य विमोचन सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज के 105 वें जन्मोत्सव के अवसर पर पूज्य संत गण्डल द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। पूज्य स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी व भावपूर्ण वाणी में राजा हरीशचन्द्र व तारामती के इस इतिहास को सुनाया है। इस कैसेट का मूल्य मात्र 50/– रू. रखा गया है। यह आश्रम के बुक स्टाल पर उपलब्ध रहेगा।

प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर में विशाल नेत्र शिविर संपन्न

परम पूज्य सद्‌गुरु महाराज स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जनकल्याण एवं परोपकारी उपदेशों पर स्वामी माधवदास की तपभूमि प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्शनगर अजमेर में स्वामी मुरलीधर करनानी, ट्रस्टी ठाकुरदास नारायणदास द्वारा निःशुल्क विशाल वार्षिक नेत्र शिविर 29–10–2001 से 3–11–2001 तक आयोजित कर सद्‌गुरु महाराज की कृपा से संपन्न हुआ। इस नेत्र शिविर में 177 रोगियों को ऑपरेशन कर गुरु कृपा से नेत्र ज्योति प्रदान की गई है। इस शिविर में यज्ञ में अनेक प्रेमियों एवं स्कूल के प्रेम प्रकाशी विद्यार्थियों ने सेवा कर सद्‌गुरु महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। –मोहन शिवनानी अजमेर से

स्वामी बसन्तराम जी महाराज की इक्कीसवीं पुण्यतिथि

सर्व धर्मानुरागी एवं प्रेमी सज्जनों को सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य श्रीमा 1008 सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम शिष्य वेदान्त केसरी **स्वामी बसन्तराम जी महाराज की पुण्यतिथि** **स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री** दिनांक 27 दिसम्बर गुरुवार से 31 दिसम्बर 2001 सोमवार तक प्रेम प्रकाश आश्रम, देहली गेट अजमेर में बडे हर्षोल्लास पूर्वक मना रहे हैं। इस शुभ अवसर पर प्रेम प्रकाश मण्डल के भारत के विभिन्न नगरों से सन्त महात्म विद्वान, संगीत कलाकार, व गुणी महानुभाव पधार रहे हैं।

उत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् भगवत गीता के 108 पाठ एवं पुण्य तिथि के अवसर पर दिनांक 28 दिसम्बर शुक्रवा को सामूहिक यज्ञोपवीत का कार्यक्रम रखा गया है, जिसमें सारी व्यवस्था ट्रस्ट की ओर से मुफ्त रखी गयी है। बाहर के प्रेम भी अपने बच्चों को यज्ञोपवीत श्री गुरु महाराज के चरणों में पहुंच कर करा सकते हैं। आप सभी अपने इष्ट मित्रों व परिवा सहित इस महान यज्ञ में सम्मिलित होकर सत्पुरुषों का दर्शन एवं उपदेशामृत–पान कर मानव जीवन को सार्थक बनावें

कार्यक्रम

दिनांक 27 दिसम्बर, गुरुवार–सांयकाल 4 बजे **पूज बहिराणे साहिब की ज्योति प्रज्वलित होगी**, तत्पश्चात बजे से 8 बजे तक सत्संग होगा।

दिनांक 28 दिसम्बर, शुक्रवार–प्रातः 8 बजे से 11:30 बजे तक **सामूहिक यज्ञोपवीत** का कार्यक्रम रखा गया है जिस समय पर पहुंचकर लाभ प्राप्त करें। सांयकाल 4 से रात्रि 8 बजे तक सत्संग होगा।

दिनांक 29 से 31 दिसम्बर तक–प्रतिदिन प्रातः 7:30 बजे से 8:30 बजे तक **ॐ नमः शिवायः"** का सामूहिक संकीर्त तथा 8.30 से 11 बजे तक सत्संग होगा। सायंकाल 4 से 9 बजे तक भजन कीर्तन व सत्संग होगा।

दिनांक 31 दिसम्बर सोमवार को प्रातः 6 बजे से गीताओं के उपलक्ष में विशाल यज्ञ एवं 9 से 10 बजे तक ध्वज वन्दन 11 बजे श्रीमद् भगवत गीता के पाठों एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का भोग, 12 बजे सन्तों महात्माओं व प्रेमियों के लि आम भण्डारा प्रारम्भ होगा। सांयकाल 4 से 9 बजे तक सत्संग और पल्लव पाकर उत्सव की समाप्ति होगी।

सेवा में : **स्वामी बसन्तराम सेवा ट्रस्ट व समस्त प्रेमी जन**

पताः प्रेम प्रकाश आश्रम, पोस्ट बाक्स नं. 29, देहली गेट, अजमेर, फोन : (0145) 423993, 625416, 42531

प्रेम प्रकाश मन्दिर, खार मुम्बई में सत्संग समागम

१ जनवरी से ५ जनवरी, २००२ तक

समस्त धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम ज महाराज के प्रेम प्रकाश मन्दिर, खार का वार्षिकोत्सव मंगलवार 1 जनवरी से 5 जनवरी 2002 शनिवार तक वर्तमान प्रेम प्रका मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया जाएेगा। इस महोत्सव में आच सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पवित्र जीवन कथाओं का वर्णन किया जायेगा।

आप सब इस विराट महोत्सव में आकर महापुरुषों की गुणगाथा का श्रवण कर अपने जीवन को सफल बनाएं।

कार्यक्रम

1 जनवरी 2002
प्रातःकाल सत्संग, हवन
व ध्वजा–वन्दन

1 जनवरी से 5 जनवरी 2002
प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग
प्रेम प्रकाश मन्दिर, खार
सांय 5 से 7 बजे तक सत्संग लोकहित
कुटीर 16 नं. रोड, खार वेस्ट, मुम्बई।

5 जनवरी शनिवार
सांय 7 बजे पल्लव उत्सव
की समाप्ति

पताः श्री प्रेम प्रकाश मन्दिर, प्रेम सागर रोड नं. 19, खार वेस्ट, मुम्बई फोन : 022–6057579, 605771

स्वामी टेऊँराम चेरीटेबल पोलीक्लीनिक का भव्य शुभारम्भ

जयपुर–2 दिसम्बर 2001–श्री अमरापुर जनकल्याण चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा गरीब, मध्यमवर्ग की चिकित्सकीय आवश्यकताओं को देखते हुए, आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की प्रेरणा व उनके बताये गये आदर्श 'जीव–दया' की शिक्षा को आत्मसात् करते हुए, 30 लाख रूपयों से भी अधिक की लागत से नवस्थापित **"स्वामी टेऊँराम चेरीटेबल पोलीक्लीनिक"** का भव्य शुभारम्भ गरिमामय समारोह में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में हजारों नगरवासियों–प्रेमियों की उपस्थिति में दोपहर 11 बजे किया गया। उद्‌घाटन समारोह का शुभारम्भ गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के कर कमलों से ज्योति प्रज्जवलन के साथ हुआ। जयपुर नगर के प्रख्यात समाज सेवी श्री ईश्वरदास मूलराजानी की अध्यक्षता में, राजस्थान सरकार के स्वायत शासन मन्त्री श्री शान्ति धारीवाल जी व विशिष्ट अतिथियों ने पूज्य गुरुदेव भगवान के जयघोष के साथ अस्पताल का शुभारम्भ रिबन काटकर व वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ किया। इस अवसर पर जयपुर महानगर के महापौर श्री पवन शर्मा, न्यायाधीश श्री इन्द्रसेन ईसरानी जी सहित श्री लेखराज आडवाणी, डॉ. एस.एल. तोलानी, डॉ. लाल थधानी, श्री चन्दीराम राधानी, डॉ. वासुदेव केसवानी, श्री विवेक कालिया, विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थिति थे। श्री अमरापुर जनकल्याण ट्रस्ट द्वारा संचालित अस्पताल में ई.सी.जी., सोनोग्राफी, एक्सरे, तथा पैथोलोजी की व्यवस्थाऐं भी की गयी हैं। अस्पताल में योग्य डाक्टरों की सेवायें रियायती दरों पर उपलब्ध करायी गयी हैं। श्री चेतनदास वाधवानी, श्री होतचंद मनवानी जी (दोनों ट्रस्टी) द्वारा पूज्य गुरुमहाराज जी व अतिथियों का आभार कृतज्ञतापूर्वक व्यक्त किया गया। उद्‌घाटन समारोह का समापन पूज्य गुरु महाराज जी द्वारा पल्लव पाकर किया गया।

दिव्य सत्संग समारोह

दिनांक 19–12–2001 बुधवार से
22–12–2001 शनिवार तक
प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष गुरुवर
स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज
की अध्यक्षता में प्रेम प्रकाश सन्त मण्डल का आगमन

प्रतिदिन सत्संग :
प्रातः 8 से 10 बजे तक
सांय 4 से 7 बजे तक

स्थान :
प्रेम प्रकाश आश्रम
4, काटजू कॉलोनी, इन्दौर
फौन : 468140

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर समय–सारणी

प्रतिदिन सत्संग का समय

प्रातः 7.00 बजे से 8.15 बजे तक प्रार्थना–सत्संग
सांय 4.00 बजे से 5.30 बजे तक भक्तिसंध्या–सत्संग

आरती

सांय ५.३० बजे से ५.५० बजे तक
प्रत्येक रविवार : प्रातः 7 से 9:30 बजे तक प्रार्थना–सत्संग–प्रवचन कैसेट सांय 4 से 6 बजे तक भजन संध्या–सत्संग–आरती
विशेष : प्रत्येक गुरुवार व शनिवार सांय 5 से 8 बजे तक समाधि स्थल पर पुष्पों की झांकी के दर्शन।

तीज–त्यौहार

20	दिसम्बर 2001	गुरुवार	श्री प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर, वार्षिकोत्सव समापन
26	दिसम्बर 2001	बुधवार	मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती मीरा कृष्ण मंदिर, बड़ौदा, शीतल गीता मंदिर अजमेर
30	दिसम्बर 2001	रविवार	श्री सत्यनारायण पूर्णिमा व्रत
01	जनवरी 2002	मंगलवार	ईस्वी सन् 2002 शुरू (नववर्ष सबके लिये मंगलकारी रहे)
02	जनवरी 2002	बुधवार	श्री गणेश चौथ व्रत
09	जनवरी 2002	बुधवार	सफला एकादशी व्रत
13	जनवरी 2002	रविवार	अमावस्या, लाल लोई, लोहिड़ी उत्सव
14	जनवरी 2002	सोमवार	मकर संक्रांति
19	जनवरी 2002	शनिवार	श्री गुरुगोविंदसिंह जयंती
25	जनवरी 2002	शुक्रवार	पुत्रदा एकादशी
26	जनवरी 2002	शनिवार	गणतन्त्र दिवस
28	जनवरी 2002	सोमवार	श्री सत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

17 दिसम्बर से 18 दिसम्बर	2001 तक	उल्हासनगर	☎	0251-522137, 52054
19 दिसम्बर से 22 दिसम्बर	2001 तक	इन्दौर	☎	0731-46814
23 दिसम्बर से 25 दिसम्बर	2001 तक	जयपुर	☎	0141-372423, 37242
26 दिसम्बर	2001 तक	अजमेर	☎	0145-62252
29 दिसम्बर से 30 दिसम्बर	2001 तक	बड़ौदा	☎	0265-565094, 57147
31 दिस. 2001 से 6 जनवरी	2002 तक	मुम्बई	☎	022-6057711, 605757
7 जनवरी से 8 जनवरी	2002 तक	नासिक	☎	0253-7741
9 जनवरी से 11 जनवरी	2002 तक	रायपुर	☎	0771-42468
12 जनवरी से 14 जनवरी	2002 तक	भाटापारा	☎	07726-2077
15 जनवरी से 17 जनवरी	2002 तक	कोरबा	☎	07759-241714, 2159
18 जनवरी	2002 तक	बिलासपुर	☎	07752-3213
19 जनवरी से 20 जनवरी	2002 तक	रांची	☎	0651-311140, 20127
21 जनवरी से 23 जनवरी	2002 तक	बरगड़ (उड़ीसा)	☎	07752-4275
24 जनवरी	2002 तक	राजिम	☎	
25 जनवरी	2002 तक	भानुप्रतापपुर	☎	07850-5227
26 जनवरी	2002 तक	दल्लीराजहरा	☎	07748-8307
27 जनवरी से 28 जनवरी	2002 तक	धमतरी	☎	07722-3700
29 जनवरी	2002 तक	भिलाई	☎	0788-4581
30 जनवरी से 31 जनवरी	2002 तक	दुर्ग	☎	0788-32858
1 फरवरी	2002 तक	राजनान्दगांव	☎	07744-2771
2 फरवरी से 4 फरवरी	2002 तक	गोन्दिया	☎	07182-2692
5 फरवरी	2002 तक	भन्डारा	☎	07184-5186
6 फरवरी से 7 फरवरी	2002 तक	बालाघाट	☎	07632-4010
8 फरवरी से 10 फरवरी	2002 तक	सिवनी	☎	07692-2475
11 फरवरी	2002 तक	कामठी	☎	
12 फरवरी	2002 तक	यवतमाल	☎	07232-4553
13 फरवरी	2002 तक	आर्वी	☎	
14 फरवरी	2002 तक	अमरावती	☎	0721-67000
15 फरवरी	2002 तक	नागपुर से ट्रेन	☎	
16 फरवरी से 17 फरवरी	2002 तक	बड़ौदा	☎	0265-571479, 56509
19 फरवरी से 21 फरवरी	2002 तक	धुलिया	☎	02562-2048
22 फरवरी से 23 फरवरी	2002 तक	जलगांव	☎	0257-23461
24 फरवरी	2002 तक	रांवेर	☎	
25 फरवरी से 26 फरवरी	2002 तक	बुरहानपुर	☎	07325-53461, 5447
27 फरवरी	2002 तक	भुसावल	☎	02582-2419
28 फरवरी से 03 मार्च	2002 तक	नागपुर	☎	0712-522058, 52711
04 मार्च	2002 तक	यात्रा	☎	
05 मार्च से 09 मार्च	2002 तक	जयपुर, अजमेर	☎	
10 मार्च से 13 मार्च	2002 तक	ग्वालियर	☎	0751-42611
14 मार्च	2002 तक	दतिया	☎	
15 मार्च से 16 मार्च	2002 तक	डबरा	☎	07524-2324
17 मार्च से 19 मार्च	2002 तक	आगरा	☎	0562-21149
20 मार्च से 22 मार्च	2002 तक	मुरैना	☎	07532-2028
23 मार्च से 24 मार्च	2002 तक	अलीगढ़	☎	0571-40790
25 मार्च से 29 मार्च	2002 तक	हरिद्वार	☎	0133-460144, 46081
31 मार्च से 01 अप्रेल	2002 तक	खंडवा	☎	0733-2866
02 अप्रेल से 03 अप्रेल	2002 तक	जबलपुर	☎	0761-34979
04 अप्रेल से 05 अप्रेल	2002 तक	कटनी	☎	07622-5203
06 अप्रेल	2002 तक	महियर	☎	
07 अप्रेल	2002 तक	रीवा	☎	
08 अप्रेल	2002 तक	सीधी	☎	
09 अप्रेल	2002 तक	सतना	☎	
10 अप्रेल से 12 अप्रेल	2002 तक	भोपाल, बैरागढ़	☎	
14 अप्रेल से	2002	जयपुर	☎	0141-372424-37242

सत्नाम साक्षी 20 वर्षीय कलेन्डर

20 YEARS CALANDER

YEARS	JAN	FEB	MAR	APR	MAY	JUN	JUL	AUG	SEP	OCT	NOV	DEC
2001	A	D	D	G	B	E	G	C	F	A	D	F
2002	B	E	E	A	C	F	A	D	G	B	E	G
2003	C	F	F	B	D	G	B	E	A	C	F	A
2004	D	G	A	D	F	B	D	G	C	E	A	C
2005	F	B	B	E	G	C	E	A	D	F	B	D
2006	G	C	C	F	A	D	F	B	E	G	C	E
2007	A	D	D	G	B	E	G	C	F	A	D	F
2008	B	E	F	B	D	G	B	E	A	C	F	A
2009	D	G	G	C	E	A	C	F	B	D	G	B
2010	E	A	A	D	F	B	D	G	C	E	A	C
2011	F	B	B	E	G	C	E	A	D	F	B	D
2012	G	C	D	G	B	E	G	C	F	A	D	F
2013	B	E	E	A	C	F	A	D	G	B	E	G
2014	C	F	F	B	D	G	B	E	A	C	F	A
2015	D	G	G	C	E	A	C	F	B	D	G	B
2016	E	A	B	E	G	C	E	A	D	F	B	D
2017	G	C	C	F	A	D	F	B	E	G	C	E
2018	A	D	D	G	B	E	G	C	F	A	D	F
2019	B	E	E	A	C	F	A	D	G	B	E	G
2020	C	F	G	C	E	A	C	F	B	D	A	C

A

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

B

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

C

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

D

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

E

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

F

S	M	T	W	T	F	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

G

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

इस प्रकार देखें-जिस वर्ष महीने की जो तिथि वार देखना हो उसके लिये वर्ष के कॉलम के नीचे केलेन्डर में तिथि वार देखना चाहिये। उदाहरणार्थ-जैसे वर्ष २००५ में जून माह की २५ तारीख को कौन सा दिन होगा, उसे इस प्रकार देखें-वर्ष २००५ के आगे जून के कॉलम में सी लिखा हुआ है अब सी वाले केलेन्डर में २५ तारीख देखें शनिवार लिखा है इस प्रकार वर्ष २००५ में जून २५ तारीख को शनिवार रहेगा। इस प्रकार आप २००१ से २०२० वर्ष की तिथियों के वार आसानी से कुछ ही क्षणों में इस केलेन्डर के माध्यम से ज्ञात कर सकते है।

प्रस्तोता-जयकुमार चंचलानी, स्वामी टेऊँराम आलोक विद्यालय, दादाबाड़ी कोटा



सांई टेऊँराम अमृतवाणी

श्रीअमरापुर स्थान, जयपुर 2 दिसम्बर 2001 : श्री अमरापुर स्थान के भव्य सत्संग सभागार में पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के पावन कर कमलों द्वारा (टी-सीरीज की गुलशन कुमार प्रस्तुति) सांई टेऊँराम अमृतवाणी-(दोहे की केसेट) का विमोचन किया गया। श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ से चुने हुये दोहो का संकलन कुमार विशु के सुमधुर आवाज में श्रवण करने पर व्यवहारिक व पारमार्थिक जीवन सुगम होकर, मन प्रभु के प्रेममयी सागर में विचरण करने लगता है।

कैसेट का नामः-सांई टेऊँराम अमृतवाणी (दोहे की कैसेट)

स्वर : कुमार विशु

प्रस्तुति : गुलशन कुमार, टी-सीरीज मूल्य :- 20 रुपये

(भारतवर्ष के सभी टी-सीरीज कैसेट स्टॉलों पर उपलब्ध)

प्राप्ति स्थल :-श्री अमरापुर स्थान, जयपुर एवं सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध।

●●●●●●●●●●●●●●

भजन सरिता

सद्‌गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज के पुण्य स्म

अमरापुर स्थान,जयपुर- मर्यादामूर्ति सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम के प्रथम वर्सी उत्सव के पावन अवसर पर श्री अमरापुर स्थान सभागार में प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी महाराज के शुभ कर कमलों द्वारा भजन सरिता ऑडियो विमोचन किया गया।

प्रस्तुत कैसेट को पूज्य गुरुवर स्वामी हरिदासराम जी म की पावन स्मृति में जारी किया गया है। कैसेट के ए साइड का प्रथम भजन पूज्य स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की आवाज में व अन्य भजन संत मनोहर प्रकाश जी की सुमधुर आवाज में प्रस्तुत किये गये हैं। कैसेट का मूल्य मात्र 20 रुपये रखा गया है। कैसेट अमरापुर स्थान समेत हर प्रमुख आश्रम पर उपलब्ध है।



सूचना

समस्त सम्माननीय के सूचनार्थ उनके प्रेषण ऊपर सदस्यता क्रमांक, संख्या व शुल्क अवधि लि है, कृपया उसे अच्छी त कर अपनी सदस्यता शुल्क समाप्त होने से पहले ही, सदस्यता का नवीनीकरण स्यों को करा लेना -व्यव

सदस्यता क्रमांक

RH_4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी
अजमेर, राजस्थान

श्री/श्रीमती

सम्पादक :शंकरलाल सबनानी, (फोन - 327427)
श्रीचंद पंजवानी (फोन-454183) फैक्स : 481269
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी कम्पयूटर्स लाला का बाजार, फोन : 427502 से सज्जा करवाकर चन्देल ऑफसेट, दौलतगंज से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित